RNI No. GUJHIN/2010/35230

महानगर मेट्रो

राष्ट्रीय दैनिक समाचार पत्र

कार्यालय :- सी-8 रिची हाउस, स्वामी नारायण मंदिर के सामने मणिनगर अहमदाबाद गुजरात-380008

महानगर मेट्रो
राष्ट्रीय दैनिक हिन्दी समाचार पत्र, प्रेस नोट एवं विज्ञापन के लिए कार्यालय पर सम्पर्क करें
सरबजीत माकन
+91-9638877700
mahanagarmetro7@gmail.com

वर्ष :15 । अंक:232। पेज:12। mahanagarmetro7@gmail.com || अहमदाबाद, (मंगलवार) 14 अप्रैल 2026 || सम्पादक - सरबजीत माकन (9638877700)।। मूल्य :- 1.50 रु.-/

डिजिटल षड्यंत्र सच की पड़ताल

महानगर मेट्रो स्पेशल इन्वेस्टिगेशन

आस्था पर प्रहार या सुनियोजित षड्यंत्र ?

जैन उपाश्रय के उद्घाटन को रोकने की बड़ी साजिश का पर्दाफाश; हनीट्रैप गिरोह के पीछे विदेशी फंडिंग के संकेत!

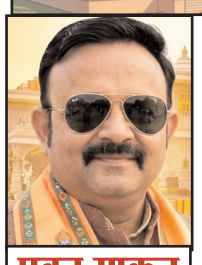

पवन माकन
ग्रुप एडिटर, महानगर मेट्रो

महानगर मेट्रो ब्यूरो

सूरत। आगामी जैन उपाश्रय के भव्य उद्घाटन समारोह से पहले शहर में सनसनीखेज साजिश का खुलासा हुआ है। विश्वसनीय सूत्रों और प्रारंभिक जांच में यह बात सामने आई है कि धर्म और समाज को बदनाम करने के लिए रचा गया यह 'हनीट्रैप' का जाल महज एक आपराधिक कृत्य नहीं, बल्कि एक गहरी अंतरराष्ट्रीय साजिश का हिस्सा है। इस गिरोह का मुख्य लक्ष्य समाज की अस्मिता को चोट पहुँचाकर आगामी धार्मिक आयोजन को विफल करना है।

चरित्र हनन नहीं, यह वैचारिक युद्ध है

जांच एजेंसियों के हाथ लगे कुछ पुख्ता सबूतों के अनुसार, इस पूरे प्रकरण के पीछे एक संगठित गिरोह सक्रिय है। यह गिरोह अत्याधुनिक तकनीक का उपयोग कर फर्जी वीडियो और आपत्तिजनक सामग्री तैयार कर रहा है। चौंकाने वाली बात यह है कि इस गिरोह को 'बाहरी स्त्रोतों' और अन्य प्रतिद्वंदी समूहों से भारी फंडिंग मिलने के संकेत मिले हैं। इसका सीधा अर्थ है कि यह हमला केवल व्यक्तियों पर नहीं, बल्कि हमारी धार्मिक स्वतंत्रता और सामाजिक ताने-बाने पर है।

साजिश के मुख्य बिंदु:

* फर्जी वीडियो नेटवर्क- एआई और डीपफेक तकनीक के जरिए प्रतिष्ठित व्यक्तियों की छवि धूमिल करने का प्रयास।
* रणनीतिक टाइमिंग: उद्घाटन कार्यक्रम के ठीक पहले इन अफवाहों को हवा देना ताकि समाज में भय और अविश्वास का माहौल बने।
* आर्थिक साठगांठ: गिरोह के बैंक खातों में संदिग्ध लेन-देन के संकेत, जो किसी बड़े नेटवर्क की ओर इशारा करते हैं।

प्रशासन और समाज के लिए 'रेड अलर्ट'

महानगर मेट्रो से बात करते हुए सुरक्षा विशेषज्ञों ने आगाह किया है कि इस तरह के षड्यंत्रों का उद्देश्य सांप्रदायिक सद्भाव को बिगाड़ना होता है। यह मामला अब केवल पुलिस की फाइल तक सीमित नहीं है, बल्कि यह राष्ट्रीय सुरक्षा और धार्मिक अस्मिता की लड़ाई बन चुका है। 'जब धर्म पर प्रहार होता है, तो मौन रहना भी अपराध है। हमें तकनीक के इस दौर में सत्य और असत्य के बीच के अंतर को पहचानना होगा।' – एक वरिष्ठ समाजसेवी

महानगर मेट्रो की पाठकों से अपील

समाज के सजग प्रहरी होने के नाते, हम अपने पाठकों और श्रद्धालुओं से निम्नलिखित सावधानी बरतने का आग्रह करते हैं:

1.सत्यापन करें: व्हाट्सएप या सोशल मीडिया पर आने वाले किसी भी आपत्तिजनक वीडियो या फोटो को बिना जांचे आगे न बढ़ाएं।

2.रिपोर्ट करें: अफवाह फैलाने वाले संदिग्ध नंबरों और सोशल मीडिया प्रोफाइल्स की जानकारी तुरंत स्थानीय पुलिस या साइबर सेल को दें।

3.एकजुट रहें: इस कठिन समय में समाज की एकता ही सबसे बड़ा हथियार है। किसी भी भ्रामक प्रचार का शिकार होकर आपस में वैमनस्य न फैलाएं।

महानगर मेट्रो - निर्भीक कलम, निष्पक्ष खबर।

नारी शक्ति वंदन सम्मेलन में पीएम मोदी बोले-

महिला नेतृत्व से सिस्टम बनता है संवेदनशील

एजेंसी

नई दिल्ली । प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोमवार को नई दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित 'नारी शक्ति वंदन सम्मेलन' को संबोधित किया। पीएम मोदी ने कहा कि 2023 में जब नारी शक्ति वंदन अधिनियम लाया गया था, तब सभी राजनीतिक दलों ने मिलकर इसे सर्वसम्मति से पारित किया था। उस समय एक सुर में यह भी मांग उठी थी कि इस कानून को हर हाल में 2029 तक लागू किया जाए। प्रधानमंत्री ने कहा कि इस बार भी सरकार की प्राथमिकता यही है कि सभी जरूरी फैसले संवाद, सहयोग और सहभागिता के जरिए लिए जाएं। उन्हें विश्वास है कि जिस तरह पहले इस

● 'आज देश की बेटियां नए-नए बिजनेस में अपनी पहचान बना रही हैं। मुद्रा योजना के तहत दिए गए कुल लोन में से 60 प्रतिशत से अधिक लोन महिलाओं ने लिए हैं।

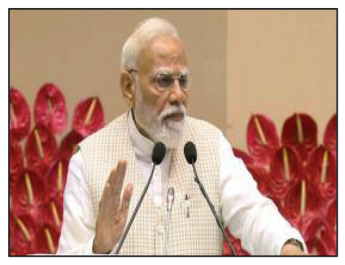

अधिनियम ने संसद की गरिमा बढ़ाई थी, उसी तरह इस बार भी सामूहिक प्रयास से संसद नई ऊंचाइयों को छुएगी। पीएम मोदी

ने देश में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी को गर्व का विषय बताया। उन्होंने कहा कि आज भारत में राष्ट्रपति से लेकर वित्त मंत्री जैसे अहम पद महिलाओं के पास हैं और वे इन जिम्मेदारियों को बखूबी निभा रही हैं। इससे देश का गौरव लगातार बढ़ रहा है। उन्होंने पंचायत स्तर पर महिलाओं की भागीदारी को भी एक बड़ा उदाहरण बताया और कहा कि आज देश में 14 लाख से अधिक महिलाएं लोकल गवर्नमेंट बॉडीज में सक्रिय रूप से काम कर रही हैं। करीब 21 राज्यों में पंचायतों में महिलाओं की हिस्सेदारी लगभग 50 प्रतिशत तक पहुंच चुकी है। प्रधानमंत्री ने कहा कि लाखों महिलाओं की यह सक्रियता दुनियाभर के बड़े नेताओं और राजनीतिक विशेषज्ञों को भी हैरान करती है। कई अध्ययनों में यह सामने आया है कि जब निर्णय लेने की प्रक्रिया में महिलाओं की भागीदारी बढ़ती है, तो सिस्टम अधिक संवेदनशील और जवाबदेह बनता है। जल जीवन मिशन की सफलता इसका एक उदाहरण है, जहां पंचायत स्तर पर महिलाओं की अहम भूमिका रही है। उन्होंने 2014 से पहले की स्थिति का जिक्र करते हुए कहा कि उस समय करोड़ों महिलाएं ऐसी थीं, जिन्होंने कभी बैंक का दरवाजा तक नहीं देखा था। बैंकिंग से जुड़ाव न होने के कारण उन्हें उसका लाभ नहीं मिल पाता था, लेकिन जनधन योजना के जरिए महिलाओं के 32 करोड़ से ज्यादा बैंक खाते खोले गए, जिससे उनकी आर्थिक भागीदारी बढ़ी।

नोएडा में श्रमिकों का उग्र प्रदर्शन

●वाहनों में आगजनी से हालात बिगड़े, स्थिति तनावपूर्ण

एजेंसी

नोएडा । नोएडा में श्रमिकों के प्रदर्शन ने सोमवार को उग्र रूप ले लिया, जिसके चलते पूरे शहर में तनावपूर्ण माहौल बना हुआ है।

● 'प्रदर्शनकारी ने बताया, '11,000-12,000 रुपए के वेतन में आज के समय में गुजारा करना बहुत मुश्किल है।

विभिन्न औद्योगिक क्षेत्रों में हजारों की संख्या में श्रमिक सड़कों पर उतर आए और जगह-जगह विरोध प्रदर्शन शुरू कर दिया। इस दौरान प्रमुख मार्गों पर लंबा जाम लग गया, जिससे आम जनजीवन बुरी तरह प्रभावित हुआ। प्रदर्शन के चलते नोएडा के फेस-2, सेक्टर 62, सेक्टर 1 और सेक्टर 63 जैसे प्रमुख औद्योगिक इलाकों में हालात काफी गंभीर बने

हुए हैं। सड़कों पर वाहनों की लंबी कतारें देखी गईं और लोगों को अपने गंतव्य तक पहुंचने में भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। खासकर स्कूलों से निकलने वाली बसें भी जाम में फंस गईं, जिसके कारण बच्चों को घर पहुंचने में काफी देर हुई। स्थिति को नियंत्रित करने के लिए प्रशासन ने भारी पुलिस बल तैनात किया है। संवेदनशील क्षेत्रों में अतिरिक्त सुरक्षा व्यवस्था की गई है और पुलिस लगातार हालात पर नजर बनाए हुए है। जगह-जगह बैरिकेडिंग कर यातायात को नियंत्रित करने की कोशिश की जा रही है। इसी बीच प्रदर्शन ने उस समय और हिंसक रूप ले लिया, जब उग्र भीड़ ने सेक्टर 63 स्थित एक मारुति नेक्सा सर्विस सेंटर को निशाना बना लिया। जानकारी के अनुसार, सर्विस के लिए आई गाड़ियों में आगजनी की गई। भीड़ ने करीब 7 दोपहिया और 6 चारपहिया वाहनों को आग के हवाले कर दिया। इसके अलावा एक दर्जन से अधिक वाहनों को क्षतिग्रस्त भी किया गया है। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, भीड़ अचानक बेकाबू हो गई और देखते ही देखते वाहनों में आग लगा दी गई। घटना के बाद मौके पर अफरा-तफरी मच गई। दमकल विभाग को सूचना दी गई, जिसके बाद आग पर काबू पाने की कोशिश की गई। प्रशासन और पुलिस अधिकारियों का कहना है कि स्थिति को नियंत्रण में लाने के लिए हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं। उपद्रवियों की पहचान कर उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

लालू यादव को सुप्रीम कोर्ट से झटका

एफआईआर और चार्जशीट रद्द करने की मांग वाली याचिका खारिज

एजेंसी

नई दिल्ली । पूर्व रेल मंत्री और राष्ट्रीय जनता दल के प्रमुख लालू प्रसाद यादव की मुश्किलें बढ़ सकती हैं। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को 'लैंड फॉर जॉब' (जमीन के बदले नौकरी) घोटाले में लालू प्रसाद यादव को राहत देने से इनकार करते हुए उनकी याचिका को खारिज कर दिया। लालू प्रसाद यादव ने सुप्रीम कोर्ट में सीबीआई की एफआईआर और चार्जशीट रद्द करने की अपील करते हुए याचिका दाखिल की थी। सोमवार को जस्टिस एमएम सुंदरेश और जस्टिस एनके सिंह की पीठ ने मामले में सुनवाई की। सभी पक्षों को सुनने के बाद याचिका खारिज कर दी गई। हालांकि, सुप्रीम कोर्ट ने निचली अदालत में चल रही कार्रवाई के दौरान लालू यादव को व्यक्तिगत पेशी से छूट दी है। आदेश में कहा गया, 'याचिकाकर्ता को ट्रायल कोर्ट में व्यक्तिगत रूप से पेश होने से छूट दी जाती है।'

पिछले महीने दिल्ली हाई कोर्ट ने लालू प्रसाद यादव की याचिका को खारिज किया था। लालू प्रसाद यादव ने अदालत में यह दलील दी थी कि

सीबीआई ने उनके खिलाफ मुकदमा चलाने के लिए आवश्यक मंजूरी हासिल नहीं की है, इसलिए पूरे मामले को निरस्त किया जाना चाहिए। हालांकि, हाई कोर्ट ने इस तर्क को खारिज करते हुए कहा कि याचिका में कोई दम नहीं है। इस मामले में कानून के अनुसार उचित प्रक्रिया का पालन किया गया है।

गुजरात यूनिवर्सिटी बनी जंग का अखाड़ा: ?

34 करोड़ के भ्रष्टाचार का आरोप, चेंबर छोड़ भागे कुलपति!

महानगर मेट्रो ब्यूरो

अहमदाबाद: अहमदाबाद की प्रतिष्ठित गुजरात यूनिवर्सिटी सोमवार को रणक्षेत्र में तब्दील हो गई। यूनिवर्सिटी के विकास कार्यों में कथित रूप से हुए ?34 करोड़ के भारी-भरकम भ्रष्टाचार को लेकर छात्र संगठन, ABVP ने ऐसा जबरदस्त हंगामा मचाया कि कुलपति को अपनी सुरक्षित चेंबर छोड़कर बाहर निकलना पड़ा। शिक्षा के मंदिर में करोड़ों के इस कथित खेल ने पूरे राज्य के शैक्षणिक गलियारों में हड़कंप मचा दिया है।

क्या है 34 करोड़ का यह 'कनफ्यूजन'?

मिली जानकारी के अनुसार, यूनिवर्सिटी में पिछले कुछ समय से चल रहे निर्माण कार्यों और विभिन्न प्रोजेक्ट्स में बड़े पैमाने पर वित्तीय अनियमितताओं के आरोप लगे हैं। छात्र नेताओं का दावा है कि ?34 करोड़ की भारी राशि का कोई ठोस हिसाब-किताब नहीं है। आरोप है कि फर्जी बिलों के जरिए जनता और छात्रों की मेहनत की कमाई को ठिकाने लगाया गया है। जब छात्र इन सबूतों के साथ कुलपति से जवाब मांगने पहुंचे, तो बहस ने उग्र रूप ले लिया।

'कुलपति गो बैक' के नारों से गूंजा परिसर

छात्रों का आक्रोश इतना तीव्र था कि पुलिस को बीच-बचाव करना पड़ा। जमकर नारेबाजी और धक्का-मुक्की के बीच कुलपति छात्रों के तीखे सवालों का सामना नहीं कर सके। स्थिति को बिगड़ता देख कुलपति ने चेंबर छोड़ना ही बेहतर समझा। प्रदर्शनकारी छात्रों का साफ कहना है कि जब तक इस घोटाले की उच्च स्तरीय जांच नहीं होती और दोषियों को सलाखों के पीछे नहीं भेजा जाता, यह लड़ाई जारी रहेगी।

महानगर मेट्रो का सवाल: छात्रों की फीस का पैसा आखिर गया कहां?

मध्यमवर्गीय परिवारों के बच्चे अपनी मेहनत की कमाई से जो फीस भरते हैं, क्या वह भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ रही है? ?34 करोड़ का यह आंकड़ा तो महज एक शुरुआत लग रहा है; अगर निष्पक्ष जांच हुई तो कई बड़े चेहरों के नकाब उतर सकते हैं। यूनिवर्सिटी प्रशासन की चुप्पी कई अनसुलझे सवाल खड़े कर रही है।

गुजरात यूनिवर्सिटी के इतिहास में यह घटना

विद्या के धाम में 'घोटाले' का शोर: ABVP का उग्र प्रदर्शन, भ्रष्टाचार के आरोपों से थर्राया कैंपस; महानगर मेट्रो की विशेष रिपोर्ट

एक काले धब्बे की तरह है। अब देखना यह है कि राज्य सरकार इस मामले में जांच कमेटी का गठन करती है या फिर इस फाइल को भी ठंडे बस्ते में डाल दिया जाएगा।

राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री ने जताया दुख

एजेंसी

गांधीनगर। गुजरात के सुरेंद्रनगर जिले में एक सड़क हादसे में 7 लोगों की मौत हो गई, जबकि 4 अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। यह हादसा जिले में लखतर-विरमगाम राष्ट्रीय राजमार्ग पर हुआ, जहां एक तेज रफ्तार ट्रक ने पैदल जा रहे श्रद्धालुओं को कुचल दिया। लखतर पुलिस थाने के मुताबिक रविवार-सोमवार की दरमियानी रात करीब हादसे में जानमाल के नुकसान पर गहरा शोक व्यक्त किया है। राष्ट्रपति मुर्मु ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर अपने संदेश में कहा कि सुरेंद्रनगर में सड़क दुर्घटना में लोगों की मौत का समाचार अत्यंत दुखद है। उन्होंने शोक संतप्त परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की। उपराष्ट्रपति राधाकृष्णन ने एक्स पर एक पोस्ट में लिखा, 'गुजरात के सुरेंद्रनगर में एक दुखद

डेढ़ बजे श्रद्धालुओं का एक समूह राजकोट से बहुचराजी माता मंदिर दर्शन के लिए पैदल जा रहा था। इसी दौरान पीछे से आ रहे एक ट्रक ने नियंत्रण खो दिया और श्रद्धालुओं को टक्कर मार दी।इस हादसे में 6 श्रद्धालुओं और सड़क किनारे खड़े एक डंपर चालक की मौत हो गई। मृतकों में 5 पुरुष और 2 महिलाएं शामिल हैं। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु, उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस सड़क सड़क दुर्घटना में हुई जान-माल की हानि से मैं अत्यंत दुखी हूं। शोक संतप्त परिवारों के प्रति मेरी गहरी संवेदनाएं। मैं घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना करता हूं।' प्रधानमंत्री मोदी ने इस घटना पर दुख जताते हुए कहा कि गुजरात के सुरेंद्रनगर जिले में हुई दुर्घटना अत्यंत पीड़ादायक है। उन्होंने हादसे में अपने प्रियजनों को खोने वाले परिवारों के प्रति गहरी संवेदनाएं प्रकट कीं और घायलों के जल्द स्वस्थ होने की प्रार्थना की।

महानगर मेट्रो की विशेष पड़ताल

महंगाई की आग में झुलस रही जनता, सत्ता के नशे में प्रचार और तामझाम में मस्त है सरकार

डबल इंजन, डबल मार: अबकी बार 'महंगी' पड़ी सरकार!

महानगर मेट्रो ब्यूरो

अहमदाबाद: गुजरात की जनता इस समय एक अजीबोगरीब और कष्टकारी दौर से गुजर रही है। एक तरफ महंगाई का दानव मध्यम वर्गीय परिवारों के रसोईघर तक जा पहुँचा है, तो दूसरी तरफ सत्ताधारी दल 'डबल इंजन' के नाम पर जनता पर 'डबल मार' मारता दिखाई दे रहा है। जैसे-जैसे चुनावी बिगुल बज रहा है, जनता के बुनियादी मुद्दे हाशिए पर धकेले जा रहे हैं और चारों तरफ केवल भव्य प्रचार और बेहिसाब खर्च का तमाशा दिखाई दे रहा है।

रसोई का बजट बिगड़ा, आखिर कहाँ है विकास ?

गैस सिलेंडर हो, खाद्य तेल हो या सब्जियां–दाम आसमान छू रहे हैं। आम आदमी के लिए दो वक्त की रोटी जुटाना भी दूभर हो गया है। सरकार 'विकास' के बड़े-बड़े दावे तो करती है, लेकिन जनता पूछ रही है कि क्या विकास का मतलब सिर्फ भव्य रोड-शो और करोड़ों के होर्डिंग्स हैं? जिस डबल इंजन के भरोसे वोट मांगे गए थे, वह इंजन महंगाई रोकने के नाम पर आखिर क्यों हांफ रहा है?

जनता त्रस्त, सरकार प्रचार में मस्त

सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि जब जनता महंगाई की चक्की में पिस रही है, तब सत्ताधारी दल अपनी कुर्सी बचाने के लिए सरकारी तंत्र और धन का निर्लज्जता से उपयोग कर रहा है।

जगह-जगह आयोजित भव्य कार्यक्रम, आलीशान मंच और विज्ञापनों पर पानी की तरह बहाया जा रहा पैसा यह बताने के लिए काफी है कि सरकार को जनता के आंसुओं से ज्यादा अपनी वोटबैंक की फिक्र है।

महानगर मेट्रो के चुभते सवाल:

- क्या प्रचार पर खर्च किए जा रहे करोड़ों रुपये महंगाई कम करने में इस्तेमाल नहीं हो सकते?

- आम आदमी की जेब खाली करके आखिर किस 'विकास' का उत्सव मनाया जा रहा है ?

- सत्ता हथियाने के लिए जनता की गाढ़ी कमाई का ऐसा दुरुपयोग कितना जायज है ?

गुजरात की समझदार जनता सब देख रही है। वह समय दूर नहीं जब यही जनता महंगाई के आंकड़ों और झूठे प्रचार का हिसाब मांगेगी। सरकार के लिए इस बार की राह आसान नहीं होगी, क्योंकि पेट की आग किसी भी लुभावने विज्ञापन से नहीं बुझती।

कमल के शासन में जनता त्रस्त और नेता मस्त!

अपनों ने ही उड़ाई 'विकास' की धज्जियाँ

घर में ही लगी आग: अनुशासन वाली पार्टी के दावों की पोल खुली; कार्यकर्ता के बागी सुरों ने सत्ता के गलियारों में मचाया हड़कंप

महानगर मेट्रो ब्यूरो

अहमदाबाद: गुजरात भाजपा के लिए समय कुछ ठीक नहीं चल रहा है। एक तरफ सरकार और संगठन 'विकास' के बड़े-बड़े ढोल पीटने से थक नहीं रहे, वहीं दूसरी तरफ भाजपा के ही एक निष्ठावान कार्यकर्ता ने सार्वजनिक रूप से नेताओं की कार्यशैली का कच्चा चिट्ठा खोल दिया है। सोशल मीडिया पर जंगल की आग की तरह वायरल हो रहे एक वीडियो ने विपक्ष को तो मौका दिया ही है, लेकिन साथ ही 'कमल' के हाईकमान के माथे पर भी पसीना ला दिया है।

वीडियो में क्या है? 'विकास' की नग्न हकीकत

वायरल वीडियो में कार्यकर्ता साफ तौर पर अपना दर्द बयां करते हुए कह रहा है, 'बड़े नेता एसी गाड़ियों में घूम रहे हैं और अपनी दुनिया में मस्त हैं, जबकि आम जनता महंगाई और भ्रष्टाचार की चक्की में पिस रही है।' कार्यकर्ता ने गंभीर आरोप लगाए हैं कि चुनाव के समय तो जमीनी कार्यकर्ताओं के पैर छुए जाते हैं, लेकिन सत्ता मिलते ही नेता उन्हें

पहचानना तक भूल जाते हैं। शिक्षा का गिरता स्तर और बेकाबू महंगाई को लेकर इस कार्यकर्ता ने भाजपा के सो-कॉल्ड 'विकास' की बखिया उधेड़ कर रख दी है।

अनुशासन के उड़े परखच्चे: व्यक्तिगत गुबार या जनता की आवाज?

भाजपा हमेशा अपने 'अनुशासन' और 'कैडर' की बात करती है, लेकिन जब घर का ही सदस्य चौराहे पर खड़ा होकर बगावत करे, तो समझ लेना चाहिए कि पानी सिर से ऊपर जा चुका है। यह वीडियो सिर्फ एक कार्यकर्ता का गुस्सा नहीं, बल्कि हर गली-मोहल्ले में गूँज रही जनता की दबी हुई आवाज है। लोग अब पूछ रहे हैं—क्या यही वे 'अच्छे दिन' हैं जिनका सपना दिखाया गया था?

महानगर मेट्रो के चुभते सवाल:

* क्या अब पार्टी के भीतर लोकतंत्र और संवाद खत्म हो चुका है?
* नेता जनता की समस्याओं को सुनने के बजाय सिर्फ प्रचार और इवेंट मैनेजमेंट में क्यों व्यस्त हैं?
* जो सरकार अपने ही समर्पित कार्यकर्ताओं को खुश नहीं रख सकती, वह आम जनता का भला कैसे करेगी?

इस वायरल वीडियो ने भाजपा के 'ऑल इज वेल' (सब ठीक है) वाले गुब्बारे की हवा निकाल दी है। अगर समय रहते नेताओं ने अपनी जमीनी हकीकत नहीं सुधारी, तो यह असंतोष आने वाले समय में एक बड़े राजनीतिक ज्वालामुखी का रूप ले सकता है।

महानगर मेट्रो एक्सक्लूसिवः कुमार कानाणी का 'विस्फोटक' प्रहार!

सत्ता में आओगे तो क्या अपने बाप के पैसे से विकास करोगे ?

महानगर मेट्रो ब्यूरो

सूरत। अपने बेबाक और कड़क अंदाज के लिए मशहूर सूरत की वराछा सीट के विधायक और पूर्व मंत्री कुमार कानाणी एक बार फिर चर्चा में हैं। इस बार उनके निशाने पर 'आम आदमी पार्टी' का एक कार्यकर्ता रहा, जिसे कानाणी ने मंच से ऐसा करारा जवाब दिया कि पूरी सभा तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठी। सोशल मीडिया पर अब यह बयान 'आग' की तरह फैल रहा है।

फेसबुक लाइव में 'उंगली' करना पड़ा भारी!

दरअसल, कुमार कानाणी अपने क्षेत्र में हुए विकास कार्यों का लेखा-जोखा देने के लिए फेसबुक लाइव कर रहे थे। इसी दौरान एक 'आप' कार्यकर्ता ने कमेंट किया— 'यह तो जनता के टैक्स का पैसा है, विकास जनता के पैसों से हो रहा है।' बस, यह पढ़ते ही कानाणी का पारा सातवें आसमान पर पहुंच गया। सभा को संबोधित करते हुए कानाणी ने उस कार्यकर्ता को आड़े हाथों लिया और पूछा— 'भाई, विकास तो जनता के पैसे से ही होता है, लेकिन अगर कल को तुम सत्ता में आओगे, तो क्या अपने बाप के पैसे से विकास करोगे ?

'भ्रष्टाचारी हमसे हिसाब न मांगें '

ताना कसते हुए कानाणी यहीं नहीं रुके। उन्होंने सीधे तौर पर 'आप' नेताओं को घेरते हुए कहाः

ज़ नीति और नीयत साफ़ः हम जनता का पैसा सही जगह और सही काम में इस्तेमाल करते हैं, उसे अपनी जेब में नहीं भरते।

-भ्रष्टाचार पर वारः भाजपा के शासन में पैसा खाया नहीं जाता। हम जनता को एक-एक पाई का हिसाब देते हैं।

- विपक्ष पर निशानाः जो लोग खुद जनता का पैसा लूटने की फिराक में रहते हैं, वो किस मुंह से हमसे हिसाब मांग रहे हैं?

AAP कार्यकर्ता को सरेआम लताड़

वराछा में सियासी सरगर्मी तेज

कुमार कानाणी का यह तीखा तेवर बताता है कि सूरत की राजनीति में 'वर्चस्व की लड़ाई' अब निजी हमले और तीखी बयानबाजी तक पहुंच गई है। कानाणी ने साफ कर दिया कि विकास सरकारी तिजोरी से ही होता है, लेकिन उसे ईमानदारी से लागू करना ही असली नेतृत्व है।

महानगर मेट्रो का सवालः क्या विकास की चर्चा अब 'बाप-दादों' के नाम तक सीमित रह जाएगी? और क्या 'आप' इस तीखे हमले का पलटवार कर पाएगी?

दिनभर प्रेस कर कमाता है 500, आयकर विभाग ने थमाया 598 करोड़ का नोटिस!

महानगर मेट्रो ब्यूरो

अहमदाबाद। कहते हैं कि किस्मत जब रूठती है तो राजा को रंक बना देती है, लेकिन गुजरात के एक मामूली प्रेस करने वाले (धोबी) के साथ जो हुआ, उसने न्याय प्रणाली और विभाग की कार्यशैली पर ही सवाल खड़े कर दिए हैं। जो इंसान सुबह से शाम तक तपती धूप और भारी प्रेस के बीच ?500-700 कमाने के लिए पसीना बहाता है, उसे आयकर विभाग ने ?598 करोड़ का भुगतान करने का नोटिस थमाया है।

पसीने की कमाई पर 'सिस्टम' का प्रहार

मामला जितना हैरान करने वाला है, उतना ही डरावना भी। पीड़ित शख्स की पूरी जिंदगी की कमाई जोड़ ली जाए, तो शायद वह कुछ लाख तक न पहुंचे, लेकिन विभाग के कागज उसे अरबपति बता रहे हैं। नोटिस हाथ में आते ही उस गरीब परिवार के पैरों तले जमीन खिसक गई है। घर में चूल्हा जलना मुश्किल हो गया है क्योंकि डर है कि कहीं पुलिस या अधिकारी आकर उन्हें जेल में न डाल दें।

क्या यह डेटा की चूक है या किसी बड़े घोटाले की साजिश ?

महानगर मेट्रो इस मामले में गहरी पड़ताल की मांग करता है। अक्सर देखा गया है कि जालसाज गिरोह गरीब और अनपढ़ लोगों के आधार कार्ड और पैन कार्ड का दुरुपयोग कर फर्जी कंपनियां बनाते हैं और करोड़ों का ट्रांजैक्शन करते हैं। क्या इस मासूम कामगार के दस्तावेजों का गलत इस्तेमाल हुआ है? या फिर आयकर विभाग के 'डिजिटल सिस्टम' ने किसी तकनीकी गड़बड़ी के चलते एक गरीब को निशाना बनाया है ?

प्रशासनिक अंधेरगर्दी-कौन देगा जवाब ?

एक तरफ सरकार डिजिटल इंडिया और पारदर्शिता की बात करती है, वहीं दूसरी तरफ धरातल पर ऐसी खबरें सिस्टम की पोल खोलती हैं। 598 करोड़ का नोटिस भेजने से पहले क्या विभाग के अधिकारियों ने एक बार भी उस व्यक्ति की आर्थिक स्थिति की जांच करना जरूरी नहीं समझा ?

जनता की आवाज़

गरीब पर सितमः मेहनत की रोटी खाने वाले इंसान को सिस्टम ने मानसिक प्रताड़ना के जाल में फंसाया।

जांच की मांगः इस मामले के पीछे छिपे असली 'सफेदपोश' अपराधियों को बेनकाब करना जरूरी।

कानूनी मदद की दरकारः क्या गुजरात सरकार और स्थानीय प्रशासन इस पीड़ित की मदद के लिए आगे आएगा ?

महानगर मेट्रो का सवालः

'साहब! जिसने कभी करोड़ों के 'शून्य' नहीं देखे, वो इतना टैक्स कहाँ से लाएगा ? क्या हमारा तंत्र इतना अंधा हो चुका है कि उसे मेहनत की कमाई और काले धन के बीच का फर्क समझ नहीं आता ?'

यह खबर केवल एक नोटिस की नहीं, बल्कि एक गरीब के सम्मान और उसकी मानसिक शांति की है। 'महानगर मेट्रो' इस मामले को तब तक उठाता रहेगा जब तक उस निर्दोष व्यक्ति को न्याय नहीं मिल जाता और इस गलती को सुधार नहीं लिया जाता।

डिजिटल हुआ शगुनः जब ट्रेन में किन्नर ने निकाला कोड, फिर 'शादी' के प्रस्ताव पर मिला ऐसा जवाब!

महानगर मेट्रो ब्यूरो

अहमदाबाद। भारतीय ट्रेनों के सफर में कब क्या हो जाए, कोई नहीं जानता। यहाँ कभी बहस होती है, तो कभी ऐसे मजेदार लम्हे कैद हो जाते हैं जो इंटरनेट पर छा जाते हैं। हाल ही में सोशल मीडिया पर एक ऐसा ही वीडियो वायरल हो रहा है, जिसने सफर कर रहे यात्रियों और अब नेटिज़न्स को हंसने पर मजबूर कर दिया है। यह वाकया 'डिजिटल इंडिया' की एक अनोखी और मजाकिया तस्वीर पेश करता है।

कैश नहीं है भाई...' और फिर चमका QR कोड!

सफर के दौरान जब एक किन्नर आशीर्वाद देने और नेक पैसे मांगने पहुंची, तो वहां बैठे एक युवक ने हंसते हुए कह दिया— 'अरे भाई, मेरे पास तो कैश ही नहीं है, आजकल सब ऑनलाइन चलता है।' युवक को लगा था कि शायद बात यहीं खत्म हो जाएगी, लेकिन कहानी में ट्विस्ट अभी बाकी था।

जैसे ही युवक ने ऑनलाइन पेमेंट की बात की, किन्नर ने बिना एक पल गंवाए अपने पास मौजूद क्यूआर कोड निकाल कर सामने रख दिया। यह देख पूरी बोगी ठहाकों से गूँज उठी। युवक भी अपनी बात से पीछे नहीं हट सका और उसने **मुस्कुराते हुए 'डिजिटल शगुन' अदा किया।**

मजाक-मजाक में बात 'शादी' तक पहुँची

हंसी-मजाक का सिलसिला यहीं नहीं रुका। पैसे देने के बाद युवक ने चुटकी लेते हुए पूछ लिया— 'पैसे तो दे दिए, अब क्या मुझसे शादी करोगे?' उम्मीद थी कि जवाब में कोई झिझक होगी, लेकिन वहां मौजूद किन्नर ने भी बड़े ही बिंदास अंदाज़ में तुरंत 'हाँ' कह दी। इस हाजिरजवाबी ने वहां मौजूद लोगों का दिल जीत लिया।

बदलता भारत, बदलता अंदाज़

यह वायरल वीडियो न केवल हमें गुदगुदाता है, बल्कि यह भी दिखाता है कि समाज का हर तबका अब तकनीक के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रहा है।

डिजिटल क्रांतिःअब दुआएं और आशीर्वाद भी कैशलेस हो रहे हैं।

खुशमिजाज समाजः कठिन परिस्थितियों के बावजूद, समुदायों के बीच ऐसा हल्का-फुल्का संवाद भाईचारे को दर्शाता है।

न्यूज़ बुलेट्स

हाई-टेक आशीर्वादः ट्रेन में दिखा डिजिटल इंडिया का अनोखा रूप।

हाजिरजवाबी का जादूः 'शादी' के सवाल पर मिले जवाब ने बटोरीं सुर्खियां।

सोशल मीडिया पर वायरलः लोग बोले- 'इसे कहते हैं वक्त के साथ चलना। '

संपादकीय संदेशः

महानगर मेट्रो इस वायरल खबर को एक मानवीय और सुखद अनुभव के तौर पर साझा कर रहा है। हंसी-मजाक जीवन का हिस्सा है, लेकिन हमें यह हमेशा याद रखना चाहिए कि किसी भी समुदाय या व्यक्ति के प्रति सम्मान बना रहे। खुशियां बांटने से बढ़ती हैं, और यह वाकया उसी का एक छोटा सा उदाहरण है।

कैप्शन आइडियाः 'दुआएं भी हुईं डिजिटल... मुस्कुराइए, आप भारतीय रेल में हैं!

आस्था या अंधविश्वासः दूध-घी की बर्बादी और कुपोषण का दंश

महानगर मेट्रो ब्यूरो

अहमदाबाद। पूर्व जस्टिस मार्कंडेय काट्जू का वह विवादित बयान आज भी चर्चाओं में रहता है जिसमें उन्होंने भारतीयों की समझ पर सवाल उठाए थे। आज जब हम नर्मदा नदी में दूध बहाते या पल्ली जैसे उत्सवों में सड़कों पर टनों घी बहते देखते हैं, तो अनायास ही यह सवाल खड़ा होता है कि क्या हम अनजाने में उनके उन तर्कों को सही साबित कर रहे हैं?

आस्था के नाम पर संसाधनों की बर्बादी

भारत एक ऐसा देश है जहां एक तरफ करोड़ों बच्चे कुपोषण की मार झेल रहे हैं, जिन्हें एक वक्त का पौष्टिक भोजन नसीब नहीं होता। दूसरी तरफ, धर्म और परंपरा के नाम पर हजारों लीटर दूध नदियों में बहा दिया जाता है और शुद्ध घी सड़कों पर व्यर्थ कर दिया जाता है। क्या हमारी आस्था इतनी संकीर्ण हो गई है कि हमें बर्बादी में ही पुण्य नजर आता है?

मानवता की सेवा ही सच्चा धर्म

यदि यही दूध और घी बर्बाद करने के बजाय, उससे दही या पनीर जैसी पौष्टिक चीजें बनाकर कुपोषित बच्चों में बांट दी जाती, तो शायद उन मासूमों के चेहरे की मुस्कान ईश्वर की सबसे बड़ी सेवा होती। धर्म का असली अर्थ परोपकार है, न कि प्राकृतिक संसाधनों का अपव्यय। विडंबना यह है कि आधुनिक युग में भी 'धर्मांधता' के कारण हम इस वैज्ञानिक और मानवीय दृष्टिकोण को अपनाने में विफल रहे हैं।

शासन और समाज की जिम्मेदारी

दुखद पहलू यह भी है कि समाज को सही दिशा दिखाने के बजाय, कई बार सत्ता और शासन से जुड़े लोग भी ऐसी अंधश्रद्धाओं को संरक्षण या प्रोत्साहन देते नजर आते हैं। जब तार्किकता के स्थान पर अंधविश्वास को बढ़ावा मिलता है, तो देश प्रगति की दौड़ में सदियों पीछे छूट जाता है। हमें यह समझने की जरूरत है कि पत्थर या पानी पर चढ़ाया गया प्रसाद तब तक सार्थक नहीं है, जब तक हमारे समाज का एक बड़ा हिस्सा भूख और कुपोषण से लड़ रहा है। अब समय आ गया है कि हम अपनी परंपराओं को तर्क और मानवता की कसौटी पर कसें।

सियाचिनः बर्फीली चोटियों पर तिरंगे की शान के 42 वर्ष और अमर बलिदान को नमन

महानगर मेट्रो ब्यूरो

अहमदाबाद। आज से ठीक 42 साल पहले, 13 अप्रैल 1984 के उस ऐतिहासिक दिन ने भारतीय सैन्य इतिहास में अदम्य साहस की एक नई इबारत लिखी थी। भारतीय सेना ने 'ऑपरेशन मेघदूत' के तहत सामरिक दृष्टि से विश्व के सबसे ऊंचे और दुर्गम युद्ध क्षेत्र 'सियाचिन ग्लेशियर' पर अपना आधिपत्य स्थापित कर तिरंगा फहराया था।

ऑपरेशन मेघदूतः असंभव को संभव बनाने की गाथा

आज ही के दिन तड़के 4:30 बजे, जब दुनिया गहरी नींद में थी, कैप्टन कुलकर्णी और उनके जांबाज सैनिकों ने चेतक हेलीकॉप्टर के जरिए सियाचिन की अभेद्य चोटियों पर कदम रखा था। 17,000 से 22,000 फीट की अत्यधिक ऊंचाई पर स्थित यह क्षेत्र किसी चुनौती से कम नहीं था। शून्य से 15 डिग्री नीचे से लेकर -60 डिग्री तक गिरता तापमान और 80 से 150 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से चलने वाली बर्फीली हवाएं, जहाँ सांस लेना भी दूभर होता है, वहां हमारे जवानों ने अपने पराक्रम से दुश्मन के मंसूबों को नाकाम कर दिया।

अहमदाबाद के लाडले कैप्टन निलेश सोनी का अमर बलिदान

सियाचिन की रक्षा की इस गौरवशाली परंपरा में हमारे शहर अहमदाबाद का नाम भी स्वर्ण अक्षरों में अंकित है। 62 मीडियम रेजिमेंट के जांबाज कैप्टन निलेश सोनी ने सियाचिन की दुर्गम वादियों में पाकिस्तानी सेना का डटकर मुकाबला किया। 12 फरवरी 1987 को मातृभूमि की रक्षा करते हुए उन्होंने अपना सर्वोच्च बलिदान दिया और वीरगति को प्राप्त हुए। कैप्टन सोनी का यह बलिदान आज भी युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है।

विषम परिस्थितियां और अटूट कर्तव्यनिष्ठा

सियाचिन का युद्ध केवल दुश्मन से नहीं, बल्कि प्रकृति की कठोरता से भी है। ऑक्सीजन की कमी, हिमस्खलन का डर और हाड़ कंपा देने वाली ठंड के बीच भारतीय सैनिक आज भी 24 घंटे मुस्तैद रहते हैं। राष्ट्र और प्रजा की सुरक्षा के लिए उनकी यह अटूट प्रतिबद्धता ही है जो हमें चैन की नींद सोने का अवसर देती है।

महानगर मेट्रो एक्सक्लूसिव

अहमदाबाद। इंसान चाहे कितना भी सफल हो या व्यस्त, दिन के अंत में जब उसे एकांत मिलता है, तब उसका मन अक्सर उसी गली में जा पहुँचता है जहाँ जाने की उसने खुद को मनाही की होती है। कई बार हमें यह बखूबी पता होता है कि जिसके पीछे हमारा मन दौड़ रहा है, वह हकीकत में कभी मिलने वाला नहीं है। फिर भी, मन वहीं जाकर क्यों फिसलता है? क्यों वह उसी असंभव की राह पकड़कर बैठा रहता है?

आदत या अधूरी तड़प?

मन को समझाना दुनिया का सबसे कठिन काम है। हम इसे काम में उलझाते हैं, पढ़ने-लिखने में व्यस्त रखते हैं, लेकिन जैसे ही फुरसत का एक पल मिलता है, यह पुरानी यादों की उसी चौखट पर जाकर बैठ जाता है। मन एक दर्पण की तरह है; इसमें वही दिखाई देता है जिसे हम खोना नहीं चाहते, भले ही वह हकीकत में खो चुका हो।

भावनाओं को संतुलित करने का संघर्ष

1. स्वीकार ही आधी मुक्ति हैः मन से लड़ने के बजाय उसे स्वीकार कर लें। उससे कहें कि, 'हाँ, तुम्हें उसकी याद आ रही है और यह स्वाभाविक है।' जब आप विचारों का प्रतिरोध करना छोड़ देंगे, तब उनकी तीव्रता धीरे-धीरे कम होने लगेगी।

2. शब्दों में बहने देंः पवन भाई, जब भावनाएँ अपनी सीमा पार करने लगें, तो उन्हें कागज पर उतार देना चाहिए। जो पीड़ा मन को तड़पाती है, वह यदि शब्द बनकर बाहर आए तो हृदय का भार हल्का हो जाता है। आपकी कलम ही आपकी सबसे बड़ी थेरेपी है।

3. वर्तमान की पकड़ः मन अतीत की ढलान पर इसलिए फिसलता है क्योंकि हमने वर्तमान में अपनी पकड़ मजबूत नहीं की है। वर्तमान के क्षण में जीने का प्रयास, चाहे वह चाय की एक चुस्की हो या अखबार की कोई सुर्खी, मन को भटकने से रोकने में मदद करती है।

अंतिम विचार

भावनाएँ कोई स्विच नहीं हैं जिन्हें बंद किया जा सके। वे तो समुद्र के ज्वार की तरह हैं, जो आएँगी और जाएँगी। मन डगमगाए तो भले डगमगाए, लेकिन फिर से खड़े होकर चलने की हिम्मत रखना ही जीवन है। जो नहीं मिलने वाला, उसकी तड़प ही शायद इंसान को भीतर से जीवित रखती है।

लेखकः पवन माकन (महानगर मेट्रो)

परिवर्तन की हुंकारः क्या गुजरात में ढहने वाला है सत्ता का किला?

महानगर मेट्रो ब्यूरो

अहमदाबाद/गांधीनगर। गुजरात की शांत दिखने वाली सड़कों पर इन दिनों एक अलग ही गर्माहट महसूस की जा रही है। यह गर्मी मौसम की नहीं, बल्कि उस 'राजनीतिक बदलाव' की है जिसकी सुगबुगाहट गांव से लेकर महानगरों तक साफ़ सुनाई दे रही है। पिछले दो दशकों से एक ही विचारधारा को सींचने वाली गुजरात की जनता अब बदलाव के मूड में नजर आ रही है।

भ्रष्टाचार और महंगाईः आम आदमी की कमर टूटी

महानगर मेट्रो के विश्लेषण के अनुसार, वर्तमान शासन के खिलाफ सबसे बड़ी नाराजगी भ्रष्टाचार और बेलगाम महंगाई को लेकर है। रसोई से लेकर पेट्रोल पंप तक, आम आदमी की जेब पर पड़ने वाली मार ने जनता के सब्र का बांध तोड़ दिया है। लोग अब सवाल पूछ रहे हैं– 'विकास की इस चमक में गरीब और मध्यम वर्ग कहां है?' सरकारी दफ्तरों में फैला भ्रष्टाचार अब चर्चा का विषय नहीं, बल्कि आक्रोश का कारण बन चुका है।

कांग्रेस का बढ़ता प्रभावः विकल्प की तलाश खत्म?

राजनीतिक पंडितों का मानना है कि राज्य में 'कांग्रेस का पवन' अब एक आंधी में तब्दील हो चुका है। सालों तक विपक्ष को कमजोर आंकने वाली सत्ताधारी पार्टी के लिए अब खतरे की घंटी बज चुकी है। बेरोजगारी, शिक्षा का निजीकरण और स्वास्थ्य सेवाओं की बदहाली को लेकर कांग्रेस ने जो मोर्चा खोला है, उसे जनता का भरपूर समर्थन मिल रहा है।

'भाजपा के तथाकथित 'मॉडल' की हकीकत अब जनता के सामने है। कुशासन और घोटालों के इस दौर को खत्म करने के लिए गुजरात की जनता अब कांग्रेस को एकमात्र विकल्प के रूप में देख रही है।'

महानगरों का बदला मिजाज

सिर्फ ग्रामीण इलाके ही नहीं, बल्कि अहमदाबाद, सूरत और राजकोट जैसे भाजपा के गढ़ माने जाने वाले शहरों में भी लोग अब बदलाव की बात कर रहे हैं। स्थानीय निकायों में टिकट वितरण को लेकर भाजपा के भीतर मची खींचतान और पुराने कार्यकर्ताओं की अनदेखी ने जलते पर घी का काम किया है।

प्रमुख बिंदु

कुशासन का अंतः भ्रष्टाचार के आरोपों से घिरी सरकार के खिलाफ बढ़ता जनाक्रोश।

महंगाई पर वार आम जनता के बजट को बिगाड़ने वाली नीतियों के खिलाफ गुस्सा।

बदलाव का संकल्पः गुजरात की जनता अब वादों के बजाय परिणाम चाहती है।

कांग्रेस की लहरः राज्यभर में कांग्रेस कार्यकर्ताओं का बढ़ता उत्साह और जनसमर्थन।

संपादकीय राय

गुजरात की राजनीति एक निर्णायक मोड़ पर खड़ी है। सत्ता का अहंकार और जनता की बुनियादी जरूरतों की अनदेखी अक्सर बड़े साम्राज्यों के पतन का कारण बनती है। क्या 2026 का यह साल गुजरात के इतिहास में एक नया अध्याय लिखेगा? महानगर मेट्रो की नजर हर खबर पर बनी रहेगी।

अब नहीं सहेगा गुजरात, परिवर्तन की है बात! '

'भ्रष्ट शासन का अंत करीब, कांग्रेस के संग नया गुजरात।

मन का मृगतृष्णाः जब समझ और संवेदना के बीच युद्ध छिड़ जाए

जय भीमः केवल एक अभिवादन नहीं, समानता और अस्मिता का प्रतीक

महानगर मेट्रो

अहमदाबाद/मुंबई। गुजरात और महाराष्ट्र की धरती पर जब भी दो लोग एक-दूसरे से मिलते हैं, तो हवाओं में एक गूंज सुनाई देती है– 'जय भीम'। यह मात्र दो शब्द नहीं हैं, बल्कि बाबासाहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर के प्रति अटूट श्रद्धा, उनके संघर्षों की याद और सामाजिक समानता के संकल्प का प्रतीक बन चुके हैं।

लाखों कार्यकर्ताओं की सामूहिक पहचान

गुजरात और महाराष्ट्र में अंबेडकरवादी आंदोलन से जुड़े लाखों कार्यकर्ता और बाबासाहेब के विचारों के प्रति भावनात्मक लगाव रखने वाले लोग एक-दूसरे का अभिवादन 'जय भीम' कहकर करते हैं। आज यह संबोधन एक वैश्विक पहचान बन चुका है, जो शोषितों और वंचितों के भीतर स्वाभिमान की भावना जगाता है।

वैचारिक क्रांति का आधार

इस अभिवादन की जड़ें केवल औपचारिकता में नहीं, बल्कि उस वैचारिक क्रांति में हैं जिसे डॉ. अंबेडकर ने शुरू किया था। महाराष्ट्र और गुजरात जैसे राज्यों में, जहाँ सामाजिक चेतना के आंदोलनों का लंबा इतिहास रहा है, वहां 'जय भीम' कहना आपसी भाईचारे और संवैधानिक मूल्यों के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त करने का एक जरिया है।

भावनात्मक जुड़ाव और सम्मान

आंबेडकरवादी समाज के लिए बाबासाहेब एक मसीहा के समान हैं। उनसे जुड़ाव रखने वाले लोग जब 'जय भीम' कहते हैं, तो वे असल में बाबासाहेब द्वारा दिखाए गए शिक्षित होने, संगठित रहने और संघर्ष करने के मार्ग को दोहराते हैं। यह शब्द छोटे-बड़े के भेदभाव को मिटाकर सबको एक ही कतार में खड़ा कर देता है।

महानगर मेट्रो की इस विशेष रिपोर्ट के माध्यम से हम उस सामाजिक समरसता और चेतना को सलाम करते हैं, जो इन दो शब्दों के माध्यम से समाज के अंतिम छोर तक पहुंच रही है।

जय भीम, जय भारत।

महंगाई की मार और सत्ता का शिकारः आम आदमी की कमर, राजनीति की मौज

महानगर मेट्रो ब्यूरो

अहमदाबादः आज के दौर में आम आदमी दो पाटों के बीच पिस रहा है। एक तरफ आसमान छूती महंगाई की 'मोकण' (शोक) है, तो दूसरी तरफ किसी भी कीमत पर सत्ता हथियाने का खेल। जनता की थाली से दाल-सब्जी गायब हो रही है, लेकिन सियासी गलियारों में 'कुर्सी' के समीकरण बिठाने के लिए करोड़ों की गोटियां फेंकी जा रही हैं।

थाली खाली, पर वादे आलीशान

बाजार में जाकर देखिए, टमाटर और प्याज की कीमतें आम जनता की आंखों में आंसू ला रही हैं। पेट्रोल-डीजल के दाम पूरी अर्थव्यवस्था की रफ्तार को धीमा कर रहे हैं। मध्यम वर्ग और गरीब परिवार इस उलझन में हैं कि महीने का बजट कैसे चलाएं? जिसे महंगाई पर लगाम लगाने के लिए चुना गया था, वही सत्ता अब चुनाव जीतने की नई-नई 'रणनीतियों' में व्यस्त है।

सत्ता का शतरंजः जनमत पर भारी पड़ता 'जुगाड़'

राजनीति अब सेवा नहीं, बल्कि 'सत्ता पर कब्जे' का व्यापार बन चुकी है। राज्य दर राज्य हम देखते हैं कि जनता का वोट एक तरफ होता है और सरकार किसी दूसरे की बन जाती है।

ज़ विधायकों की बाड़ेबंदीः जब जनता महंगाई से त्रस्त होती है, तब नेता फाइव स्टार होटलों में सत्ता बचाने या बनाने की साजिशें रच रहे होते हैं।

ज़ नारे बनाम हकीकतः चुनावी रैलियों में महंगाई को 'वैश्विक समस्या' बताकर पल्ला झाड़ लिया जाता है, जबकि सत्ता के लिए किए जाने वाले खर्चों की कोई सीमा नहीं होती।

क्या यही लोकतंत्र है?

एक तरफ मध्यम वर्ग EMI और घर के खर्च के नीचे दबा जा रहा है, वहीं दूसरी तरफ राजनैतिक दल 'डिजिटल प्रचार' और 'वोट बैंक' की राजनीति पर अरबों रुपये पानी की तरह बहा रहे हैं। सवाल यह उठता है कि क्या सत्ता की भूख आम आदमी की भूख से बड़ी हो गई है?

महानगर मेट्रो का नजरिया

महंगाई और सत्ता के खेल के बीच सबसे ज्यादा नुकसान उस 'मूक मतदाता' का हो रहा है, जो आज भी इसी उम्मीद में है कि शायद कल सुबह कीमतें कुछ कम होंगी। लेकिन सत्ता के खिलाड़ी यह भूल रहे हैं कि जब महंगाई की 'मो??' (विलाप) बढ़ती है, तो जनता की नाराजगी बड़े-बड़े किलों को ढहाने की ताकत रखती है। अब समय आ गया है कि राजनीति 'कुर्सी' के खेल से बाहर निकलकर 'रसोई' की फिक्र करे।

हिंदू महासभा का 112वां स्थापना दिवस देशभर में उत्साह के साथ मनाया गया

महानगर मेट्रो ब्यूरो

नई दिल्ली। अखिल भारत हिंदू महासभा का 112वां स्थापना दिवस सोमवार को देशभर में हर्षोल्लास और श्रद्धा के साथ मनाया गया। इस अवसर पर संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वामी चक्रपाणि नंद गिरी के नेतृत्व में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनमें कार्यकर्ताओं ने हिंदू राष्ट्र निर्माण का संकल्प लिया और संगठन के महापुरुषों के आदर्शों पर चलने की शपथ ली। कार्यक्रम के दौरान मदन मोहन मालवीय, विनायक दामोदर सावरकर तथा लाला लाजपत राय सहित कई राष्ट्रनायकों के योगदान को स्मरण कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। अपने संबोधन में स्वामी चक्रपाणि ने संगठन की विचारधारा को राष्ट्रहित में महत्वपूर्ण बताते हुए कार्यकर्ताओं से तन, मन और धन से सेवा करने का आह्वान किया। देशभर में आयोजित कार्यक्रमों में भंडारा, प्रसाद वितरण और स्वागत समारोह आयोजित किए गए, जहां 'जय हिंदू राष्ट्र' और 'जय सनातन धर्म' के उद्घोष से वातावरण गुंजायमान रहा।

कुम्हारवाड़ा की बदहाली पर 'एंट्री' किंग नेता मौन!

ग्राउंड रिपोर्ट : नल से टपक रहा है 'जहर', गटर के मुहाने पर खड़ी है हजारों की आबादी

महानगर मेट्रो ब्यूरो

भावनगरः कहते हैं राजनीति सेवा का माध्यम है, लेकिन कुम्हारवाड़ा के जनप्रतिनिधियों ने इसे 'रसूख' का जरिया बना लिया है। इलाके की गलियां गटर के पानी से लबालब हैं और नेताजी सफेद कुर्ता पहनकर इलाकों में सिर्फ अपनी 'एंट्री' मारने और रसूख दिखाने में व्यस्त हैं। महानगर मेट्रो की टीम जब कुम्हारवाड़ा पहुंची, तो विकास के दावों की जो हकीकत सामने आई, वह रोंगटे खड़े कर देने वाली है।

सत्ता का नशाः 'जनता की प्यास से बड़ा नेताजी का रसूख

स्थानीय निवासियों का सीधा आरोप है कि चुनाव जीतने के बाद कॉरपोरेटर साहब के दर्शन दुर्लभ हो गए हैं। लोगों ने गुस्से में कहा– 'कॉरपोरेटर के पद का इस्तेमाल सिर्फ अपना दबदबा बनाने के लिए किया जा रहा है, जनता की शिकायतों पर सुनवाई करने के लिए उनके पास वक्त नहीं है।' इलाके में उनकी गाड़ियां तो घूमती हैं, लेकिन उन गाड़ियों के शीशे जनता का दुख देखने के लिए नीचे नहीं उतरते।

सबसे बड़ा संकटः 'मिक्स पानी' मौत को दे रहा है दावत

कुम्हारवाड़ा की सबसे भयावह स्थिति पीने के पानी की है। ड्रेनेज सिस्टम पूरी तरह ध्वस्त हो चुका है। स्थानीय महिलाओं ने खाली मटके दिखाकर विरोध प्रदर्शन करते हुए बताया कि– 'ड्रेनेज लाइन और पीने के पानी की पाइपलाइन आपस में मिल गई है।' घरों में जो पानी आ रहा है, उसमें गटर की गंदगी और बदबू साफ महसूस की जा सकती है।

'हम अपने बच्चों को पानी पिला रहे हैं या बीमारी, हमें खुद नहीं पता। प्रशासन किसी बड़ी अनहोनी का इंतजार कर रहा है।' – एक पीड़ित निवासी

बदहाली के मुख्य बिंदुः

मुख्य मार्ग से लेकर अंदरूनी गलियों तक, सड़कें पूरी तरह उखड़ चुकी हैं।

उफनती गटरः नालियों की सफाई न होने से गंदा पानी लोगों के घरों की दहलीज तक पहुंच रहा है।

प्रशासनिक अनदेखीः बार-बार शिकायत के बावजूद नगर निगम के अधिकारी 'फाइल' आगे बढ़ाने का बहाना बनाकर पल्ला झाड़ रहे हैं।

महानगर मेट्रो का सीधा प्रहार

सत्ता की हनक में चूर जिम्मेदारों को यह समझना होगा कि कुम्हारवाड़ा की जनता ने उन्हें 'एंट्री' मारने के लिए नहीं, बल्कि उनकी समस्याओं के समाधान के लिए चुना था। यदि अगले कुछ दिनों में पानी और ड्रेनेज की समस्या हल नहीं हुई, तो बीमारी का विस्फोट होना तय है।

इन्वेस्टिगेशनः चुनाव का सबसे बड़ा 'चमत्कार' या ब्लैक मनी का खेल ?

923 करोड़ का चुनावी चंदाः पार्टी को मिला अरबों का दान!

महानगर मेट्रो ब्यूरो/पवन माकन

उमरेठ : गुजरात के उमरेठ में एक छोटी और कम चर्चित राजनीतिक पार्टी भारतीय जन जनवादी पार्टी को मिले ? 923 करोड़ के चुनावी चंदे ने बड़ा विवाद खड़ा कर दिया है। जानकारी के अनुसार, इस पार्टी के संस्थापक को 2017 के चुनाव में मात्र 322 वोट मिले थे, बावजूद इसके पार्टी के पास अब अरबों रुपये का फंड मौजूद है। खास बात यह है कि वर्तमान उम्मीदवार साधारण जीवन जीता है और आज भी मोपेड से चलता है। इतनी बड़ी रकम मिलने पर फंड के स्रोत को लेकर कई सवाल उठ रहे हैं। विशेषज्ञ इसे मनी लॉन्ड्रिंग या काले धन को सफेद करने का जरिया मान रहे हैं। चुनाव आयोग और आयकर विभाग की चुप्पी ने मामले को और संदिग्ध बना दिया है। अब यह बहस तेज हो गई है कि यह चंदा लोकतंत्र के लिए खतरा है या किसी बड़े खेल का हिस्सा। मामले की निष्पक्ष जांच की मांग उठने लगी है, ताकि सच्चाई सामने आ सके।

ममता बनर्जी का पीएम नरेंद्र मोदी पर हमला, चुनावी वादों पर उठाए सवाल, बीजेपी झूठे वादों की टोकरी, जनता इस चुनाव में देगी चार्जशीट

महानगर मेट्रो ब्यूरो

कोलकाताः पश्चिम बंगाल में विधानसभा चुनाव से पहले राजनीतिक माहौल लगातार गरमाता जा रहा है। सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस और बीजेपी के बीच आरोप-प्रत्यारोप का दौर तेज हो गया है। मुख्यमंत्री Mamata Banerjee राज्य के विभिन्न हिस्सों में लगातार जनसभाएं कर रही हैं।

सोमवार को उन्होंने बीरभूम के सूरी और कांकसा में रैलियों को संबोधित करते हुए बीजेपी पर जमकर निशाना साधा। ममता बनर्जी ने कहा कि बीजेपी 'झूठे वादों की टोकरी' है और इस चुनाव में जनता उन्हें उनके वादों के लिए 'चार्जशीट' देगी।

उन्होंने कहा, 'पिछले चुनाव में हमने 'लक्ष्मी भंडार' योजना शुरू करने का वादा किया था और हमने उसे पूरा किया। हमने शुरुआत 500 रुपये से की थी, क्योंकि हम अपने वादों से पीछे नहीं हटते। लेकिन बीजेपी ने अब तक एक भी वादा पूरा नहीं किया है। ममता बनर्जी ने आरोप लगाया कि बीजेपी चुनाव से पहले महिलाओं को 3,000 रुपये देने का वादा कर रही है, लेकिन उन्होंने पहले कभी ऐसा कोई लाभ नहीं दिया। उन्होंने लोगों को चेतावनी देते हुए कहा, 'बीजेपी से एक भी रुपया मत लेना। पहले वे खाते खुलवाएंगे और पैसे डालेंगे, फिर उसे 'काला धन' बताकर ईडी और सीबीआई भेज देंगे और आपको परेशान करेंगे। प्रधानमंत्री पर सवाल उठाते हुए ममता ने कहा, 'जो लोग बंगाल में नौकरी देने की बात कर रहे हैं, उन्होंने केंद्र में रहते हुए खाली पद क्यों नहीं भरे? रेलवे और सेना में भी कई पद खाली हैं। 20 लाख नौकरियों का वादा कहां गया? उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि जब राज्य सरकार भर्तियां करने की कोशिश करती है, तो उसे कोर्ट केस के जरिए रोका जाता है। बीजेपी नेताओं पर हमला बोलते हुए ममता ने कहा, 'ये मौसमी पक्षी हैं, जो चुनाव के समय बंगाल आते हैं, झूठे वादे करते हैं और चुनाव के बाद वापस चले जाते हैं। ममता बनर्जी ने दावा किया कि इस बार तृणमूल कांग्रेस 226 सीटें जीतकर फिर से सरकार बनाएगी। उन्होंने जनता से अपील की कि वे अपने वोट के जरिए बीजेपी को उसके झूठे वादों का जवाब दें।

सावधानः सोशल मीडिया का प्यार, ब्लैकमेलिंग और सात समंदर पार!

सूरत के युवक की घिनौनी करतूतः अमेरिकी युवती से शादी कर मांगे वीजा, न्यूड फोटो वायरल करने की दी धमकी

महानगर मेट्रो ब्यूरो

सूरत। डिजिटल इंडिया के इस दौर में सोशल मीडिया जहां लोगों को जोड़ रहा है, वहीं कुछ शातिर लोग इसे अपराध का हथियार बना रहे हैं। सूरत से एक ऐसा ही चौंकाने वाला मामला सामने आया है, जिसने 'इंटरनेशनल लव' और सोशल मीडिया पर भरोसा करने वालों के होश उड़ा दिए हैं। एक युवक ने पहले तो अमेरिका की एक युवती को प्रेम जाल में फंसाकर शादी की, और फिर असली रंग दिखाते हुए उसे अमेरिकी वीजा के लिए ब्लैकमेल करना शुरू कर दिया।

दोस्ती, प्यार और फिर धोखे का 'इंटरनेशनल' खेल

मिली जानकारी के अनुसार, सूरत के रहने वाले इस युवक का संपर्क सोशल मीडिया के जरिए अमेरिका की एक युवती से हुआ था। बातों का सिलसिला बढ़ा और दोस्ती प्यार में बदल गई। युवक ने बड़ी चालाकी से युवती को विश्वास में लिया और उससे शादी कर ली। लेकिन शादी के कुछ समय बाद ही उसका असली मकसद सामने आ गया। युवक का इरादा प्यार नहीं, बल्कि अमेरिका जाकर वहां की नागरिकता पाना था।

वीजा नहीं दिया तो 'न्यूड फोटो' कर दूंगा वायरल

युवती का आरोप है कि शादी के बाद युवक उस पर अमेरिका के वीजा दिलाने और वहां ले जाने के लिए दबाव बनाने लगा। जब युवती ने इसमें असमर्थता जताई, तो आरोपी ने अपना सबसे खतरनाक हथियार निकाला। उसने युवती की निजी और आपत्तिजनक तस्वीरों (नग्न फोटो) के जरिए उसे धमकाना शुरू कर दिया। आरोपी ने साफ़ तौर पर धमकी दी कि अगर उसे अमेरिका नहीं ले जाया गया या वीजा के दस्तावेज तैयार नहीं किए गए, तो वह उसकी तस्वीरें सोशल मीडिया पर वायरल कर देगा।

महानगर मेट्रो की सलाहः पहले पड़ताल, फिर प्यार

यह घटना उन हजारों युवाओं के लिए एक चेतावनी है जो सोशल मीडिया पर अनजान चेहरों के प्यार में पड़ जाते हैं।

1. अनजान फ्रेंड रिक्वेस्ट स्वीकार करने से बचें।
2. सोशल मीडिया पर कभी भी अपनी निजी तस्वीरें या वीडियो साझा न करें।
3. अगर कोई आपको ब्लैकमेल करे, तो डरे नहीं, तुरंत साइबर सेल या पुलिस की मदद लें।

फिलहाल इस मामले ने सूरत से लेकर अमेरिका तक हड़कंप मचा दिया है। पुलिस मामले की गंभीरता को देखते हुए कानूनी कार्रवाई में जुट गई है। सोशल मीडिया का यह 'मृगतृष्णा' किसी की भी जिंदगी बर्बाद कर सकता है, इसलिए सतर्क रहें और सुरक्षित रहें।

रणाघाट की जनसभा में अभिषेक बनर्जी का बीजेपी पर तीखा हमला

बीजेपी के विसर्जन की 'खूंटी पूजा' बंगाल में हो चुकी, जनता लाइन में लगकर देगी जवाब

महानगर मेट्रो ब्यूरो

कोलकाताः पश्चिम बंगाल में चुनावी सरगर्मी अपने चरम पर है। तृणमूल कांग्रेस के नेता लगातार जनसभाओं और रोड शो के जरिए चुनाव प्रचार में जुटे हैं। इसी कड़ी में रणाघाट (नदिया) में आयोजित जनसभा को संबोधित करते हुए Abhishek Banerjee ने बीजेपी पर जोरदार हमला बोला। उन्होंने कहा कि राज्य की जनता ने बीजेपी के 'विसर्जन' के लिए 'खूंटी पूजा' कर दी है और 23 व 29 अप्रैल को लोग लाइन में लगकर बीजेपी को करारा जवाब देंगे। अभिषेक बनर्जी ने Mamata Banerjee सरकार के विकास कार्यों का उल्लेख करते हुए कहा कि भले ही 2024 में जनता ने पूरा समर्थन नहीं दिया, लेकिन विकास कार्य और योजनाओं के लिए फंड का प्रवाह कभी नहीं रुका। उन्होंने केंद्र सरकार पर निशाना साधते हुए आरोप लगाया कि बीजेपी के अत्याचारों के कारण कई लोगों को परेशानियों का सामना करना पड़ा और कतारों में खड़े-खड़े लोगों की जान तक चली गई। अभिषेक ने कहा, 'अब वही जनता 23 और 29 अप्रैल को वोट की कतार में खड़े होकर बीजेपी को

जवाब देगी।' उन्होंने यह भी आश्वासन दिया कि यदि उनकी सरकार सत्ता में आती है तो एक महीने के भीतर उन लोगों को मतदान का अधिकार वापस दिलाया जाएगा, जिनसे यह अधिकार छीन लिया गया है। अंत में उन्होंने लोगों से अपील की कि वे तृणमूल कांग्रेस पर भरोसा बनाए रखें और बीजेपी उम्मीदवारों को इतनी करारी हार दें कि वे दोबारा राज्य में कदम रखने की हिम्मत न करें।

सियासी गलियारों में चर्चाः 'नोटों' के दम पर मिली टिकट, कार्यकर्ताओं में भारी रोष!

डबल इंजन, डबल मारः अबकी बार 'महंगी' पड़ी सरकार!

महानगर मेट्रो ब्यूरो

अहमदाबादः उत्तर गुजरात की राजनीति में इस समय भूचाल आया हुआ है। जैसे-जैसे चुनाव नजदीक आ रहे हैं, उम्मीदवारों के चयन को लेकर असंतोष की ज्वाला भड़क उठी है। ताजा मामला 'टिकट बंटवारे' को लेकर है, जहाँ आरोप लग रहे हैं कि योग्यता और निष्ठा को ताक पर रखकर 'पैसे के जोर' पर टिकट बांटी गई है।

निष्ठावानों की अनदेखीः क्या अब केवल धनबल ही पैमाना है?

क्षेत्र में चर्चा का बाजार गर्म है कि पार्टी के लिए सालों तक पसीना बहाने वाले पुरोहित परेश भाई जैसे समर्पित कार्यकर्ताओं को दरकिनार कर दिया गया है। जनता और समर्थकों का कहना है कि जिस व्यक्ति ने जमीनी स्तर पर काम किया, आज उसे ऐसे लोगों के लिए 'गाभा मारना' (जी-हजूरी या साफ-सफाई) पड़ रहा है, जिनका राजनीति में आधार सिर्फ उनकी मोटी जेब है।

सोशल मीडिया पर उमड़ा दर्द

'दया आती है ऐसी स्थिति पर '

सोशल मीडिया पर समर्थकों का गुस्सा सातवें आसमान पर है। एक वायरल पोस्ट में लिखा गया है:

'बेहद दुखद है कि राजनीति अब व्यापार बन गई है। पुरोहित परेश भाई जैसे ईमानदार व्यक्तित्व को आज इन 'धनपशुओं' के आगे झुकना पड़ रहा है। यह देखकर उन पर दया आती है और व्यवस्था पर गुस्सा। '

पार्टी के भीतर बगावत के सुर?

पैसे के दम पर टिकट हासिल करने वाले उम्मीदवारों के खिलाफ जमीनी कार्यकर्ताओं ने मोर्चा खोल दिया है। सूत्रों की मानें तो अगर आलाकमान ने जल्द ही स्थिति नहीं संभाली, तो चुनावी मैदान में 'नोटों की गड्डी' पर 'जनता का डंडा' भारी पड़ सकता है। पुरोहित परेश भाई के समर्थकों का साफ कहना है कि वे किसी भी कीमत पर स्वाभिमान से समझौता नहीं करेंगे।

महानगर मेट्रो का सवालः क्या लोकतंत्र में अब वोट की ताकत, नोट की ताकत के सामने घुटने टेक देगी? आखिर कब तक समर्पित कार्यकर्ताओं की बलि चढ़ाई जाएगी?

जिला प्रशासन की सख्ती से हुआ 4.50 लाख रूपए का किराया जमा

महानगर मेट्रो ब्यूरो

राजनांदगांव। दिग्विजय स्टेडियम समिति द्वारा स्टेडियम परिसर स्थित शॉपिंग कॉम्प्लेक्स में किराया बकाया रखने वाले दुकानदारों के विरूद्ध सख्त कार्रवाई की गई है। समिति द्वारा 10 दुकानों को नोटिस जारी किया गया था, जिनमें से 8 दुकानदारों ने कुल 454634 रूपए की बकाया राशि जमा कर दी है। दुकान क्रमांक सी-16 की आबंटित प्रज्ञा शर्मा पर 177180 रूपए तथा दुकान क्रमांक सी-21 की आबंटित श्रीमती विमला शर्मा पर 187320 रूपए का किराया विगत 33 माह से बकाया है। लंबे समय से किराया जमा नहीं करने पर कार्रवाई करते हुए दोनों दुकानों को सील कर दिया गया है। आगामी सप्ताह तक लंबित किराए का भुगतान नहीं करने पर संबंधित दुकानों का आबंटन निरस्त करने के साथ ही बकाया किराए की वसूली भू-राजस्व बकाया की तरह की जाएगी।

खेतों से केबल व पंप चोरी करने वाले आरोपी गिरफ्तार

महानगर मेट्रो ब्यूरो

राजनांदगांव। पुलिस चौकी सुरगी क्षेत्र के ग्राम खैरा में किसानों के खेतों से केबल तार, सबमर्सिबल पंप और झटका मशीन चोरी करने वाले आरोपियों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। जानकारी के अनुसार 28-29 नवंबर 2025 से 7 दिसंबर 2025 के बीच अज्ञात चोरों ने करीब 7 किसानों के खेतों से सबमर्सिबल पंप, लगभग 810 फीट केबल वायर और औजार चोरी कर लिए थे। मामले में पुलिस अधीक्षक अंकिता शर्मा के निर्देशन में टीम ने जांच करते हुए आरोपी पिंटू उर्फ दीनू मेश्राम (25) को हिरासत में लिया। पूछताछ में उसने अपने साथी राहुल बांसफोड़ उर्फ कोंदा व अन्य सहयोगियों तथा 3 नाबालिगों के साथ मिलकर चोरी करना स्वीकार किया। पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई कर उन्हें न्यायालय में पेश किया, जहां से उन्हें न्यायिक रिमांड पर जेल भेज दिया गया।

हिंदू हेल्पलाइन की कार्यकारिणी का विस्तार, नए पदाधिकारियों की नियुक्ति

महानगर मेट्रो ब्यूरो

राजनांदगांव। ब्यावर। अंतर्राष्ट्रीय हिंदू परिषद की इकाई हिंदू हेल्पलाइन द्वारा संगठन विस्तार के तहत ब्यावर नगर में नई कार्यकारिणी का गठन किया गया। इस अवसर पर विजयनगर रोड स्थित सोनी वाटिका में एक गरिमामयी बैठक आयोजित की गई, जिसमें बड़ी संख्या में कार्यकर्ताओं की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का शुभारंभ भगवान हनुमान जी के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। इसके पश्चात संगठन को मजबूत एवं प्रभावी बनाने के उद्देश्य से विभिन्न पदों पर नई नियुक्तियाँ घोषित की गईं।

जिला विधिक सलाहकार के रूप में एडवोकेट रामेंद्र शर्मा, कपिल जलवाल एवं एडवोकेट सुनील शर्मा को नियुक्त किया गया। वहीं नगर संगठन महामंत्री के पद पर मनीष व्यास को जिम्मेदारी सौंपी गई। इसी क्रम में अनिल गुप्ता को संगठन उपाध्यक्ष तथा विक्रम रल को द्वितीय उपाध्यक्ष बनाया गया। बंटी कुमावत को संगठन मंत्री और कमलेश रावत को सह संगठन मंत्री के पद पर नियुक्त किया गया। नगर कोषाध्यक्ष के रूप में सुनील जैन तथा हनुमान चालीसा केंद्र प्रभारी के रूप में ऋषिपाल सिंह को दायित्व सौंपा गया। नवनियुक्त पदाधिकारियों का दुपट्टा एवं माल्यार्पण कर अभिनंदन किया गया और उन्हें नई जिम्मेदारियों के लिए शुभकामनाएं दी गईं। इस मौके पर प्रांत अध्यक्ष मुकेश सोनी ने अपने संबोधन में कहा कि हिंदू हेल्पलाइन का मुख्य उद्देश्य आपातकालीन परिस्थितियों में हिंदू समाज को त्वरित सहायता उपलब्ध कराना है। उन्होंने सभी कार्यकर्ताओं से संगठन को और अधिक मजबूत एवं सक्रिय बनाने के लिए समर्पित भाव से कार्य करने का आह्वान किया। कार्यक्रम का समापन सामूहिक हनुमान चालीसा पाठ के साथ हुआ, जिससे वातावरण भक्तिमय हो गया। इस अवसर पर सत्यनारायण बालोदिया, लालचंद सांखला, तपेंद्र व्यास, पिंटू यादव, टीकम दास, हरिसिंह, नंदलाल कोठारी, विष्णु व्यास, राजेंद्र जैन, कैलाश सिंह, राजकुमार सहित अनेक कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

डॉ. अंबेडकर : संविधान के शिल्पकार, सामाजिक न्याय के महानायक

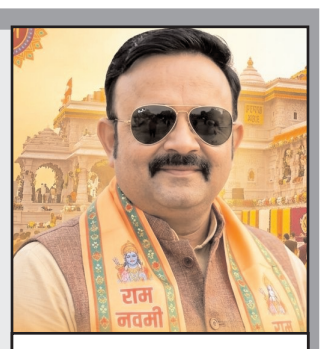

पवन माकन
ग्रुप एडिटर, महानगर मेट्रो

अम्बेडकर की सबसे बड़ी देन यह है कि उन्होंने समाज के वंचित और उपेक्षित वर्गों को आत्मसम्मान और अधिकारों के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा दी। उनका प्रसिद्ध नारा 'शिक्षित बनो, संगठित हो, संघर्ष करो' आज भी सामाजिक परिवर्तन का मूल मंत्र है। उनका जीवन इस सत्य का प्रमाण है कि वास्तविक परिवर्तन विचारों, शिक्षा और संवैधानिक मार्ग से ही संभव है। वे नारे नहीं बल्कि एक निरंतर प्रवाहित विचारधारा हैं; वे केवल व्यक्तित्व नहीं बल्कि एक ऐसी चेतना हैं, जो हर युग में समाज को दिशा देती है।

व्यक्ति नहीं, क्रांति का नाम है डॉ. भीमराव अंबेडकर...

भारत के सामाजिक, राजनीतिक और संवैधानिक इतिहास में डॉ. भीमराव अंबेडकर का व्यक्तित्व एक ऐसे विराट बौद्धिक और नैतिक शिखर के रूप में स्थापित है, जिसने भारतीय समाज की जड़ता को चुनौती देते हुए उसे समता, न्याय और बंधुत्व के आधुनिक मूल्यों से आलोकित किया। वे केवल एक व्यक्ति नहीं बल्कि एक जीवंत विचारधारा, एक जागृत चेतना और एक सतत सामाजिक क्रांति के पर्याय हैं। 14 अप्रैल 1891 को मध्य प्रदेश के महू में जन्मे अंबेडकर ने उस सामाजिक यथार्थ को स्वयं जिया, जिसमें जन्म के आधार पर मनुष्य की गरिमा निर्धारित की जाती थी। बाल्यावस्था में झेली गई उपेक्षा, भेदभाव और अपमान ने उनके भीतर निराशा नहीं, परिवर्तन की एक प्रखर और संगठित चेतना को जन्म दिया। उनके जीवन की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह थी कि उन्होंने अपने व्यक्तिगत संघर्षों को व्यापक सामाजिक संघर्ष में रूपांतरित किया। शिक्षा उनके लिए केवल ज्ञान अर्जन का माध्यम नहीं थी बल्कि सामाजिक मुक्ति का सबसे सशक्त औजार थी।

सीमित संसाधनों और विषम परिस्थितियों के बावजूद डॉ. अंबेडकर ने अपनी अदम्य इच्छाशक्ति के बल पर उच्च शिक्षा प्राप्त की। कोलंबिया विश्वविद्यालय और लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स जैसे विश्वविख्यात संस्थानों में अध्ययन करते हुए उन्होंने अर्थशास्त्र, राजनीति और विधि के क्षेत्र में गहन अध्ययन किया और अपने ज्ञान को सामाजिक परिवर्तन के लिए समर्पित किया। यह शिक्षा ही थी, जिसने उन्हें भारतीय समाज की संरचनात्मक विसंगतियों को समझने और उनके समाधान के लिए ठोस नीतिगत दृष्टिकोण विकसित करने में सक्षम बनाया। अंबेडकर का जीवन केवल संघर्षों का इतिहास नहीं बल्कि समाधान की एक सुविचारित और व्यवस्थित प्रक्रिया है। उन्होंने यह स्पष्ट रूप से समझ लिया था कि सामाजिक परिवर्तन केवल भावनात्मक आवेग से संभव नहीं है बल्कि इसके लिए वैचारिक स्पष्टता, संगठित प्रयास और संस्थागत ढांचे की आवश्यकता होती है। 1927 का महाड़ सत्याग्रह इसी सोच का परिणाम था, जिसमें उन्होंने दलितों के लिए सार्वजनिक जल स्रोतों तक पहुंच सुनिश्चित करने के अधिकार की मांग की। यह केवल पानी के अधिकार का प्रश्न नहीं था बल्कि सामाजिक समानता के मूल सिद्धांत की स्थापना का प्रयास था। इसी प्रकार 1930 का कालाराम मंदिर प्रवेश आंदोलन धार्मिक स्थलों में समान

अधिकार की मांग का प्रतीक था, जिसने यह स्पष्ट कर दिया कि अंबेडकर का संघर्ष केवल सामाजिक ही नहीं बल्कि सांस्कृतिक और धार्मिक समानता के लिए भी था।

महात्मा गांधी के साथ 1932 में हुआ पूना समझौता अंबेडकर की राजनीतिक दूरदर्शिता और सामाजिक उत्तरदायित्व का परिचायक था। उन्होंने अपने सिद्धांतों से समझौता किए बिना राष्ट्रीय एकता और सामाजिक समरसता को प्राथमिकता दी। यह समझौता इस बात का उदाहरण था कि वे केवल संघर्ष करने वाले नेता नहीं थे बल्कि समाधान खोजने वाले युगद्रष्टा भी थे। भारतीय संविधान के निर्माण में अंबेडकर की भूमिका उन्हें इतिहास में एक अद्वितीय स्थान प्रदान करती है। संविधान प्रारूप समिति के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने एक ऐसे लोकतांत्रिक ढांचे की रचना की, जिसमें प्रत्येक नागरिक को समान अधिकार, स्वतंत्रता और न्याय की गारंटी मिले। उनके लिए संविधान केवल एक विधिक दस्तावेज नहीं था बल्कि सामाजिक परिवर्तन का एक सशक्त साधन था। उन्होंने संविधान में समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व के सिद्धांतों को इस प्रकार समाहित किया कि यह भारतीय समाज की विविधता के बीच एकता को बनाए रखने का माध्यम बन सके।

डॉ. अंबेडकर ने यह स्पष्ट चेतावनी दी थी कि यदि सामाजिक लोकतंत्र स्थापित नहीं हुआ तो राजनीतिक लोकतंत्र भी स्थायी नहीं रह पाएगा। उनका यह दृष्टिकोण आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना उस समय था। उन्होंने अनुसूचित जातियों और जनजातियों के लिए आरक्षण की व्यवस्था, मौलिक अधिकारों की स्थापना और अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा के माध्यम से एक समावेशी समाज की नींव रखी। अंबेडकर की क्रांतिकारी चेतना का एक महत्वपूर्ण आयाम उनका धार्मिक दृष्टिकोण भी था। उन्होंने धर्म को व्यक्ति की गरिमा और सामाजिक समानता के संदर्भ में देखा। 14 अक्टूबर 1956 को नागपुर में उन्होंने बौद्ध धर्म ग्रहण किया, जो उनके जीवन का एक ऐतिहासिक और प्रतीकात्मक निर्णय था। यह केवल धर्म परिवर्तन नहीं था बल्कि सामाजिक अन्याय के विरुद्ध एक सशक्त वैचारिक घोषणा थी। बौद्ध धर्म के माध्यम से उन्होंने करुणा, समता और मानवता के मूल्यों को पुनर्स्थापित करने का प्रयास किया।

डॉ. अम्बेडकर के जीवन का एक और महत्वपूर्ण पहलू उनका बौद्धिक और वैचारिक संघर्ष था। उन्होंने लेखन और भाषणों के माध्यम से समाज की जटिल समस्याओं का विश्लेषण किया और उनके समाधान प्रस्तुत किए। उनकी कुछ प्रसिद्ध कृतियां आज भी सामाजिक चिंतन का महत्वपूर्ण आधार हैं। उन्होंने तर्क, विज्ञान और विवेक को अपने विचारों का आधार बनाया और अंधविश्वास, रूढ़ियों तथा सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध आवाज उठाई। 1951 में हिंदू कोड बिल के पारित न होने पर उनका मंत्रिमंडल से इस्तीफा इस बात का प्रमाण है कि उनके लिए सत्ता से अधिक महत्वपूर्ण सिद्धांत थे। यह घटना उनके चरित्र की दृढ़ता और नैतिक प्रतिबद्धता को दशार्ती है। उन्होंने महिलाओं के अधिकारों के लिए जो संघर्ष किया, वह उस समय के सामाजिक परिप्रेक्ष्य में अत्यंत क्रांतिकारी था।

आज, जब भारत सामाजिक और आर्थिक विकास के नए आयाम स्थापित कर रहा है, डॉ. अंबेडकर के विचार और भी अधिक प्रासंगिक हो उठते हैं। जातीय भेदभाव, लैंगिक असमानता और सामाजिक विषमता जैसी चुनौतियां यह संकेत देती हैं कि उनकी आरंभ की गई सामाजिक क्रांति अभी अधूरी है। उनके विचार हमें यह सिखाते हैं कि लोकतंत्र केवल चुनावों तक सीमित नहीं है बल्कि यह सामाजिक न्याय और समान अवसरों की सतत प्रक्रिया है। अंबेडकर का मानना था कि किसी भी समाज की प्रगति का आकलन वहां की महिलाओं की स्थिति से किया जाना चाहिए। यह विचार आज भी लैंगिक समानता के संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने श्रमिकों के अधिकारों के लिए भी महत्वपूर्ण योगदान दिया और 8 घंटे के कार्यदिवस जैसी अवधारणाओं को बढ़ावा दिया।

अम्बेडकर की सबसे बड़ी देन यह है कि उन्होंने समाज के वंचित और उपेक्षित वर्गों को आत्मसम्मान और अधिकारों के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा दी। उनका प्रसिद्ध नारा 'शिक्षित बनो, संगठित हो, संघर्ष करो' आज भी सामाजिक परिवर्तन का मूल मंत्र है। उनका जीवन इस सत्य का प्रमाण है कि वास्तविक परिवर्तन विचारों, शिक्षा और संवैधानिक मार्ग से ही संभव है। वे नारे नहीं बल्कि एक निरंतर प्रवाहित विचारधारा हैं; वे केवल व्यक्तित्व नहीं बल्कि एक ऐसी चेतना हैं, जो हर युग में समाज को दिशा देती है। वास्तव में अंबेडकर एक नाम नहीं बल्कि वह क्रांति हैं, जो तब तक जीवित रहेगी, जब तक समाज का अंतिम व्यक्ति न्याय, सम्मान और समान अवसर प्राप्त नहीं कर लेता। उनकी विरासत हमें यह स्मरण कराती है कि एक सशक्त और समतामूलक भारत का निर्माण तभी संभव है, जब हम उनके विचारों को केवल स्मरण न करें बल्कि उन्हें अपने आचरण और नीतियों में भी उतारें।

संपादकीय

थमी सुरों की आशा

हृदयाघात के चलते करोड़ों संगीत प्रेमियों को भले ही आशा भोसले अलविदा कह गई हों लेकिन विविधता लिए सुरीले गीत सदियों तक संगीत प्रेमियों के दिल-दिमाग में गूंजते रहेंगे। 8 सितंबर 1933 को जन्मीं आशा भोसले नब्बे साल तक लगातार गाती रहीं। आशा के सुरीले गीतों ने देश-दुनिया के करोड़ों दिलों को छुआ। उनकी कर्णप्रिय धुनों वाले गीतों में जीवन का एक उल्लास रहा है। तभी नब्बेवें जन्मदिन पर लगातार तीन घंटे संगीत कार्यक्रम प्रस्तुत करके वे नया रिकॉर्ड दर्ज कर गईं। जीवनपर्यंत गाने का संकल्प करने वाली आशा ने हिंदी समेत तमाम भारतीय भाषाओं के गीत गाए। व्यक्तित्व की जीवटता उनके गीतों में भी शिद्दत से मौजूद रही। व्यवहार में मुखरता, गीतों में मस्ती और बेबाक हाजिरजवाबी उनका विशिष्ट गुण था। एक संगीत साधक परिवार में जन्मी आशा ने छोटी उम्र से गाना शुरू किया और अपने गायन में विविधता को लगातार विस्तार दिया। यह विश्वास कर पाना कठिन है कि एक गायिका क्लासिक गीतों से लेकर पॉप,जैज,गजल तथा कव्वाली गाने में भी पारंगत हो सकती है। निस्संदेह, बॉलीवुड व गायकी की दुनिया, उनकी जिंदादिली व गायकी के उल्लासमय अंदाज को सदैव याद रखेगी। अच्छे गीतकार, सधे संगीतकारों के गीत को अपने खास अंदाज से वे बेहतरीन व कालजयी बना देती थीं। इस तरह मोहम्मद रफी, मुकेश व किशोर कुमार के क्रम में आशाजी का जाना भारतीय गीतमाला के एक युग का अवसान भी है। लेकिन इस महान प्लेबैक सिंगर की आवाज सालों-साल तक भारतीय परिदृश्य में गूंजती रहेगी। आशा के गीतों की विशिष्टता यह भी है कि पीढ़ियों के बदलाव के बीच भी उनकी जवां आवाज हमेशा पसंद की जाती रही। लेकिन एक हकीकत यह भी है कि हमने उनके चुलबुले गीतों व शोखी के अंदाज को तो देखा, लेकिन उनके जीवन के विकट संघर्ष को नजरअंदाज किया। उन्होंने अपने संगीत की विरासत वाले परिवार में लता मंगेशकर जैसे विराट वट वृक्ष तले अपना विकास किया। सफलता के पहले पायदान पर पहुंचने का उनका सपना प्रतिभा के बावजूद सफल न हो सका। लता के वर्चस्व के चलते कई प्रतिभाएं समय से पहले ही गुमनामी की दुनिया में चली गईं, लेकिन इसके बावजूद आशा ने अपनी एक अलग पहचान बनाये रखी। उसमें उनकी प्रतिभा के साथ जीवटता भी शामिल रही। उन्होंने पिता दीनानाथ मंगेशकर की संगीत विरासत को समृद्ध ही किया।

चिंतन-मनन

अमिट है कर्म का फल

यदि कर्म का फल तुरंत नहीं मिलता है तो यह नहीं समझना चाहिए कि उसके भले-बुरे परिणाम से हम सदा के लिए बच गये। कर्मफल ऐसा अमिट तथ्य है जो आज नहीं तो कल भुगतना ही पड़ेगा। कभी-कभी परिणाम में देर इसलिए होती है क्योंकि ईश्वर मानवीय बुद्धि की परीक्षा चाहता है कि व्यक्ति कर्त्तव्य धर्म समझने और निष्ठापूर्वक पालन करने लायक विवेक बुद्धि संचय कर सका है या नहीं। जो दंड भय बिना सदा सत्कर्मो तक सीमित रहता है, समझना चाहिए उसने सज्जनता की परीक्षा पास कर पशुता से देवत्व की ओर बढ़ने का शुभारंभ कर दिया। दंडभय से तो विवेक रहित पशु को भी अवांछनीय मार्ग पर चलने से रोका जा सकता है। मानवीय अंतःकरण की विकसित चेतना तभी अनुभव की जा सकेगी, जब वह कुमार्ग पर चलने से रोक सन्मार्ग के लिए प्रेरणा प्रदान करे। यदि हर काम का तुरंत दंड मिलता और ईश्वर बलपूर्वक किसी मार्ग पर चलने के लिए विवश करता तो फिर मनुष्य भी पशु-श्रेणी में होता और उसकी स्वतंत्र आत्म चेतना विकसित हुई या नहीं, इसका पता नहीं चलता। ईश्वर या खुदा ने मनुष्य को भले-बुरे कर्म की स्वतंत्रता इसीलिए दी है कि वह विवेक विकसित कर भले-बुरे का अंतर सीख पथ निर्माण में समर्थ हो। विवेक व कर्त्तव्य परायणता दो ही कसौटी हैं मनुष्यता के आत्मिक स्तर विकसित होने की। इस विकास पर ही जीवनोद्देश्य की पूर्ति और मनुष्य जन्म की सफलता निहित है। यदि ईश्वर को प्रतीत होता कि बुद्धियुक्त मनुष्य पशुओं जैसा ही मूर्ख रहेगा तो शायद उसने उसके लिए भी दंड की व्यवस्था सोची होती। झूठ बोलते ही जीभ में छाले पड़ने, चोरी करते ही हाथ में फोड़ा होने जैसे दंड की तुरत-फुरत व्यवस्था होती तो किसी के लिए भी दुष्कर्म करना संभव न होता लेकिन ऐसे में मनुष्य की स्वतंत्र चेतना, विवेक बुद्धि व आंतरिक महानता विकसित होने का अवसर ही न आता और आत्म विकास के बिना पूर्णता का लक्ष्य पाने की दिशा में प्रगति न होती। अतः परमेर के लिए उचित था कि मनुष्य को अपना सबसे बुद्धिमान और जिम्मेदार बेटा समझ उसे कर्म की स्वतंत्रता प्रदान करे और देखे कि वह मनुष्यता का उत्तरदायित्व संभालने में समर्थ है कि नहीं? वास्तव में परीक्षा के बिना वास्तविकता का पता कैसे चलता और सर्वश्रेष्ठ रचना मनुष्य में कितने श्रम की सार्थकता हुई, यह कैसे अनुभव होता!

नारी शक्ति वंदन शंका व संग्राम

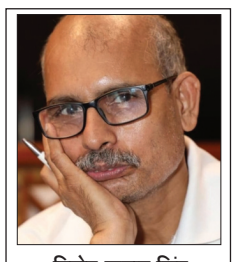

विनोद कुमार सिंह

संसद का विशेष सत्र का ऐसे समय बुलाया गया है जब 5 राज्यों के विधानसभा चुनाव हो रही है।

विश्व का सबसे बड़े लोकतंत्र भारत वर्तमान परिपेक्ष में एक ऐसे संक्रमण काल से गुजर रहा है,जहाँ सामाजिक परिवर्तन और राजनीतिक रणनीति एक-दूसरे में गुंथकर नई दिशा तय कर रहे हैं। 'नारी शक्ति वंदन' का उभरता विमर्श,संसद का तीन दिवसीय विशेष सत्र और इसके इर्द-गिर्द तेज होती राजनीतिक हलचल इस बात का संकेत है कि देश की आधी आबादी अब केवल चर्चा का विषय नहीं,बल्कि सत्ता-समीकरण का केंद्र बन चुकी है। यह वह काल है, जहाँ नारी शक्ति का प्रश्न भावनात्मक अपील से आगे बढ़कर ठोस राजनीतिक और संवैधानिक निर्णयों की कसौटी पर खड़ा है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा ऐतिहासिक विज्ञान भवन में दिए गए वक्तव्यों ने इस बहस को नई गति दी है।केन्द्र सरकार इसे ऐतिहासिक निर्णय की दिशा में निर्णायक कदम बता रही है,वही कांग्रेस व विपक्षी राजनीतिक दल इसे समय-प्रबंधन और राजनीतिक लाभ के नजरिये से देख रहा है। परिणाम स्वरूप यहीं से सत्ता और विपक्ष के बीच वह टकराव स्पष्ट रूप से उभरता है,जो भारतीय लोकतंत्र की पहचान भी और उसकी शक्ति भी है।भारतीय जनता पार्टी और राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन इस पूरे विमर्श को महिला सशक्तिकरण की दीर्घकालिक नीति का स्वाभाविक विस्तार मानते हैं। उनका तर्क है कि पिछले वर्षों में महिलाओं को आर्थिक,सामाजिक और स्वास्थ्य के स्तर पर मजबूत करने के लिए जो योजनाएं लागू की गईं,वे अब राजनीतिक प्रतिनिधित्व के रूप में परिणत होने जा रही हैं।जनधन योजना के माध्यम से बैंकिंग पहुँच, उज्ज्वला योजना के तहत गैस कनेक्शन,स्वयं सहायता समूहों के जरिए आर्थिक सशक्तिकरण और 'लखपति दीदी' जैसी पहलों को इस परिवर्तन की पृष्ठभूमि के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है।उनका यह तर्क दिया जा रहा है कि जब आधार तैयार हो चुका है,तब राजनीतिक भागीदारी को बढ़ाना स्वाभाविक अगला कदम है।वही इसके विपरीत कांग्रेस और अन्य विपक्षी दल इस पूरी प्रक्रिया को अधूरा और प्रश्नों से घिरा हुआ मानते हैं।उनका कहना है कि यदि महिलाओं को वास्तविक सशक्तिकरण देना है,तो आरक्षण के भीतर भी सामाजिक न्याय सुनिश्चित किया जाना चाहिए,ताकि पिछड़े वर्गों,दलितों और आदिवासी समुदायों की महिलाओं को भी समान अवसर मिल सके।इसके साथ ही वे इस बात पर भी सवाल उठाते हैं कि क्रियान्वयन को भविष्य की समयसीमा से क्यों जोड़ा गया है।विपक्ष के अनुसार, यह देरी कहीं न कहीं इस मुद्दे को चुनावी लाभ के लिए उपयोग करने की रणनीति को दशार्ती है।यह टकराव केवल विधायी प्रक्रिया का नहीं,बल्कि राजनीतिक नैरेटिव का संघर्ष बन चुका है। एक ओर सत्ता पक्ष इसे उपलब्धियों की श्रृंखला के रूप में प्रस्तुत कर रहा है,तो दूसरी ओर विपक्ष इसे अधूरी प्रतिबद्धता और राजनीतिक गणित का परिणाम बताने में लगा है।इस पूरे परिदृश्य में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि दोनों पक्ष 'नारी शक्ति' को अपने-अपने तरीके से केंद्र में रख रहे हैं,जो इस बात का प्रमाण है कि महिलाओं का मुद्दा अब भारतीय राजनीति में निर्णायक बन चुका है।अगर हम इस पहलू के संभावित लाभों की चर्चा करें तो यह स्पष्ट है कि महिलाओं की बढ़ती भागीदारी से लोकतंत्र अधिक संतुलित और समावेशी बन सकता है।पंचायत स्तर पर महिलाओं की सक्रिय भूमिका पहले ही यह साबित कर चुकी है कि जब उन्हें अवसर मिलता है,तो वे विकास की प्राथमिकताओं को नई दिशा देती हैं। जल, स्वास्थ्य, शिक्षा और पोषण जैसे विषयों पर उनका दृष्टिकोण अधिक संवेदनशील और व्यावहारिक होता है।यदि यही अनुभव संसद और विधानसभाओं तक पहुंचता है,तो नीतियों में व्यापक बदलाव संभव है। इसके साथ ही चुनावी राजनीति में महिलाओं की भूमिका भी तेजी से बदल रही है।वे अब केवल मतदाता नहीं,बल्कि निर्णायक मतदाता के रूप में उभर रही हैं। पिछले कुछ चुनावों में यह देखा गया है कि महिला मतदाताओं की भागीदारी और उनके मतदान के पैटर्न ने कई राज्यों में परिणामों को प्रभावित किया है।यही कारण है कि सभी राजनीतिक दल अब इस वर्ग को अपने पक्ष में करने के लिए विशेष रणनीतियां बना रहे हैं।

हालांकि,इस पूरी प्रक्रिया के सामने कई चुनौतियां भी हैं।सबसे बड़ी चुनौती है क्रियान्वयन की विश्वसनीयता।यदि यह पहल केवल घोषणा तक सीमित रह जाती है या इसमें अनावश्यक देरी होती है,तो इसका प्रभाव कमजोर पड़ सकता है। इसके अलावा,यह भी सुनिश्चित करना आवश्यक होगा कि महिलाओं को केवल प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व न मिले,बल्कि वे वास्तविक निर्णय प्रक्रिया का हिस्सा बनें। पंचायत स्तर पर कई जगहों पर देखी गई 'प्रॉक्सी राजनीति' की प्रवृत्ति को भी गंभीरता से रोकना होगा,अन्यथा इस पहल का मूल उद्देश्य प्रभावित हो सकता है। आने वाले विधानसभा चुनाव इस पूरे विमर्श की वास्तविक परीक्षा साबित होंगे।भाजपा और एनडीए इस मुद्दे को अपनी उपलब्धियों के रूप में प्रस्तुत करते हुए महिला मतदाताओं के बीच अपनी पकड़ मजबूत करने का प्रयास करेंगे।वहीं कांग्रेस और विपक्ष इस मुद्दे को अधूरे वादे और सामाजिक न्याय के अधूरे पहलू के रूप में उठाकर सरकार को घेरने की कोशिश करेंगे।इस राजनीतिक प्रतिस्पर्धा के बीच महिला मतदाता ही वह निर्णायक शक्ति होंगी,जो इस बहस को वास्तविक

परिणाम में बदलेंगी। राजनीतिक दृष्टि से यह पहल दोनों पक्षों के लिए अवसर और जोखिम दोनों लेकर आई है।यदि सरकार इसे प्रभावी ढंग से लागू करती है और महिलाओं के बीच विश्वास कायम रखती है,तो यह उसे दीर्घकालिक लाभ दे सकता है।वहीं यदि विपक्ष इस मुद्दे को सामाजिक न्याय और वास्तविक सशक्तिकरण के व्यापक संदर्भ में प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करता है,तो वह भी राजनीतिक रूप से लाभान्वित हो सकता है।अंततः'नारी शक्ति वंदन' केवल एक विधायी पहल नहीं, बल्कि भारतीय समाज और राजनीति के गहरे परिवर्तन का संकेत है।यह उस दिशा में एक कदम है,जहाँ महिलाएं केवल भागीदार नहीं,बल्कि नीति-निमार्ता बनेंगी।संसद का विशेष सत्र, राजनीतिक दलों के बीच टकराव और चुनावी रणनीतियाँ का हिस्सा हो । कुल मिलाकर एक ऐसे भविष्य की रूपरेखा तैयार कर रहे हैं,जिसमें आधी आबादी की आवाज न केवल सुनी जाएगी, बल्कि वही देश की दिशा भी तय करेगी।भारत का लोकतंत्र तभी पूर्ण और सशक्त माना जाएगा,जब उसकी आधी आबादी निर्णय प्रक्रिया में समान रूप से भागीदार होगी।वर्तमान परिदृश्य इसी दिशा में बढ़ता हुआ एक महत्वपूर्ण अध्याय है,जो भविष्य में देश की राजनीति और समाज दोनों को गहराई से प्रभावित करेगा।

टॉक्सिक लोगः मेंटल शांति के चोरों से कैसे बचें ?

मेंटल हेल्थ बनाए रखने के लिए 'सोशल डाइट' जरूरी, टॉक्सिक लोगों से दूरी बनाकर ही बचाई जा सकती है आपकी एनर्जी और शांति

महानगर मेट्रो

आजकल हम फिजिकल हेल्थ के लिए डाइटिंग करते हैं, लेकिन मेंटल हेल्थ के लिए 'सोशल डाइट' को भूल जाते हैं। हमारी ज़िंदगी में कुछ ऐसे लोग होते हैं जो एनर्जी देने के बजाय खुद सोख लेते हैं। ऐसे लोगों को साइकोलॉजी की भाषा में 'टॉक्सिक' (ज़हरीले) लोग कहा जाता है।

टॉक्सिक इंसान को कैसे पहचानें?

किसी ऐसे व्यक्ति से बात करने के बाद जिसके साथ आप रिलैक्स महसूस करने के बजाय थका हुआ, स्ट्रेस्ड या गिल्टी महसूस करते हैं, समझ लें कि वह इंसान आपके लिए टॉक्सिक है। वे हमेशा अपने बारे में सोचेंगे, आपकी सफलता में कमियां निकालेंगे और लगातार नेगेटिविटी फैलाएंगे।

ऐसे लोगों से बचने के अचूक हथियार

1. इमोशनल बाउंड्री बनाएं: हर किसी को अपने मन तक पहुंचने का रास्ता न दें। जैसे घर के दरवाज़े पर एक स्क्रीन होती है ताकि कचरा अंदर न आए, वैसे ही मन के दरवाज़े पर भी एक फिल्टर रखें। उनकी बातों को पर्सनली लेना बंद करें।

2. 'रिएक्ट' न करें, 'रिस्पॉन्ड' करें: टॉक्सिक इंसान का खाना आपका रिएक्शन होता है। अगर आप गुस्सा करेंगे, तो वे जीत जाएंगे। उनकी बातों के सामने चुप रहना ही सबसे तीखा जवाब है। शांत समंदर में कितना भी कचरा फेंक दो, वह बेचैन नहीं होगा।

3. दूरी का फायदा: ज़रूरी नहीं कि हर रिश्ते को ज़िंदगी भर घसीटा जाए। अगर कोई रिश्ता आपकी तरक्की में रुकावट बन रहा है, तो आपको उससे 'शानदार' तरीके से बाहर निकल जाना चाहिए। चाहे सोशल मीडिया हो या असल ज़िंदगी, फालतू की नेगेटिविटी से दूर रहें।

4. सेल्फ-डेवलपमेंट पर फोकस करें: अपना समय और एनर्जी अपने गोल, लिखने और क्रिएटिव कामों में लगाएं। जब आप खुद से प्यार करने लगेंगे, तो दूसरों की नेगेटिविटी आप पर असर डालना बंद कर देगी। ध्यान रखें कि किसी और के गंदे पैर आपके दिमाग से न गुज़रें, क्योंकि आपका दिमाग किसी और का कचरादान नहीं है। मान लीजिए आपने कोई नया काम शुरू किया है और कोई कहता रहता है, 'यह नहीं चलेगा, तुम यह नहीं कर सकते।' बहस करने के बजाय, बस कहें, 'आपकी राय के लिए धन्यवाद, लेकिन मुझे अपने फैसले पर भरोसा है।' यह कहना और बातचीत खत्म करना आपकी मेंटल ताकत की निशानी है।

याद रखें, आप दुनिया में हर किसी को खुश नहीं कर सकते। आपको अपनी ज़िंदगी से उन लोगों को हटाने का पूरा हक़ है जो आपकी शांति छीनते हैं। आपकी एनर्जी कीमती है, इसका समझदारी से इस्तेमाल करें।

– दर्शना पटेल
(नेशनल मेडलिस्ट)

‘9667173333 पर मिस्ड कॉल’, यूं कर सकते हैं नारी शक्ति वंदन अधिनियम को सपोर्ट

महानगर मेट्रो ब्यूरो

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित नेशनल लेवल ‘ नारी शक्ति वंदन सम्मेलन’ में भाग लिया, जहां देशभर से आई महिलाओं और प्रतिनिधियों की मौजूदगी रहीं। इस कार्यक्रम का उद्देश्य महिलाओं के सशक्तिकरण और उनके अधिकारों को बढ़ावा देना था।इस मौके पर दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने अपने संबोधन में प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व की सराहना करते हुए कहा कि संसद में पेश किए गए इस विधेयक पर पूरे देश की महिलाएं उनके साथ खड़ी हैं। रेखा गुप्ता ने लोगों से अपील की है वह नारी शक्ति वंदन अधिनियम का समर्थन करने के लिए 9667173333 नंबर पर मिस कॉल करें।

रेखा गुप्ता ने कहा कि देश की बहनों की ओर से वह प्रधानमंत्री और उनकी सरकार को तहे दिल से धन्यवाद देती हैं। अपने भाषण के अंत में उन्होंने दो पंक्तियां समर्पित करते हुए कहा, ‘कुछ लोग आए, वक्त के सांचे में ढल गए और कुछ लोग आए, वक्त के सांचे बदल गए।’नारी शक्ति वंदन अधिनियम हमारी मातृ शक्ति के सालों के संघर्ष और साधना के लोकतांत्रिक सिद्धि का महापर्व है। यह महिलाओं के सामर्थ्य आत्म सम्मान और लोकतांत्रिक भागीदारी को सुनिश्चित करने वाला युगांतकारी परिवर्तन है। केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री अन्नपूर्णा देवी

’हम बेटी बढ़ाओं के युग में प्रवेश कर चुके हैं’

दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा, ‘भारत की महिलाओं ने अपने ही देश में सम्मान और समान अधिकार पाने के लिए संघर्ष की एक लंबी यात्रा देखी है। भ्रूण हत्या, सती प्रथा, बाल विवाह, अशिक्षा, विधवा होने पर दोबारा विवाह की अनुमति से लेकर पर्दा प्रथा में किस प्रकार से भारत की बेटियों ने बेटी बचाव से लेकर ये सफर शुरू किया और अगला युग बेटियों को पढ़ाने का आया हम बेटी पढ़ाओं के युग में गए। आज हम प्रधानमंत्री के नेतृत्व में बेटी बढ़ाओं के युग में प्रवेश कर चुके हैं।’

नारी शक्ति वंदन अधिनियम

नारी शक्ति वंदन अधिनियम (महिला आरक्षण विधेयक) लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं के लिए 33' (एक-तिहाई) सीटें आरक्षित करता है।
2023 में पारित यह 128वां संवैधानिक संशोधन (अब 106वां कानून) महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी बढ़ाने और उन्हें नीति निर्माण में सीधे भागीदार बनाने का लक्ष्य रखता है।
यह कानून लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं के लिए 33' सीटें आरक्षित करता है।
इसका मकसद राजनीति में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ाना और उन्हें ‘लाभार्थी’ से ‘निर्णायक’ भूमिका में लाना है।
इसे 2029 के आम चुनावों से पहले लागू करने की प्रक्रिया चल रही है, यह आरक्षण 15 वर्षों के लिए प्रभावी रहेगा।

85 मिनट में दिल्ली पहुंचा धड़कता दिल... युवक को मिली जिंदगी

महानगर मेट्रो ब्यूरो

दिल्ली। कभी-कभी सड़कें सिर्फ रास्ता नहीं होतीं, बल्कि जिंदगी और मौत के बीच की सबसे तेज दौड़ बन जाती हैं. 9 अप्रैल की दोपहर भी कुछ ऐसी ही थी. हरियाणा के रोहतक से राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली तक एक डोनर हार्ट को महज 85 मिनट में ग्रीन कॉरिडोर से पहुंचाया गया. यह स्पेशल कॉरिडोर 9 अप्रैल को दिल्ली पुलिस और रोहतक पुलिस के सहयोग से बना था. यह दूरी करीब 98 किलोमीटर की थी.यह कहानी सिर्फ एक खबर नहीं, बल्कि समय के खिलाफ दौड़ती जिंदगी की एक सांस रोक देने वाली यात्रा है... जहां हर सेकंड की कीमत किसी की धड़कन तय कर रही थी. 9 अप्रैल की दोपहर हरियाणा के रोहतक स्थित पीजीआईएमएस में 37 वर्षीय व्यक्ति ब्रेन हेमरेज के बाद भर्ती हुआ था. उसने होश खो दिया था. डॉक्टरों ने तमाम कोशिशों के बाद उसे ब्रेन डेड घोषित कर दिया था. उसी दुख की घड़ी में एक उम्मीद जन्म ले रही थी.एक ऐसा निर्णय, जो कई जिंदगियों को बचाने वाला था. परिवार ने गहरा दर्द सहते हुए ऑर्गन डोनेट के लिए सहमति दे दी. यह फैसला आसान नहीं था, लेकिन इंसानियत की मिसाल बन गया. कुछ ही घंटों में अस्पताल में सर्जिकल टीम एक्टिव हो गई. शरीर से अंगों को निकालने का काम शुरू हुआ- हार्ट, फेफड़े, लीवर, किडनी और कॉर्निया... हर ऑर्गन किसी न किसी अजनबी के लिए जीवन की नई किरण बनने वाला था.दिल्ली के ओखला स्थित फोर्टिस एस्कॉर्ट्स हार्ट इंस्टीट्यूट में एक 26 साल का युवक भर्ती था, उसे गंभीर डाइलेटेड कार्डियोमायोपैथी थी- एक ऐसी बीमारी जिसमें दिल धीरे-धीरे कमजोर होकर शरीर का साथ छोड़ देता है. डॉक्टरों ने पहले ही बता दिया था कि बिना ट्रांसप्लांट के जीवन ज्यादा लंबा नहीं है. उस दिन जैसे ही उसे मैचिंग हार्ट मिलने की सूचना मिली, अस्पताल में हलचल तेज हो गई. दिल को रोहतक से दिल्ली तक पहुंचाने के लिए ग्रीन कॉरिडोर बनाया गया. दिल्ली पुलिस और रोहतक पुलिस ने मिलकर सड़कों को इस तरह खाली कराया जैसे समय खुद रास्ता दे रहा हो. एम्बुलेंस में सुरक्षित रखा गया वह दिल, जो अभी कुछ समय पहले तक किसी और शरीर में धड़क रहा था, अब एक नए जीवन की ओर बढ़ रहा था.सायरन की आवाज के साथ एम्बुलेंस ने 2:50 बजे रोहतक से सफर शुरू किया. हर चौराहा पहले से खाली था, हर ट्रैफिक सिग्नल हरा. यह सिर्फ एक यात्रा नहीं थी, यह एक मानवीय कोशिश थी- जहां सिस्टम, डॉक्टर, पुलिस और आम लोग सभी एक साथ थे. 98 किलोमीटर की यह दूरी सामान्य दिनों में डेढ़ से दो घंटे लेती है,

Asha Bhosle को हंसते हुए श्रद्धांजलि! आगरा की मेयर हेमलता दिवाकर का VIDEO वायरल; सिंगर का नाम भी गलत लिया

महानगर मेट्रो ब्यूरो

आगरा। आगरा का एक वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है, जिसमें शहर की मेयर हेमलता दिवाकर चर्चा में आ गई हैं. वीडियो में वह फेमस सिंगर आशा भोसले को श्रद्धांजलि देती नजर आ रही हैं, लेकिन इस दौरान उनसे कई तथ्यात्मक गलतियां हो गईं. एक जगह तो वह मुस्कुराते हुए भी नजर आ रही हैं. वीडियो वायरल होने के बाद उनकी किरकिरी हो रही है. यह वाकया तब हुआ जब मेयर कैबिनेट मंत्री बेबी रानी मौर्य की अनुपस्थिति में मीडिया से मुखातिब हो रही थीं.दरअसल, बीते दिन भाजपा के ब्रज प्रांत कार्यालय में ‘नारी शक्ति वंदन अधिनियम’ को लेकर एक कार्यक्रम आयोजित किया गया था. इसी कार्यक्रम के दौरान मेयर हेमलता दिवाकर ने मीडिया से बातचीत करते हुए आशा भोसले को लेकर टिप्पणी की.करीब 47 सेकेंड के वायरल वीडियो में देखा जा सकता है कि मेयर पहले अपने साथियों से हंसते हुए पूछती हैं कि आशा भोसले सिंगर थीं या नहीं. पुष्टि मिलने के बाद वह कहती हैं कि उन्हें ठीक से याद नहीं था. इसके बाद उन्होंने श्रद्धांजलि देते हुए उनका नाम भी गलत उच्चारित किया और ‘आशा घोसले’ कह दिया.उन्होंने कहा कि ‘श्रीमती आशा घोसले आज गोलोकवासी हो गई हैं संगीत जगत के लिए ये बड़ी क्षति है.’ इसके साथ ही मेयर ने आगरावासियों और भाजपा की ओर से भी श्रद्धांजलि अर्पित की.इस बयान का वीडियो सामने आने के बाद सोशल मीडिया पर लोगों की तीखी प्रतिक्रियाएं देखने को मिल रही हैं. कई यूजर्स मेयर की जानकारी को लेकर सवाल उठा रहे हैं, जबकि कुछ लोग इस पर तंज कस रहे हैं.

नाबालिग साली को भगाकर ले जा रहा था जीजा, बाइक की टक्कर, 3 की मौत

कानपुर के कोरवा गांव के पास एक खौफनाक वारदात सामने आई है. अपनी नाबालिग साढ़ु

महानगर मेट्रो ब्यूरो

कानपुर; कानपुर के बिंदकी थाना क्षेत्र में बांदा-कानपुर रोड पर रविवार रात दीपक सोनी नामक शख्स ने अपनी कार से मोटरसाइकिल सवार रिश्तेदारों को जानबूझकर टक्कर मार दी. आरोपी युवक अपनी नाबालिग साली को भगाकर ले जा रहा था, जिसका उसके परिजन विरोध कर रहे थे. जब परिजनों ने मोटरसाइकिल से पीछा कर कार को ओवरटेक किया, तो दीपक ने उन पर गाड़ी चढ़ा दी. इस हादसे में सत्यवान सोनी (26), मनोज सोनी (18) और उनके दोस्त अन्नू सोनकर (40) की मौत हो गई. घटना में एक अन्य राहगीर परिवार के चार सदस्य भी गंभीर रूप से घायल हुए हैं पुलिस के अनुसार, यह पूरी घटना एक पारिवारिक विवाद का नतीजा थी. दीपक सोनी का अपने परिजनों से झगड़ा हुआ था, जिसके बाद वह अपनी नाबालिग साली को लेकर भागने लगा. जब रिश्तेदारों ने उसे रोकने की कोशिश की, तो उसने आव देखा न ताव और पीछा कर रहे लोगों को मौत के घाट उतार दिया. टक्कर इतनी भीषण थी कि तीनों मृतक सड़क से दूर जा गिरे. फिलहाल आरोपी कार चालक दीपक सोनी मौके से फरार है और पुलिस उसकी तलाश में जुटी है.

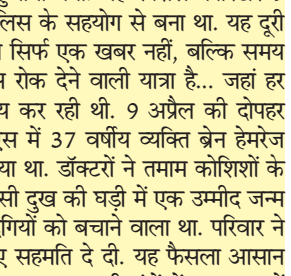

राहगीर परिवार भी चपेट में आया दीपक की तेज रफ्तार कार ने न सिर्फ पीछा कर रहे लोगों को रौंदा, बल्कि रास्ते से गुजर रही एक अन्य मोटरसाइकिल को भी अपनी चपेट में ले लिया. इस दूसरी बाइक पर सवार सुरेंद्र कुमार (30), उनकी बहन ममता देवी (35) और उनके दो बच्चे पल्लवी (8) और अर्पित (10) गंभीर रूप से घायल हो गए. पुलिस ने घायलों को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया है. सीओ प्रगति यादव ने बताया कि प्राथमिक जांच में यह जानबूझकर किया गया हमला मालूम हो रहा है.

मौलाना खालिद रशीद की मुसलमानों से खास अपील, ‘मजहब में इस्लाम और मातृभाषा में लिखें

महानगर मेट्रो ब्यूरो

लखनऊ। लखनऊ के प्रसिद्ध मौलाना खालिद रशीद फिरंगी महली ने आगामी जनगणना 2027 को देखते हुए मुस्लिम समुदाय से अपनी धार्मिक और भाषाई पहचान स्पष्ट रूप से दर्ज करने का आह्वान किया है. जनगणना का कार्य डिजिटल माध्यम से किया जा रहा है, जिसके लिए 10 अप्रैल तक 5.5 लाख गणना करने वालों का डेटाबेस तैयार हो जाएगा. नागरिक 7 मई से खुलने वाले स्व-गणना पोर्टल पर अपना विवरण खुद भर सकेंगे. मुख्य सचिव एसपी गोयल ने अधिकारियों को मकान सूचीकरण का कार्य बिना एरर और समय-सीमा के भीतर पूरा करने के निर्देश दिए हैं. मौलाना के अनुसार, सटीक डेटा के आधार पर ही भविष्य में सरकारी योजनाओं का लाभ सही ढंग से मिल सकेगा.

धर्म और भाषा पर मौलाना की स्पष्ट राय

मौलाना खालिद रशीद फिरंगी महली ने जोर देकर कहा है कि जनगणना फॉर्म भरते समय धर्म के स्थान पर सिर्फ ‘इस्लाम’ ही लिखें. इसके साथ ही उन्होंने मातृभाषा के कॉलम में हिंदी के बजाय ‘उर्दू’ लिखने की अपील की है.
उनके मुताबिक, अक्सर लोग सामान्य तौर पर हिंदी लिख देते हैं, लेकिन अपनी सही पहचान दर्ज करना जरूरी है. मौलाना का तर्क है कि सरकार जब भी जन कल्याणकारी योजनाएं बनाएगी, तो इसी डेटा का इस्तेमाल किया जाएगा. स्पष्ट डेटा होने से सरकार को योजनाएं बनाने और उन्हें लागू करने में सहूलियत होगी.

पूरी तरह डिजिटल होगी यह जनगणना

बुधवार को मुख्य सचिव एसपी गोयल ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए समीक्षा बैठक की, जिसमें सभी मंडलायुक्तों और जिलाधिकारियों को सख्त निर्देश दिए गए. जनगणना 2027 पूरी तरह डिजिटल होगी, जिसमें सटीक आंकड़ों पर विशेष जोर दिया जा रहा है. नागरिक 7 मई से पोर्टल के जरिए खुद अपनी जानकारी दर्ज कर सकेंगे. प्रशासन का लक्ष्य है कि मकान सूचीकरण और गणना का कार्य बिना किसी गलती के पूरा हो. इस बार की जनगणना में तकनीक का बड़े पैमाने पर इस्तेमाल किया जा रहा है ताकि डेटा पारदर्शी और सुलभ रहे. जिसमें सभी मंडलायुक्तों और जिलाधिकारियों को सख्त निर्देश दिए गए. जनगणना 2027 पूरी तरह डिजिटल होगी, जिसमें सटीक आंकड़ों पर विशेष जोर दिया जा रहा है. नागरिक 7 मई से पोर्टल के जरिए खुद अपनी जानकारी दर्ज कर सकेंगे. प्रशासन का लक्ष्य है कि मकान सूचीकरण और गणना का कार्य बिना किसी गलती के पूरा हो.

‘15 हजार देते हैं, 25 बताते हैं और 250 बढ़ाते हैं...’, कर्मचारियों ने खोली नोएडा में कंपनियों की पोल

महानगर मेट्रो ब्यूरो

नोएडा। नोएडा में प्राइवेट कर्मचारियों का प्रदर्शन सोमवार को उग्र हो गया. कर्मचारियों ने कंपनियों की पोल खोलते हुए आरोप लगाया कि उन्हें कम सैलरी दी जाती है, जबकि रिकॉर्ड में ज्यादा दिखाया जाता है. कर्मचारियों के मुताबिक 10-15 हजार रुपये सैलरी देकर कागजों में 25 हजार दिखाए जाते हैं. वहीं प्रशासन ने नए श्रम नियम लागू करने का भरोसा दिया, लेकिन कर्मचारियों में अब भी भारी आक्रोश बना हुआ है.नोएडा में पिछले तीन दिनों से सुलग रहा प्राइवेट कंपनियों के कर्मचारियों का असंतोष सोमवार को अचानक भड़क उठा. कल तक जो प्रदर्शन नारेबाजी और शांतिपूर्ण विरोध तक सीमित था, सोमवार को उग्र रूप ले बैठा. सैकड़ों की संख्या में कर्मचारी सड़कों पर उतर आए, कई जगहों पर जाम लगा दिया, और कुछ स्थानों पर गाड़ियों में तोड़फोड़ व आगजनी की घटनाएं भी सामने आईं. हालात बिगड़ते देख पुलिस को तुरंत मोर्चा संभालना पड़ा और कई रूटों पर यातायात डायवर्ट करना पड़ा. यह पूरा विवाद सिर्फ सैलरी बढ़ाने की मांग तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके पीछे कर्मचारियों की लंबे समय से जमा हो रही नाराजगी, असंतोष और कथित शोषण की कहानी भी छिपी हुई है. प्रदर्शन के दौरान कर्मचारियों ने खुलकर कंपनियों की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाए और कई चौंकाने वाले आरोप लगाए.कर्मचारियों के प्रदर्शन के चलते नोएडा में कई जगह ट्रैफिक जाम, इन रूट्स पर जाने से बचें प्रदर्शन कर रही एक महिला कर्मचारी ने आजतक को बताया, हमें 9 से 11 हजार रुपये के बीच सैलरी मिलती है. सालों तक मेहनत करने के बाद भी इसमें कोई खास बढ़ोतरी नहीं होती. अगर ज्यादा आवाज उठाओ तो 200-300 रुपये बढ़ा देते हैं, जैसे कोई बहुत बड़ा एहसान कर दिया हो. एक अन्य महिला कर्मचारी ने कहा, हमसे 10-12 घंटे काम कराया जाताहै, लेकिन वेतन सिर्फ 15 हजार मिलता है. ऊपर से जब कोई जांच करने आता है, तो

कंपनी वाले रिकॉर्ड में दिखाते हैं कि हमें 25 हजार रुपये मिलते हैं. कर्मचारियों का आरोप है कि कागजों पर सब कुछ सही दिखाया जाता है, लेकिन हकीकत इससे बिल्कुल अलग है. एक कर्मचारी ने नाराजगी जताते हुए कहा कि अगर हम विरोध करें तो मामूली बढ़ोतरी कर दी जाती है, लेकिन असल समस्या जस की तस रहती है.काम के घंटे ज्यादा, सुविधाएं नदारदकई कर्मचारियों ने बताया कि उनसे तय समय से ज्यादा काम लिया जाता है, लेकिन उसके बदले उचित भुगतान नहीं किया जाता. ओवरटाइम का पैसा या तो दिया ही नहीं जाता, या फिर उसमें कटौती कर दी जाती है. एक कर्मचारी ने कहा, हम सुबह से रात तक काम करते हैं. छुट्टी भी मुश्किल से मिलती है. कोई मेडिकल सुविधा नहीं, कोई सुरक्षा नहीं... बस काम लो और पैसा कम से कम दो, यही चल रहा है. महिला कर्मचारियों ने भी सुरक्षा को लेकर चिंता जताई. उनका कहना है कि कई जगहों पर बुनियादी सुविधाएं तक उपलब्ध नहीं हैं, जिससे काम करना और भी मुश्किल हो जाता है

यूपी में SIR से बदलेगा राजनीतिक दलों का गणित और सीटों का जातीय समीकरण

महानगर मेट्रो ब्यूरो

दिल्ली:लखनऊः एसआईआर की प्रक्रिया पूरी होने के बाद उत?तर प्रदेश में 2,04,45,300 वोटर कम हो गए हैं। जिन विधानसभाओं में सबसे अधिक वोटर कम हुए हैं, उनमें ज्यादातर विधानसभा शहरी क्षेत्र वाली हैं। इसमें 6 विधानसभा ऐसी हैं, जहां 34 प्रतिशत से लेकर 30 प्रतिशत तक वोट कम हुए हैं। वहीं, जिन विधानसभा क्षेत्रों में कम वोट वहीं, जिन कटे हैं, उनमें से ज्यादातर विधानसभा ग्रामीण क्षेत्र की हैं। ऐसे में एसआईआर की फाइनल सूची जारी होने के बाद कई सीटों का गणित बदल सकता है। इसमें कई वीआईपी सीटें भी शामिल हैं, जहां लंबे समय से एक ही दल काबिज रहा है। अब एसआईआर के बाद फाइनल वोटर लिस्ट जारी होने पर राजनीतिक दलों को अपनी रणनीति में बदलाव करना पड़ सकता है। एक राजनीतिक दल के पदाधिकारी के मुताबिक फाइनल वोटर लिस्ट के आधार पर राजनीतिक दलों ने गुणा-गणित लगाना शुरू कर दिया है।

इन विधानसभा क्षेत्रों में सबसे अधिक नाम कटे

जिन विधानसभा क्षेत्रों में सबसे अधिक वोट कम हुए हैं। उनमें प्रतिशत के हिसाब से लखनऊ कैंट विधानसभा सबसे आगे हैं। यहां 34.18 प्रतिशत वोट कम हुए हैं। वहीं, इलाहाबाद उत्तरी में 34.01 प्रतिशत, लखनऊ पूर्व में 31.01 प्रतिशत, लखनऊ उत्तर में 31.00 प्रतिशत, आगरा कैंट में 30.47 प्रतिशत और साहिबाबाद में 30.36 प्रतिशत वोट कम हुए हैं।

शहरी विधानसभा क्षेत्रों में कम हुए ज्यादा वोटर

लखनऊ कैंट
1,24,962,इलाहाबाद उत्तर
1,45,810,लखनऊ पूर्व
1,43,478,लखनऊ उत्तर
1,54,710,आगरा कैंट
1,47,182,साहिबाबाद
3,16,484,लखनऊ मध्य
1,07,439,कल्याणपुर
1,03,063,मेरठ कैंट
1,21,727,कानपुर कैंट
97,558

किन विधानसभा क्षेत्रों में कम कटे वोट

महरौनी19,454,बरखेड़ा
15,803,कुदरकी
19,146,तिंदवारी
16,358,सिरसागंज
16,696,जसराना
21,223,टूंडला
22,364,बदलापुर21,085

ग्रामीण विधानसभा क्षेत्रों में कम कटे वोटर

एक तरफ जहां शहरी विधानसभा क्षेत्रों में वोटरो की संख्या में बड़े पैमाने पर कमी आई है। वही, ग्रामीण क्षेत्रो मे वोट कटने का औसत कम रहा है। सबसे कम वोट महरौनी विधानसभा में कटे है, यहां 4.21 प्रतिशत वोट कम हुए है। वही, बरखेड़ा विधानसभा में 4.74 प्रतिशत, कुडरकी में 4.93 प्रतिशत, तिदवाड़ी में 5.01 प्रतिशत, सिरसागंज में 5.10 प्रतिशत, जसराना में 5.61 प्रतिशत वोट कटे है।

लश्कर के इंटरस्टेट नेटवर्क का हुआ पर्दाफाश, 2 पाकिस्तानी आतंकियों समेत 5 गिरफ्तार

महानगर मेट्रो ब्यूरो

श्रीनगर/नई दिल्ली । जम्मू-कश्मीर ने केंद्रीय खुफिया एजेंसियों के साथ मिलकर लश्कर-ए-तैबा (स्त्र्ञ्ज) के इंटरस्टेट नेटवर्क का खुलासा किया है। पुलिस ने हरियाणा और राजस्थान से कई लोगों को हिरासत में लिया है। अधिकारियों के मुताबिक, ये लोग आतंकियों को फर्जी पहचान दिलाने में मदद करते थे। वे आधार, पैन कार्ड और वोटर आईडी जैसे दस्तावेज बनवाकर आतंकियों को लॉजिस्टिक सपोर्ट दे रह थे। जांच श्रीनगर पुलिस ने शुरू की थी, लेकिन नेटवर्क के बड़े दायरे को देखते हुए इसमें केंद्रीय एजेंसियों और अन्य राज्यों की पुलिस को भी शामिल किया गया।

जांच में सामने आया कि उमर उर्फ ‘खरगोश’, जो पाकिस्तान के कराची का रहने वाला है, 2012 के बाद भारत में घुसा था। उसने 2024 में जयपुर से बनवाए गए फर्जी पासपोर्ट के जरिए देश छोड़ दिया और इंडोनेशिया होते हुए किसी खाड़ी देश में पहुंच गया। वहां से गतिविधियों को अंजाम दे रहा था। इस पूरे मामले का खुलासा तब हुआ जब श्रीनगर पुलिस ने एक गहरी जड़ें जमा चुके नेटवर्क का भंडाफोड़ कर पांच लोगों को गिरफ्तार किया, जिनमें पाकिस्तानी आतंकी अब्दुल्ला उर्फ अबू हुरैरा भी शामिल है, जो 16 साल से फरार था।

तीन कश्मीरी अरेस्ट

अधिकारियों ने बताया कि आतंकी फर्जी दस्तावेजों के जरिए कई राज्यों में अपना नेटवर्क बना रहे थे। हिरासत में लिए गए कुछ लोगों को औपचारिक रूप से गिरफ्तार भी किया जा सकता है, खासकर वे जो फर्जी पासपोर्ट और दस्तावेज बनाने में शामिल थे। इस मामले में श्रीनगर के मोहम्मद नकीब भट, आदिल राशिद भट और गुलाम मोहम्मद मीर उर्फ मामा को भी गिरफ्तार किया गया है। इन पर आतंकियों को पनाह, भोजन और अन्य मदद देने का आरोप है। केंद्रीय एजेंसियों के साथ श्रीनगर पुलिस का एक्शन, हरियाणा, राजस्थान से कई पकड़े
5 आतंकी लश्कर-ए-तैबा से जुड़े बताए गए
2 पाकिस्तानी हैं इनमें से
16 साल से फरार था पाक आतंकी अब्दुल्ला
40 विदेशी आतंकियों को हैंडल किया घाटी में सक्रिय रहकर

ऐसे शुरू हुई जांच

जांच 31 मार्च को शुरू हुई थी, जब नकीब भट को पंडार इलाके से पिस्तौल और अन्य आपत्तिजनक सामान के साथ पकड़ा गया। पूछताछ में उसने खुद को लश्कर से जुड़ा बताया और बताया कि उसने हथियार आदिल राशिद से लिए थे। इसके बाद पुलिस मीर और राशिद भट तक पहुंची और कई ठिकानों का भंडाफोड़ किया। पुलिस ने कई ठिकानों से तीन,च-47 राइफल, एक,च-क्रिकोव, पिस्तौल, हैंड ग्रेनेड और इलेक्ट्रॉनिक उपकरण बरामद किए हैं। जांच में स्त्र्ञ्ज के वित्तीय नेटवर्क का खुलासा हुआ।

सुप्रीम कोर्ट से लालू यादव को आंशिक राहत, नौकरी मामले में कानूनी सवाल

महानगर मेट्रो ब्यूरो

नई दिल्ली सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को राजद प्रमुख लालू प्रसाद यादव को कथित जमीन के बदले नौकरी घोटाला मामले में आंशिक राहत दी। अदालत ने उन्हें भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम की धारा 17 की लागू होने की दलील ट्रायल कोर्ट में उठाने की अनुमति दे दी। साथ ही, ट्रायल के दौरान उनकी व्यक्तिगत पेशी से भी छूट दे दी गई। हालांकि, शीर्ष अदालत ने साफ कहा कि वह इस स्तर पर यह नहीं तय कर रही है कि धारा 17 भविष्य के मामले (prospective) है या भूत लक्ष्यी प्रभाव (retrospective) के तहत लागू होगा
जस्टिस एमएम सुंदरेश और जस्टिस एन कोटिश्वर सिंह की बेंच ने कहा कि मामले के तथ्यों और परिस्थितियों को देखते हुए याचिकाकर्ता को ट्रायल के दौरान यह कानूनी मुद्दा उठाने की स्वतंत्रता दी जाती है। अदालत ने यह भी स्पष्ट किया कि दिल्ली हाई कोर्ट का पहले का आदेश, जिसमें केस रद्द करने से इनकार किया गया था, ट्रायल कोर्ट में इस दलील को उठाने में बाधा नहीं बनेगा।

1. सुप्रीम कोर्ट ने लालू यादव को ट्रायल में धारा 17 का मुद्दा उठाने की छूट दी।
2. अदालत ने उनकी व्यक्तिगत पेशी से भी राहत दे दी।
3. कोर्ट ने धारा 17 के prospective Øæ retrospective होने पर कोई राय नहीं दी। सीबीआई का दावा है कि लालू निर्णय या सिफारिश प्राधिकारी नहीं थे, इसलिए मंजूरी जरूरी नहीं थी।

जल्द जगमगाएगी देश की राजधानी, एक लाख स्ट्रीट लाइटें बदलने की तैयारी, कैबिनेट की मुहर का इंतजार

महानगर मेट्रो ब्यूरो

नई दिल्ली। सड़कों पर बेहतर रोशनी के लिए सरकार ने एक लाख स्ट्रीट लाइट्स लगाने का प्लान तैयार किया है। स्ट्रीट लाइट्स लगाने पर कुल 473 करोड़ रुपये खर्च का एस्टिमेट तैयार किया गया है। प्रस्ताव को मंजूरी के लिए कैबिनेट में भेजा जाएगा। प्रोजेक्ट पर टेंडर होने के बाद 1400 किमी लंबी सड़कों पर लगी स्ट्रीट लाइट्स को चेंज करना होगा। इस बार ऐसी स्ट्रीट लाइट्स लगाई जाएंगी, जिसमें एक स्ट्रीट लाइट की रोशनी सतह पर कम से कम 40 वर्ग मीटर के दायरे में होगी। वर्तमान में 10-15 Lu रोशनी वाली स्ट्रीट लाइट्स लगी हैं। जिनकी रोशनी महज 10 से 15 वर्ग मीटर के दायरे तक सीमित रहती है। सरकार के सूत्रों के अनुसार 1400 किमी लंबी सड़कों के नेटवर्क पर करीब एक लाख स्ट्रीट लाइट्स लगी हैं। 50 हजार एलईडी और 40 हजार सोडियम लाइट्स हैं। वर्तमान में इनका संचालन जिस तकनीक से हो रहा है, वह काफी पुरानी हो चुकी है और बिजली खपत काफी अधिक है। नई तकनीक की लाइटें लगाने से बिजली बचत के साथ-साथ मेंटेनेंस कॉस्ट भी कम हो जाएगी। पीडब्ल्यूडी को सालाना करीब 90 करोड़ रुपये का स्ट्रीट लाइट्स का बिल चुकाना पड़ता है।

एक लाइट की रोशनी 40 वर्गमीटर के दायरे में होगी

नई लाइटें लगाने से उसमें करीब 31.5 करोड़ की बचत हो सकती है। इसलिए सरकार ने 40 रोशनी वाली लाइट्स लगाने का प्लान बनाया है। एक की लाइट करीब एक वर्ग मीटर एरिया में रोशनी कर सकती है। पुरानी लाइटों के मेंटेनेंस पर हर साल सरकार को 138 करोड़ खर्च करने पड़ते हैं। कुल मिलाकर सरकार को इन लाइटों पर सालाना करीब 230 करोड़ रुपये खर्च आता है।473 करोड़ का मेगा प्लान तैयार
पुरानी लाइटों को बदलने पर सरकार ने 473 करोड़ रुपये खर्च करने का प्रस्ताव तैयार किया है। प्रस्ताव को कैबिनेट में भेजने की तैयारी की जा रही है। मंजूरी मिलते ही टेंडर कॉल किए जाएंगे। जिस भी कंपनी को टेंडर मिलेगा, उसे एक साल के अंदर एक लाख स्ट्रीट लाइटें बदलनी होंगी।

महानगर मेट्रो
www.mahanagarmetro.com
अहमदाबाद, (मंगलवार)
14 अप्रैल 2026

'जब तक भारत, तब तक दुनिया सुरक्षित रहेगी' - संघ प्रमुख मोहन भागवत

महानगर मेट्रो ब्यूरो

नागपुर में एक कार्यक्रम के दौरान मोहन भागवत ने वैश्विक हालात और भारत की भूमिका पर बड़ा बयान दिया. दुनिया भर में चल रहे अलग-अलग युद्ध और तनाव के बीच उन्होंने भारत की विशेषता और उसकी स्थायी शक्ति पर जोर दिया.

संघ प्रमुख राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक ने कहा कि भारत की अमरता का रहस्य उसके आध्यात्मिक मूल्यों में छिपा हुआ है. उन्होंने कहा कि जिन लोगों ने अपने जीवन में अध्यात्म को प्रत्यक्ष रूप से अपनाया है, वे अपनी वाणी से समाज को सही दिशा दिखाते हैं और समस्याओं से निकलने का रास्ता बताते हैं.

नागपुर में दिए गए अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि भारत को भारत बनाए रखने का काम संतों और महात्माओं की शक्ति से होता है. यही शक्ति देश को स्थिर और मजबूत बनाए रखती है. उनका कहना था कि जब तक भारत अपनी मूल पहचान और संस्कृति को बनाए रखेगा, तब तक दुनिया में संतुलन और शांति बनी रहेगी.

नागपुर में दिए गए इस बयान को मौजूदा वैश्विक परिस्थितियों के संदर्भ में अहम माना जा रहा है. उन्होंने यह भी संकेत दिया कि भारत की भूमिका केवल अपने तक सीमित नहीं है, बल्कि उसका प्रभाव पूरे विश्व पर पड़ता है

संतों की शक्ति से कायम है भारत की पहचान

इस दौरान मोहन भागवत ने यह स्पष्ट किया कि भारत की शक्ति केवल भौतिक नहीं बल्कि आध्यात्मिक है, और यही उसे दुनिया में अलग स्थान देती है. उनके इस बयान ने भारत की वैश्विक भूमिका पर एक नई चर्चा को जन्म दिया है.

महायुति के मंत्री नहीं चाहते थे महिला अफसर, मुझे साइड किया गया, महाराष्ट्र में मनीषा म्हैसकर IAS का खुलासा, खलबली

महानगर मेट्रो ब्यूरो

मुंबई : महाराष्ट्र की सीनियर अफ़सर मनीषा पाटणकर म्हैसकर ने एक ऐसी बात कही, जिससे हलचल मच गई। उन्होंने कहा कि महायुति सरकार में एक मंत्री नहीं चाहते थे कि कोई महिला अफ़सर उनके विभाग की मुखिया बने, जिसकी वजह से उन्हें उस पद के लिए नज़रअंदाज़ कर दिया गया। मनीषा म्हैसकर अभी एडिशनल चीफ़ सेक्रेटरी (गृह) हैं। दिल्ली में हो रहे महिला सिविल सेवकों के एक साहित्यिक सम्मेलन के लिए छपी एक स्मारिका में दिए इंटरव्यू में 2023 की इस घटना का ज़िक्र किया। उस समय एकनाथ शिंदे की सरकार थी।

मनीषा म्हैसकर की टिप्पणियों से ख़ास तौर पर इसलिए हलचल मच गई है, क्योंकि महायुति सरकार महिलाओं को बढ़ावा देने पर गर्व करती है। महायुति में शिंदे सेना, BJP और NCP शामिल हैं। महायुति ने 'मुख्यमंत्री माझी लाडकी बहिण योजना' लागू की है और महाराष्ट्र में पहली महिला चीफ़ सेक्रेटरी, BMC कमिश्नर और पुलिस महानिदेशक की नियुक्ति की है।

2023 की उस घटना का जिक्र सीनियर आईएएस मनीषा ना कहा कि उनका आईएएस के तौर पर 33 साल का करियर है। महाराष्ट्र में 2023 में जब महायुति की सरकार बनी तो अफसरों को पोस्टिंग मिल रही थी। उन्होंने कहा कि उनकी सीनिएरिटी को बायपास करके जूनियर को पोस्टिंग दी गई। ऐसा इसलिए किया गया क्योंकि उस विभाग के मंत्री को विभाग में महिला अफसर की पोस्टिंग मंजूर नहीं थी। उन्होंने साफ कहा कि मैं अपने विभाग में महिला अफसर की पोस्टिंग नहीं चाहता।

मेरे 33 साल के करियर में ऐसा सिर्फ़ एक बार हुआ। 2023 में सरकार बनने के बाद अफ़सरों को पोस्टिंग मिल रही थीं। एक नेता ने कहा कि वह नहीं चाहते कि कोई महिला उनके विभाग को चलाए और मुझे नज़रअंदाज़ कर दिया गया। मैं क्या कह सकती हूं? मनीषा म्हैसकर, आईएएस

मनीषा ने उस घटना को बताया अपवाद

आईएएस मनीषा ने कहा कि यह घटना चौंकाने वाली थी, क्योंकि अफ़सरशाही में लिंग-भेद लगभग ख़त्म हो चुका था। बाद में ञ्ज्ह्लढ्ढ से बात करते हुए म्हैसकर ने कहा कि महाराष्ट्र मेरे साथ बहुत निष्पक्ष रहा है और सिर्फ़ एक ही अपवाद रहा है। यह कोई इत्तेफ़ाक नहीं है कि महाराष्ट्र मेरे साथ निष्पक्ष रहा है। हमारे यहां सामाजिक सुधारों की विरासत है, और यह एक बहुत ही प्रगतिशील राज्य है। और सबसे अहम बात यह है कि जनता के लिए अफ़सर का लिंग कोई मायने नहीं रखता।

उन्होंने कहा कि उस लेख में उनकी टिप्पणियों को संदर्भ से हटाकर पेश किया गया। सिर्फ़ उस एक अपवाद को ही ज़्यादा उभारा गया था। महाराष्ट्र में महिला अफ़सरों के गृह, वित्त, ऊर्जा और आवास जैसे अहम विभागों की मुखिया बनने का इतिहास रहा है। मनीषा म्हैसकर PWD, शहरी विकास, प्रोटोकॉल जैसे कई विभागों की मुखिया रह चुकी हैं, और BMC में एडिशनल कमिश्नर भी रही हैं।'महिलाओं को खुद को साबित करने के लिए करनी पड़ती है मेहनत'उस लेख में उन्होंने कहा कि जब उन्होंने यह सेवा जॉइन की थी, उसकी तुलना में आज ढ्ढस् में कहीं ज़्यादा महिलाएं हैं। समानता के माहौल की वजह से उन्हें शायद ही कभी भेदभाव का सामना करना पड़ता है। हालांकि, उन्होंने कहा कि महिलाओं को अभी भी खुद को साबित करने की ज़रूरत होती है, क्योंकि उनकी परख पुरुष अफ़सरों की तुलना में ज़्यादा सख़्ती से की जाती है। अगर कोई पुरुष अधिकारी अकुशल होता है, तो उसकी आलोचना व्यक्तिगत स्तर पर की जाती है। लेकिन अगर कोई महिला अधिकारी अकुशल होती है, तो उसकी आलोचना को सभी महिलाओं पर लागू कर दिया जाता है। वे जो महिला सहकर्मियों को नहीं चाहते; वे जिनके लिए लिंग से कोई फ़र्क नहीं पड़ता,

12000 करोड़ बचेगा, लाडली बहन योजना EKYC के बाद महाराष्ट्र में बड़ी छंटनी

महानगर मेट्रो ब्यूरो

मुंबईः महाराष्ट्र सरकार ने लाडली बहन योजना के तहत 68 लाख महिलाओं को अपात्र घोषित किया है। इससे सरकार का सालाना 12240 करोड़ रुपये बचेगा। वहीं लाडली बहन योजना पर वार्षिक खर्च 43740 करोड़ से घटकर 31500 करोड़ रुपये रह जाएगा। सरकार ने लाडली बहन योजना के लिए द्र-चड्ढ्ष्ट की डेडलाइन 30 अप्रैल तक बढ़ा दी है। पहले लाडली बहन योजना का द्र-चड्ढ्ष्ट 31 मार्च तक था। महिला एवं बाल विकास विभाग के एक अधिकारी ने बताया कि योजना से 68 लाख महिलाओं के नाम बाहर होने से अब दूसरे विभागों से निधि लेने की जरूरत नहीं पड़ेगी। एकनाथ शिंदे सरकार ने जुलाई 2024 में राज्य में लाडली बहन योजना शुरू की थी। शुरुआत में इस

योजना के तहत करीब 2 करोड़ 47 लाख महिलाएं लाभार्थी थीं, इनमें से 31 मार्च 2026 तक 1 करोड़ 75 लाख महिलाओं ने ई-केवाईसी प्रक्रिया को पूरा किया। वहीं 68 लाख महिलाएं अपात्र होकर योजना से बाहर हो गई।

ई केवाईसी जरूरी होने का

मिला सरकार को फायदा

लाडली बहन योजना के तहत पात्र महिलाओं को 1500 रुपये की किश्त दी जा रही है। लेकिन अपात्र महिलाओं द्वारा योजना का लाभ लेने की शिकायत मिलने के बाद सरकार ने 18 सितंबर 2025 को परिपत्र जारी कर योजना का लाभ लेने के लिए दो माह के भीतर ई-केवाईसी करना अनिवार्य किया था।

अपात्र महिलाओं को मिले 20 हजार करोड

आखिरकार इस योजना से 68 लाख महिलाएं बाहर हो गई। वहीं अब 1 करोड़ 75 लाख महिलाएं इस योजना के लिए पात्र पाई गई हैं। एक अधिकारी ने बताया कि पिछले 20 महीने में अपात्र महिलाओं के खाते में 20 हजार करोड़ रुपये से अधिक जमा किए गए हैं। अब इन महिलाओं के योजना से बाहर होने से राज्य सरकार का हर साल लगभग 12240 करोड़ रुपये बचेगा। इस योजना के लिए कुल 43740 करोड़ रुपये साल में खर्च होने का अनुमान था, जो अब घटकर 31500 करोड़ रुपये रह जाएगा। तहत जरूरतमंद महिलाओं के बैंक खातों में हर महीने 1500 रुपये जमा किए जाते थे।

भिवंडी शहर में पहली बार चलेगी मेट्रो, ठाणे-भिवंडी 'मेट्रो लाइन 5' पर काम ने पकड़ी रफ्तार

महानगर मेट्रो ब्यूरो

ठाणे, दहिसर-काशीगांव मेट्रो के शुरू होने के बाद ठाणे शहर से गुजरने वाली एक और मेट्रो लाइन पर काम ने रफ्तार पकड़ ली है। ठाणे और भिवंडी को जोड़ने वाली मेट्रो लाइन 5 (ऑरेंज लाइन) का निर्माण कई सालों से चल रहा है। आखिरकार इस प्रोजेक्ट के लिए एक नई डेडलाइन तय कर दी गई है। इस टाइमलाइन के मुताबिक, ठाणे-भिवंडी मेट्रो के इस आने वाले दिसंबर तक पूरा होने की उम्मीद है और इसके जनवरी 2027 तक यात्रियों के लिए खुलने की संभावना है।

दहिसर-काशीगांव मेट्रो से मिली राहत

अभी कुछ ही दिन पहले दहिसर-काशीगांव मेट्रो का आधिकारिक तौर पर उद्घाटन किया गया था। यह ठाणे शहर के अंदर और हार्बर लाइन कॉरिडोर के साथ चलने वाली पहली मेट्रो लाइन है। पहले ही दिन से मेट्रो को यात्रियों से जबरदस्त रिस्पॉन्स मिला। शाम के समय काशीगांव मेट्रो स्टेशन पर यात्रियों की लंबी कतारें देखी गईं। इससे साफ जाहिर होता है कि ठाणे शहर के अंदर एक मेट्रो सिस्टम की कितनी ज्यादा जरूरत है। फिलहाल, ठाणे और भिवंडी के बीच सफर करने वाले लोगों को बसों पर निर्भर रहना पड़ता है। ये बसें अक्सर

आधे घंटे तक की देरी से आती हैं, जिससे यात्रियों को काफी परेशानी होती है।

भिवंडी के लोगों को फायदा

इसके अलावा शाम के समय ट्रैफिक जाम की वजह से यात्रियों को अक्सर बसों के अंदर घंटों फंसे रहना पड़ता है। दूसरा विकल्प यह है कि जो यात्री ट्रेन से सफर करना चाहते हैं, उन्हें दिवा रेलवे स्टेशन से स्थ्र्रू सेवा लेनी पड़ती है। हालांकि इन ट्रेनों की फ्रीक्वेंसी काफी कम है। नतीजतन पिछले कई सालों से लोग ठाणे और भिवंडी के बीच एक सीधी मेट्रो लिंक की मांग कर रहे हैं।

यह रूट कैसा दिखेगा?

मेट्रो लाइन 5 एक 25 किलोमीटर लंबा कॉरिडोर होगा जो ठाणे, भिवंडी और कल्याण को जोड़ेगा। इस प्रोजेक्ट के पहले चरण में ठाणे-भिवंडी सेक्शन को पूरा किया जा रहा है और इस हिस्से पर काम फिहाल जोर-शोर से चल रहा है। बीजेपी विधायक महेश चौघुले की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक, इस मेट्रो लाइन के लिए जमीनी काम और सभी तकनीकी ऑपरेशन फिलहाल अपने अंतिम चरण में हैं। गुरुवार को भिवंडी नगर निगम, एमएमआरडीए और मेट्रो अथॉरिटी के अधिकारियों ने चल रहे कामों का निरीक्षण किया। उस समय उन्होंने बताया था कि यह काम दिसंबर 2026 तक पूरा हो जाएगा। अभी भिवंडी से मुंबई जाने वाले यात्रियों के लिए कोई सीधी रेल सेवा उपलब्ध नहीं है। नतीजतन, यात्रियों को मुंबई पहुंचने के लिए रोजाना बस से ठाणे और कल्याण होते हुए सफर करना पड़ता है। जब मेट्रो लाइन 5 चालू हो जाएगी, तो भिवंडी के लोगों को काफी राहत मिलेगी और उनके सफर का समय भी काफी कम हो जाएगा।

2017 में मंजूरी मिली

एमएमआरडीए ने 2017 में मेट्रो लाइन 5 प्रोजेक्ट को हरी झंडी दी थी। 2018 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ओर से इसका उद्घाटन किए जाने के बाद 2020 में असल निर्माण कार्य शुरू हुआ। हालांकि तब से छह साल बीत जाने के बाद भी काम अभी तक अधूरा है। इस देरी से यात्रियों में असंतोष फैल गया है। जहां पहले चरण का काम अब जल्द ही पूरा होने की उम्मीद है।

'आदिवासी पहचान मिटा देगा UCC', नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने मोहन यादव सरकार को दी बड़ी चेतावनी

महानगर मेट्रो ब्यूरो

भोपाल।मध्य प्रदेश की सियासत में इस वक्त दो बड़े मोर्चे खुल गए हैं। नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने समान नागरिक संहिता को आदिवासियों की सदियों पुरानी परंपराओं पर प्रहार बताया है, तो दूसरी तरफ प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने 6 लाख से अधिक किसानों के 'डिफॉल्टर' होने की कगार पर पहुंचने को लेकर सरकार को चेतावनी दी है। ये दोनों मुद्दे न केवल राजनीतिक हैं, बल्कि प्रदेश की सामाजिक और आर्थिक बुनियाद से जुड़े हैं।

'संविधान ने जो ढाल दी, उसे छीनने की कोशिश'

खुद आदिवासी समाज से आने वाले उमंग सिंघार ने दो टूक कहा कि भारत के आदिवासियों ने अपनी विशिष्ट

सामाजिक संरचना, विवाह रीति-रिवाज और विरासत के नियमों को सदियों से संजोकर रखा है। संविधान के 5वें और 6वें शेड्यूल के तहत इन परंपराओं को सुरक्षा मिली हुई है। सिंघार का तर्क है कि ष्टष्ट आने से ये संवैधानिक सुरक्षा कवच टूट जाएगा और मध्य प्रदेश की विशाल जनजातीय आबादी की सांस्कृतिक पहचान खतरे में पड़ जाएगी।

6.20 लाख किसानों की

साख दांव पर

किसानों के मुद्दे पर जीतू पटवारी ने सीएम मोहन यादव को एक खुला पत्र लिखा है। उन्होंने राज्य में मंडराते कृषि संकट की ओर इशारा करते हुए बताया कि प्रदेश के 6.20 लाख किसान अपना कर्ज नहीं चुका पाए हैं। ये किसान अब डिफॉल्टर घोषित होने की कगार पर हैं, जिसका सीधा मतलब है कि भविष्य में उन्हें किसी भी बैंक से कर्ज नहीं मिल पाएगा।

ष्टष्ट आदिवासियों की सदियों पुरानी परंपराओं और संवैधानिक अधिकारों का अनादर होगा। हम अपनी पहचान और जल-जंगल-जमीन के हक को किसी भी कीमत पर कमजोर नहीं होने देंगे। उमंग सिंघार, नेता प्रतिपक्ष, म.प्र. विधानसभा

क्यों बढ़ा संकट?

विशेषज्ञों का मानना है कि छोटे और सीमांत किसान कृषि अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं। लेकिन कर्ज की समय सीमा के भीतर 450 करोड़ रुपये की वसूली न होना यह दर्शाता है कि खेती की लागत बढ़ी है और आय उस अनुपात में नहीं रही। अगर ये किसान डिफॉल्टर हुए, तो ग्रामीण अर्थव्यवस्था पूरी तरह चरमरा सकती है।

भोपाल से उड़ी मादा गिद्ध पहुंची पाकिस्तान, तूफान ने तोड़े पंख तो दुश्मनी भुलाकर मदद को आए पड़ोसी

महानगर मेट्रो ब्यूरो

भोपाल। वन विहार में ठीक होकर सरहद पार पहुंची एक दुर्लभ मादा गिद्ध पाकिस्तान में घायल हो गई। जीपीएस ट्रैकिंग और दोनों देशों के अधिकारियों के बीच त्वरित तालमेल से परिंदे की जान बचा ली गई है। मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल के वन विहार में नया जीवन पाने वाली एक दुर्लभ 'सिनेरियस वल्चर' एक बार फिर मौत के मुंह से बाहर आई है। इस बार सरहद पार पाकिस्तान में। जीपीएस ट्रैकिंग और भारत-पाकिस्तान के बीच हुए अनोखे समन्वय ने यह साबित कर दिया कि वन्यजीव संरक्षण के लिए सीमाएं कोई मायने नहीं रखतीं। खानेवाल जिले में ओलावृष्टि की वजह से गिद्ध के घायल होने के बाद भारतीय अधिकारियों के एक अलर्ट ने पाक प्रशासन को चौकन्ना किया और

उसकी जान बचा ली गई।

हलाली डैम से शुरू हुआ था सफर

करीब दो साल की इस मादा गिद्ध को पहली बार 22 जनवरी को शाजापुर के परसुलिया गांव से घायल अवस्था में रेस्क्यू किया गया था। भोपाल के वन विहार नेशनल पार्क और BNHS की टीम ने इसे फिट फॉर रिलीज़ घोषित करने के लिए वैज्ञानिक प्रोटोकॉल का पालन किया। 25 मार्च को इसे GPS-GSM टैग लगाया गया और 30 मार्च को रायसेन के हलाली डैम से खुले आसमान में छोड़ दिया गया।

जीपीएस सिग्नल रुकते ही उड़ी नींद

ट्रैकिंग डेटा के अनुसार, गिद्ध मध्य प्रदेश और राजस्थान होते हुए 6 अप्रैल को पाकिस्तान की सीमा में दाखिल हुई। लेकिन 7 अप्रैल को खानेवाल इलाके के पास अचानक सिग्नल मिलना बंद हो गया।

हमें पता चला कि उस क्षेत्र में भीषण ओलावृष्टि हुई है। हमने तुरंत को-ऑर्डिनेट्स WWF-पाकिस्तान के साथ साझा किए। वहां की टीम ने स्थानीय किसानों की मदद से घायल पक्षी को ढूंढ निकाला। यह वैज्ञानिक पुनर्वास और रीयल-टाइम मॉनिटरिंग की बड़ी जीत है। विजय कुमार, निदेशक, वन विहार नेशनल पार्क

क्यों महत्वपूर्ण है यह रेस्क्यू?

यह मिशन इसलिए खास है क्योंकि यह प्रवासी प्रजातियों के संरक्षण में इंटरनेशनल को-ऑर्डिनेशन की अहमियत बताता है। साल 2025 में भी इसी तरह एक यूरेशियन ग्रिफॉन वल्चर 4,300 किलोमीटर का सफर तय कर कजाकिस्तान पहुंची थी। अधिकारियों का मानना है कि इन रास्तों की समझ से भविष्य में गिद्धों के संरक्षण की रणनीति बनाने में मदद मिलेगी।

महिला डांसर की बेरहमी से हत्या..

महानगर मेट्रो ब्यूरो

सागर।सागर के खुरई शहर में एक दिल दहला देने वाली वारदात सामने आई है, जहां एक महिला की हत्या कर उसकी लाश को बेड बॉक्स के अंदर छिपा दिया गया. एक हफ्ते से लापता मां की तलाश में जब बच्चे घर पहुंचे, तो कमरे के अंदर का नजारा देखकर उनके होश उड़ गए. सागर जिले में एक महिला की हत्या का सनसनीखेज मामला सामने आया है. मृतका की पहचान 45 वर्षीय ममता अहिरवार के रूप में हुई है. ममता पिछले कई दिनों से लापता थी और उसका शव उसके अपने ही घर में रखे एक बेड बॉक्स से बरामद किया गया है. खुरई थाना इलाके के सहोदरा राय वार्ड का यह मामला है. ममता के बेटे देव और बेटी मुस्कान पिछले 10 दिनों से विदिशा में अपनी बड़ी बहन के पास थे. वे वहां अपने जीजा के साथ मिलकर काम की तलाश कर रहे थे. बच्चों ने बताया कि 5 अप्रैल के बाद से उनकी मां से कोई बात नहीं हुई थी. लगातार फोन लगाने पर भी मोबाइल बंद आ रहा था.अनहोनी की आशंका में जब दोनों रविवार को घर पहुंचे, तो मुख्य दरवाजे पर बाहर से ताला लगा था. पड़ोसियों की मदद से ताला तोड़कर जब वे अंदर घुसे, तो पूरे घर में असहनीय बदबू फैली हुई थी.

बेड बॉक्स में मिली लाश

तलाशी लेने पर बच्चों ने देखा कि कमरे में रखे बेड बॉक्स के अंदर उनकी मां का आधा-सड़ा हुआ शव पड़ा था. शव की हालत देखकर अंदाजा लगाया जा रहा है कि हत्या करीब 5-6 दिन पहले की गई होगी.सूचना मिलते ही SDOP अस्थाना पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे. पुलिस के अनुसार, प्रथम दृष्टया हत्या हालात को देखते हुए इसे साफ तौर पर हत्या का मामला माना जा रहा है. शव का पोस्टमॉर्टम करा लिया गया है. पुलिस को सोमवार शाम तक शॉर्ट पीएम रिपोर्ट मिलने की उम्मीद है, जिससे मौत के सटीक समय और तरीके का पता चल सकेगा.

आतिशबाजी ने बरपाया कहर, बिना पानी के आग बुझाने पहुंची फायर ब्रिगेड, ग्रामीणों ने हैंडपंप से बुझाई लपटें

महानगर मेट्रो ब्यूरो

राजगढ़, ब्यावरा क्षेत्र के कड़िया गांव में शादी समारोह के दौरान हुई आतिशबाजी से भीषण आग लग गई। हादसे में एक किसान का घर, ट्रैक्टर और झोपड़ी जलकर खाक हो गई। फायर ब्रिगेड की देरी ने नुकसान और बढ़ा दिया।

ब्यावरा में आतिशबाजी ने बरपाया कहर

राजगढ़ः जिले की सीमा पर बसे कड़िया गांव में रविवार दोपहर एक भीषण अग्निकांड ने शादी समारोह की खुशियों को राख में बदल दिया। 'पैरायनी' की रस्म के दौरान की गई आतिशबाजी की एक चिंगारी ने मांगीलाल लोधी के कच्चे मकान और मवेशियों की झोपड़ी को अपनी चपेट में ले लिया। इस हादसे में घर के अंदर रखा कीमती ट्रैक्टर-ट्रॉली और पूरी गृहस्थी जलकर खाक हो गई।

शादी की आतिशबाजी से धूं-धूं कर जला घर

कड़िया गांव में इन दिनों भागवत कथा और सामूहिक विवाह का आयोजन चल रहा था। रविवार को कृष्ण-रुक्मिणी विवाह के उल्लास के बीच जब आतिशबाजी की गई, तो उसकी चिंगारी पास ही स्थित मांगीलाल के मकान पर जा गिरी। देखते ही देखते आग ने विकराल रूप धारण कर लिया। ग्रामीणों ने अपनी सूझबूझ से झोपड़ी में बंधे मवेशियों को तो सुरक्षित बाहर निकाल लिया, लेकिन संपत्ति को नहीं बचा सके।

फायर ब्रिगेड ने किया तमाशा

हादसे के वक्त बिजली कटौती होने के कारण ग्रामीण ट्यूबवेल नहीं चला सके। सूचना के एक घंटे बाद जब बीनागंज नगर परिषद की फायर ब्रिगेड मौके पर पहुंची, तो वह खाली थी। उसमें पानी ही नहीं था। इसके बाद ब्यावरा से दमकल बुलाई गई, लेकिन तब तक किसान का सब कुछ जल चुका था। मजबूरन ग्रामीणों ने हैंडपंप, कुएं और शादी के पानी के टैंकरों से बर्तनों में भर-भरकर पानी डालकर आग पर काबू पाया।

कैसे हुआ हादसा?

यह हादसा दो बड़ी वजहों से गंभीर हुआ। पहला- सूखे मौसम में बस्ती के पास लापरवाही से की गई आतिशबाजी। दूसरा- बिजली विभाग की कटौती और दमकल विभाग की भारी लापरवाही। दमकल का बिना पानी के पहुंचना भी किसी मजाक से कम नहीं था।

पत्नी को किचन में जाने से रोकना क्रूरता, बॉम्बे हाई कोर्ट का पति के खिलाफ FIR रद्द करने से इनकार, सास को राहत

महानगर मेट्रो ब्यूरो

नागपुर : बॉम्बे हाई कोर्ट की नागपुर बेंच ने पति-पत्नी विवाद केस में एक फैसला सुनाया है। हाई कोर्ट ने कहा कि पत्नी को उसके ससुराल के किचन में जाने से रोकना, भारतीय दंड संहिता की धारा 498 के तहत मानसिक क्रूरता माना जाएगा। कोर्ट ने पति के खिलाफ FIR रद्द करने से इनकार कर दिया। हालांकि महिला की सास को हाई कोर्ट ने राहत दे दी। जस्टिस उर्मिला जोशी-फाल्के ने पाया कि नागपुर में रहने वाले पति के खिलाफ लगाए गए आरोपों से पहली नज़र में क्रूरता का मामला बनता है। जबकि सास के खिलाफ लगाए गए आरोप अस्पष्ट और बेबुनियाद हैं। बॉम्बे हाई कोर्ट ने कहा कि उसे तो किचन में जाने की भी इजाज़त नहीं थी, और उसे बाहर से खाना लाने के लिए कहा जाता था। साथ ही यह भी कहा कि इस चरण पर मानसिक क्रूरता का अनुमान लगाने के लिए ऐसा बर्ताव काफी है।

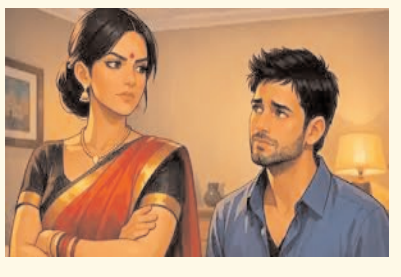

हार के डर से एसआईआर को मुद्दा बना रही ममता : मिथुन चक्रवर्ती

कोलकाता (एजेंसी)। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेता और बालीवुड अभिनेता मिथुन चक्रवर्ती ने कहा कि पश्चिम बंगाल में मतदाता सूचियों का विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) संवैधानिक प्रावधानों के अनुसार हुआ था, और उन्होंने तृणमूल कांग्रेस पर विधानसभा चुनावों में हार के डर से प्रक्रिया को मुद्दा बनाने का आरोप लगाया। बीजेपी नेता चक्रवर्ती ने कहा कि एसआईआर किसी के अधिकारों का उल्लंघन नहीं करता है। उन्होंने पश्चिम मेदिनीपुर जिले में एक रोड शो के दौरान बताया, किसी अन्य राज्य में एसआईआर कोई मुद्दा नहीं है। इस संविधान के अनुसार निर्वाचन आयोग द्वारा कराया गया है। तमिलनाडु में यह सुचारू रूप से संपन्न हुआ। पश्चिम बंगाल को छोड़कर कहीं और कोई समस्या नहीं आई थी। बीजेपी नेता चक्रवर्ती ने दावा किया, पश्चिम बंगाल में तृणमूल सरकार एसआईआर को लेकर हंगामा कर रही है, क्योंकि उन्हें (पार्टी पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं को) हार का डर सता रहा है।

हाईकोर्ट के फैसले को लेकर सुप्रीम कोर्ट पहुंची असम सरकार, पवन खेड़ा की बढ़ेंगी मुश्किलें

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस नेता पवन खेड़ा की मुश्किलें फिर बढ़ती नजर आ रही हैं। असम सरकार ने तेलंगाना हाईकोर्ट के उस फैसले को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी है, जिसमें पवन खेड़ा को एक हफ्ते की ट्रांजिट अग्रिम जमानत दी गई थी। असम सरकार की इस याचिका ने राजनीतिक गलियारों में हलचल मचा दी है। पूरा मामला तेलंगाना हाईकोर्ट के उस आदेश से जुड़ा है, जिसमें कोर्ट ने पवन खेड़ा को राहत देते हुए एक हफ्ते की ट्रांजिट अग्रिम जमानत मंजूर की थी। हाईकोर्ट का उद्देश्य खेड़ा को इतना समय देना था कि वह संबंधित निचली कोर्ट में जाकर अपनी नियमित जमानत याचिका दायर कर सकें। रिपोर्ट के मुताबिक असम सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में तेलंगाना हाईकोर्ट के उस आदेश के खिलाफ अपील की है जिसमें सीएम हिमंत बिस्वा सरमा की पत्नी रिंकी शर्मा के खिलाफ लगाए गए आरोपों को लेकर असम में दर्ज एक मामले के सिलसिले में पवन खेड़ा को एक हफ्ते की ट्रांजिट अग्रिम जमानत दी गई थी। असम सरकार का तर्क है कि पवन खेड़ा के खिलाफ लगाए गए आरोप गंभीर हैं और उन्हें इस तरह की राहत नहीं मिलनी चाहिए।

ईरान में फंसे 71 भारतीय मछुआरे सुरक्षित वतन लौटे, उमरगाम में जश्न का माहौल

वलसाड (एजेंसी)। गुजरात के वलसाड जिले के उमरगाम तालुका स्थित मरोली गांव और आसपास के इलाकों के लिए बड़ी राहत की खबर सामने आई है। लंबे समय से ईरान में फंसे करीब 71 भारतीय मछुआरे अब सुरक्षित भारत लौट आए हैं। यह संभव हो पाया है भारत सरकार के सफल कूटनीतिक प्रयासों के चलते। जानकारी के अनुसार, ये सभी मछुआरे रोजगार के सिलसिले में मछली पकड़ने के लिए ईरान गए थे। इसी दौरान ईरान और आसपास के क्षेत्रों में उत्पन्न युद्ध जैसे हालात और बिगड़ती भू-राजनीतिक स्थिति के कारण वे वहां फंस गए थे। इस घटना से उनके परिवारों में गहरी चिंता और बेचैनी का माहौल था। मछुआरों ने वीडियो संदेश के जरिए भारत सरकार और गुजरात सरकार से मदद की गुहार लगाई थी। इसके बाद वलसाड के सांसद और विदेश मंत्रालय की सक्रिय पहल पर ईरान स्थित भारतीय दूतावास ने राहत अभियान चलाकर सभी मछुआरों को सुरक्षित बाहर निकाला। सभी 71 मछुआरे भारत लौट चुके हैं और तय कार्यक्रम के अनुसार वे कल उमरगाम रेलवे स्टेशन पहुंचेंगे। उनकी वापसी की खबर मिलते ही मरोली गांव में खुशी का माहौल छा गया है। लंबे समय के इंतजार के बाद अपने प्रियजनों से मिलने को परिवार उत्सुक हैं। वतन लौटने के बाद मछुआरों ने भारत सरकार का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि वहां की स्थिति बेहद गंभीर थी, लेकिन समय पर मिली मदद ने उनकी जान बचा ली। वहीं, गांव के लोगों द्वारा उनके स्वागत की भव्य तैयारियां भी की जा रही हैं।

जोधपुर रेल मंडल की उपलब्धि : कबाड़ से कमाए 58 करोड़, राजस्व में 300 प्रतिशत की रिकॉर्ड वृद्धि

जोधपुर (एजेंसी)। उत्तर पश्चिम रेलवे के जोधपुर रेल मंडल ने वित्त वर्ष 2025-26 में एक अभूतपूर्व उपलब्धि हासिल की है। मंडल ने कबाड़ (स्क्रैप) निस्तारण के माध्यम से 58 करोड़ रुपये का रिकॉर्ड राजस्व अर्जित किया है, जो न केवल आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है बल्कि रेलवे की सुरक्षा और स्वच्छता के मानकों को भी नए स्तर पर ले गया है। यह सफलता इसलिए भी उल्लेखनीय है क्योंकि पिछले वित्त वर्ष के मुकाबले मंडल ने लगभग 300 प्रतिशत की प्रभावशाली वृद्धि दर्ज की है। पिछले वर्ष की तुलना में इस बार रेलवे के खजाने में करीब 43.48 करोड़ रुपये अधिक जमा हुए हैं। मंडल रेल प्रबंधक (डीआरएम) अनुराग त्रिपाठी के अनुसार, वित्त वर्ष 2025-26 के लिए रेलवे ने 15 हजार मीट्रिक टन स्क्रैप निस्तारण का लक्ष्य निर्धारित किया था। जोधपुर मंडल की टीम ने इस चुनौती को स्वीकार करते हुए न केवल लक्ष्य को समय रहते हासिल किया, बल्कि कुल 16,500 मीट्रिक टन कबाड़ का सफल निष्पादन कर लक्ष्य को भी पार कर लिया। डीआरएम ने स्पष्ट किया कि कबाड़ हटाना केवल राजस्व बढ़ाना नहीं है, बल्कि यह रेलवे के नॉन फेयर रेवेन्यू को मजबूती प्रदान करने का एक जरिया है, जिससे प्राप्त संसाधनों का उपयोग यात्री सुविधाओं को आधुनिक बनाने में किया जाता है। इस अभियान का सबसे बड़ा लाभ रेलवे की सुरक्षा और स्वच्छता में देखने को मिला है। रेल पटरियों, यार्डों और वर्कशॉप में वर्षों से पड़े अनुपयोगी लोहे, पुराने रेल ट्रैक और जंग लगे उपकरणों को हटाने से परिचालन अधिक सुरक्षित हो गया है। पुराने केबल और बेकार पड़े सामान हटने से शॉर्ट सर्किट और आग लगने जैसी घटनाओं का खतरा न्यूनतम हो गया है। साथ ही, यार्ड और स्टेशन क्षेत्रों में कबाड़ के ढेर हटने से विजिबिलिटी बढ़ी है, जिससे सुरक्षा निगरानी अधिक प्रभावी हो गई है। परिसर में खाली हुई जगह के कारण अब असामाजिक तत्वों की गतिविधियों पर भी लगाम कसना आसान हो गया है।

सोनिया गांधी ने महिला आरक्षण पर सवाल उठाते हुए कहा परिसीमन असली मुद्दा

चुनाव के बीच विशेष सत्र पर भी किए सवाल

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस संसदीय दल की प्रमुख सोनियां गांधी ने महिला आरक्षण को लेकर केंद्र सरकार की मंशा पर गंभीर सवाल उठाए हैं। उन्होंने दावा किया कि महिला आरक्षण के बहाने सरकार का असली एजेंडा परिसीमन है, जिस पर अब तक स्पष्ट जानकारी नहीं दी गई है। कांग्रेस नेत्री सोनियां गांधी ने अपने एक लेख में कहा, कि प्रधानमंत्री विपक्ष से उन विधेयकों का समर्थन मांग रहे हैं, जिन्हें संसद के विशेष सत्र में जल्दबाजी में पारित कराने की कोशिश की जा रही है। उन्होंने इस बात पर भी सवाल उठाया कि जब तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल में चुनाव प्रचार अपने चरम पर है, तब इस विशेष सत्र को बुलाने की क्या आवश्यकता थी?

सोनिया गांधी ने कहा, यह पूरा कदम राजनीतिक लाभ हासिल करने के उद्देश्य से

उठाया गया है। उन्होंने याद दिलाया कि सरकार 2023 में ही 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम' पारित कर चुकी है, लेकिन इसे लागू करने की शर्त अगली जनगणना और परिसीमन से जोड़ी गई है। ऐसे में उन्होंने कहा कि वर्तमान सत्र में महिला आरक्षण नहीं, बल्कि परिसीमन असली मुद्दा है, जो संविधान के लिए चिंताजनक हो सकता है। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि विपक्ष पहले ही मांग कर चुका है कि महिला आरक्षण को 2024 के आम चुनाव से लागू किया जाए। राज्यसभा में विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खड़गे ने भी साल 2024 में इस संबंध में सरकार से आग्रह किया था, लेकिन इसे स्वीकार नहीं किया गया। अब सरकार अनुच्छेद 334-ए में संशोधन कर इसे 2029 से लागू करने की तैयारी कर रही है।

सोनिया गांधी ने सवाल उठाया है, कि इस फैसले पर सरकार को यू-टर्न लेने में 30 महीने क्यों लगे और पांच राज्यों के चुनाव खत्म होने तक इंतजार क्यों नहीं किया गया? उन्होंने यह भी कहा कि विपक्ष तीन बार पत्र लिखकर 29 अप्रैल को सर्वदलीय बैठक बुलाने की मांग कर चुका है, लेकिन उस पर कोई ध्यान नहीं दिया गया।

खड़गे ने विशेष सत्र की टाइमिंग को लेकर की आपत्ति

इस बीच कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पत्र लिखकर विशेष सत्र की टाइमिंग पर आपत्ति जताई है। उन्होंने कहा कि चुनावों के बीच इस तरह का कदम यह दर्शाता है कि सरकार इस कानून को राजनीतिक लाभ के लिए जल्दबाजी में लागू करना चाहती है। साथ ही, उन्होंने परिसीमन से जुड़े मुद्दों पर विस्तृत चर्चा के लिए सर्वदलीय बैठक बुलाने की मांग दोहराई है।

सुप्रीम कोर्ट ने लालू को दिया झटका, एफआईआर रद्द करने वाली याचिका की खारिज

नई दिल्ली (एजेंसी)। बिहार के पूर्व सीएम लालू प्रसाद यादव को लैंड फॉर जॉब मामले में सुप्रीम कोर्ट ने झटका दिया है। सुप्रीम कोर्ट ने उनके खिलाफ दर्ज एफआईआर रद्द करने वाली याचिका खारिज कर दी है। सुप्रीम कोर्ट ने लालू यादव को एक राहत भी दी है। उन्हें अधीनस्थ कोर्ट की कार्यवाही में पेशी से छूट दी गई है। बता दें लालू प्रसाद यादव ने जमीन के बदले नौकरी मामले में सीबीआई द्वारा दर्ज की गई एफआईआर और चार्जशीट दोनों रद्द करने की मांग की थी। हालांकि कोर्ट ने उनकी याचिका पर सुनवाई करने से इनकार कर दिया। जस्टिस एमएम सुंदरेश और जस्टिस एन कोटिश्वर की बेंच ने कहा कि लालू यादव को ट्रायल कोर्ट में पेश होने की जरूरत नहीं। लालू यादव की तरफ से तर्क देते हुए कहा गया था कि सीबीआई ने मुकदमा चलाने के लिए कोई कानूनी मंजूरी नहीं ली। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि इस मामले को वह निचली अदालत में भी उठा सकते हैं। आरजेडी नेता लालू यादव ने कहा था कि उनके परिवार के कई सदस्यों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है जो कि रद्द होनी चाहिए। इस मामले में उन्हें दिल्ली हाईकोर्ट से पहले भी झटका लग चुका है।

बिहार में 15 को हो सकता है नए मुख्यमंत्री का शपथ ग्रहण, पीएम के शामिल होने की संभावना

पटना (एजेंसी)। बिहार की सियासत में बड़े बदलाव की पटकथा लिखी जा चुकी है। राज्य में नए मुख्यमंत्री के नाम की घोषणा के लिए 14 अप्रैल का दिन बेहद महत्वपूर्ण होने वाला है, जब औपचारिक रूप से विधायक दल के नेता का चुनाव किया जाएगा। सूत्रों से मिल रही जानकारी के अनुसार, 15 अप्रैल को आयोजित होने वाले भव्य शपथ ग्रहण समारोह में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी स्वयं शामिल हो सकते हैं। इस कार्यक्रम में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और भाजपा के अन्य वरिष्ठ नेताओं के भी मौजूद रहने की उम्मीद है।

सत्ता हस्तांतरण की इस प्रक्रिया को सुचारू रूप से संपन्न कराने के लिए केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान 14 अप्रैल को बतौर पर्यवेक्षक पटना पहुंच रहे हैं। उनकी मौजूदगी में भाजपा विधायक दल की बैठक होगी, जिसमें मुख्यमंत्री के नाम पर अंतिम मुहर लगाई जाएगी। इसी दिन मौजूदा मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की कैबिनेट की आखिरी बैठक बुलाई गई है, जिसके बाद उनके पद से इस्तीफा देने की पूरी संभावना है। प्रशासनिक गलियारों में चर्चा है कि प्रधानमंत्री 14 अप्रैल की शाम ही पटना पहुंच सकते हैं और राजभवन या सुरक्षित स्थान पर रात्रि विश्राम के बाद अगले दिन यानी 15 अप्रैल को समारोह में शिरकत करेंगे।

हालांकि, नए मुख्यमंत्री के चेहरे को लेकर सस्पेंस अभी भी बरकरार है। राजनीतिक गलियारों में उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी का नाम सबसे मजबूती से उभरा है, लेकिन केंद्रीय मंत्री नित्यानंद राय समेत कुछ अन्य नामों पर भी कयास लगाए जा रहे हैं। भाजपा आलाकमान राज्य के जातीय समीकरणों और आगामी राजनीतिक चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए किसी ऐसे नाम पर दांव लगाना चाहता है, जो सर्वमान्य हो। विधायक दल की बैठक के बाद एनडीए के घटक दलों के साथ संयुक्त चर्चा होगी, जिसके बाद नेता के नाम का आधिकारिक ऐलान कर दिया जाएगा। शपथ ग्रहण समारोह के लिए पटना के बापू सभागार और लोकभवन को विकल्प के तौर पर तैयार रखा जा रहा है। माना जा रहा है कि पहले चरण में मुख्यमंत्री के साथ केवल उपमुख्यमंत्री और कुछ बेहद महत्वपूर्ण विभागों के मंत्रियों को ही शपथ दिलाई जाएगी, जबकि मंत्रिमंडल का पूर्ण विस्तार बाद के चरणों में किया जाएगा। फिलहाल पूरी राजधानी की सुरक्षा व्यवस्था चाक-चौबंद कर दी गई है और बिहार की जनता की निगाहें 14 और 15 अप्रैल की गतिविधियों पर टिकी हैं।

कांग्रेस को जीत नहीं दिला पा रहे राहुल गांधी, पार्टी में उन्हें हटाने का माहौल: फडणवीस

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र के सीएम देवेंद्र फडणवीस ने राहुल गांधी पर निशाना साधा। उन्होंने दावा किया है कि कांग्रेस में उन्हें हटाने का माहौल बन रहा है, क्योंकि वह पार्टी को चुनाव में जीत नहीं दिला पा रहे हैं। फडणवीस ने यह बात एक कार्यक्रम में पत्रकारों से कही। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी केवल अपने अस्तित्व के लिए लड़ रहे हैं और अपने नेतृत्व को लगातार मिल रही हार से बचाने की कोशिश कर रहे हैं। फडणवीस ने दावा किया कि राहुल पार्टी के लिए चुनावी जीत सुनिश्चित करने में असमर्थ हैं। वह अपनी पार्टी के भीतर जारी संघर्ष से ध्यान हटाने के लिए ऐसे बयान देते हैं।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक सीएम फडणवीस ने कहा कि राहुल गांधी आरोप लगाए थे कि बीजेपी और आरएसएस का उद्देश्य संविधान को खत्म करना है क्योंकि वे नहीं चाहते कि भारत में सभी को समान माना जाए। उन्होंने मंडी हाउस से 14 अप्रैल को भीमराव

आंबेडकर की जयंती से पहले यहां रन फॉर आंबेडकर, रन फॉर कॉन्स्टीट्यूशन मैराथन शुरू होने से पहले एकत्रित लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि आंबेडकर का मुख्य संदेश संविधान का था। संविधान के बिना जिसे हम भारत कहते हैं, वह नहीं होता। उन्होंने कहा था आज जो लोग आरएसएस-बीजेपी की सोच के हैं, वे संविधान को खत्म करना चाहते हैं। वे कुछ भी कहें, उनका असली उद्देश्य संविधान को मिटाना है क्योंकि वे नहीं चाहते कि भारत में सभी को समान माना जाए।

बता दें शनिवार को समाज सुधारक ज्योतिराव फुले की स्मृति में आयोजित समारोह में पीएम मोदी और राहुल गांधी की मुलाकात हुई थी। यह बातचीत इसलिए खास है क्योंकि सार्वजनिक कार्यक्रमों में दोनों नेताओं को शिष्टाचार का आदान-प्रदान करने के अलावा शायद ही कभी एक-दूसरे से बात करते देखा जाता है। पीएम जब फुले की जयंती के अवसर पर उनकी प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित करने पहुंचे, तो लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी समेत कई गणमान्य व्यक्ति एक पंक्ति में खड़े थे। सभी का हाथ जोड़कर अभिवादन करने के बाद पीएम मोदी, राहुल गांधी के पास रुके और उनसे बातचीत करने लगे। यह पता नहीं चल पाया कि एक मिनट की इस बातचीत में उन्होंने किस बारे में बात की।

खरगे के बयान पर सिंघवी का पलटवार गुजरातियों को मूर्ख समझने वालों को करारा जबाव मिलेगा

अहमदाबाद (एजेंसी)। गुजरात में लोकल निकाय चुनावों का बिगुल बज चुका है और इसके साथ ही राजनीतिक बयानबाजी शुरु हो गई है। वडोदरा में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नगर निगम चुनाव अभियान का आगाज करते हुए गृह मंत्री (उपमुख्यमंत्री स्तर के नेता) हर्ष संघवी ने विपक्ष पर तीखा हमला बोला है। उन्होंने कहा कि गुजरात की जनता का अपमान करने वालों को आने वाले चुनावों में करारा सबक मिलेगा। दरअसल कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने कुछ दिन पहले गुजरात के लोगों को ''अशिक्षित'' कहकर दावा किया था कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी उन्हें ''बेवकूफ'' बना रहे हैं। राज्य के गृह मंत्री संघवी ने कांग्रेस अध्यक्ष खरगे के बयान के एक सप्ताह के बाद यह बात कही है। गुजरात में 34 जिला पंचायतों, 260 तालुका पंचायतों, 84 नगरपालिकाओं और 15 नगर निगमों (जिनमें अहमदाबाद, सूरत और वडोदरा शामिल हैं) के लिए चुनाव 26 अप्रैल को होगा। मतगणना 28 अप्रैल को होगी। संघवी ने कहा, ''गुजरात से नफरत करने वाले और गुजरातियों को मूर्ख समझने वालों को हर जिले में करारा जवाब मिलेगा। उन्होंने कहा कि गुजरात की जनता और भाजपा एक बड़ा परिवार है। उपमुख्यमंत्री ने कहा कि भाजपा की प्रदेश इकाई के अध्यक्ष जगदीश विश्वकर्मा, मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल और गुजरात की जनता सामूहिक रूप से 2026 के स्थानीय निकाय चुनाव में नया इतिहास रचने के उद्देश्य से आगे बढ़ रही है।

बाबा खरात के 11 ठिकानों पर ईडी का छापा, हो सकता है बड़े नेटवर्क का खुलासा

-अजीब और गोलमोल जवाब देकर जांच एजेंसियों को उलझा रहा, पत्नी है फरार

नासिक (एजेंसी)। नासिक का फर्जी बाबा अशोक खरात मामले अब और गहराता जा रहा है, जिस शख्स पर लोगों को धोखा देने, दुष्कर्म और करोड़ों की ठगी के आरोप हैं, अब उसकी संपत्तियों पर ईडी की छापेमारी ने पूरे मामले को नई दिशा दे दी है। 11 जगहों पर एक साथ छापेमारी ने साफ कर दिया है कि मामला सिर्फ बाबा तक सीमित नहीं है, इसके पीछे बड़ा नेटवर्क हो सकता है। सबसे हैरान करने वाली बात यह है कि पूछताछ में बाबा अशोक खरात बार-बार अजीब और गोलमोल जवाब देकर जांच एजेंसियों को उलझा रहा है। ऐसे में सवाल उठता है कि क्या वह सच्चाई छिपा रहा है या सच में उसके सीने में बड़ा राज दफन है?

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक ईडी की इस कार्रवाई ने मामले को सिर्फ आपराधिक ही नहीं, बल्कि आर्थिक अपराध के दायरे में ला दिया है। बाबा खरात के घर, ऑफिस, फार्महाउस और मंदिर तक पर छापा मारा गया है जिससे पता चलता है कि जांच एजेंसियां हर पहलू को खंगाल रही हैं। इस बीच उसकी फरार पत्नी कल्पना खरात का रहस्य

भी मामले को उलझा रहा है। पुलिस पिछले कई दिनों से उनकी तलाश कर रही है, लेकिन अब तक कोई सुराग नहीं मिला है। खुद बाबा अशोक खरात का यह कहना कि 'मेरी पत्नी कहां है, यह सिर्फ भगवान जानते हैं' जांच को और पेचीदा बना देता है।

ईडी ने नासिक में बाबा खरात से जुड़े 11 ठिकानों पर एक साथ छापेमारी की है। इनमें उसका घर, ऑफिस, फार्महाउस और ईशान्यश्वर मंदिर जैसी संपत्तियां शामिल हैं। जांच एजेंसियों को उम्मीद है कि इन ठिकानों से कई अहम दस्तावेज और डिजिटल सबूत मिल सकते हैं। यह छापेमारी इस बात का संकेत है कि मामला अब बड़े आर्थिक घोटाले की ओर बढ़ रहा है और आने वाले दिनों में और बड़े खुलासे हो सकते हैं। पूछताछ में बाबा अशोक खरात का रवैया जांच एजेंसियों के लिए चुनौती बना हुआ है।

इस बीच पुलिस और एसआईटी बाबा की पत्नी कल्पना खरात की तलाश कर रही हैं। उसके खिलाफ नोटिस जारी किया है ताकि वे देश छोड़कर भाग न सकें। कल्पना ने अग्रिम जमानत के लिए कोर्ट का दरवाजा खटखटाया है, लेकिन अभी तक उन्हें राहत नहीं मिली है। जांच एजेंसियां मान रही हैं कि उसकी गिरफ्तारी से मामले में कई अहम कड़ियां जुड़ सकती हैं। बाबा अशोक खरात को सोमवार को नासिक की कोर्ट में पेश किया क्योंकि उसकी पुलिस हिरासत खत्म हो रही है। एसआईटी इस मामले में उसे एक और केस में हिरासत में लेने की तैयारी कर रही है। अब तक हुई जांच और बरामद सबूतों की पूरी जानकारी अदालत को दी जाएगी। संभावना है कि आगे की जांच में और बड़े नाम सामने आ सकते हैं और मामले की दिशा बदल सकती है।

कर्नाटक : कैबिनेट में फेरबदल या मुख्यमंत्री बदलने की कवायद को लेकर दिल्ली में डाला ढेरा

बेंगलुरु (एजेंसी)। कर्नाटक की राजनीति में एक बार फिर हलचल तेज हो गई है। राज्य की सत्ताधारी कांग्रेस पार्टी के भीतर कैबिनेट विस्तार और फेरबदल की मांग को लेकर असंतोष के स्वर उभरने लगे हैं। ताजा घटनाक्रम में करीब 30 वरिष्ठ कांग्रेस विधायक दिल्ली के लिए रवाना हो गए हैं, जिससे मुख्यमंत्री सिद्धारमैया सरकार पर दबाव बढ़ता दिख रहा है। ये विधायक दिल्ली में आलाकमान, विशेषकर राहुल गांधी से मुलाकात कर कैबिनेट में जगह देने की गुहार लगा सकते हैं। या फिर मुख्यमंत्री बदलने की प्रक्रिया का हिस्सा होने की भी आशंका जताई जा रही है।

विधायकों के इस कदम का मुख्य उद्देश्य कैबिनेट में नए चेहरों को शामिल करवाना है। कांग्रेस विधायक बेलूर गोपालकृष्ण ने इस गुट की मंशा स्पष्ट करते हुए कहा कि कई ऐसे नेता हैं जिन्हें तीन से पांच बार मंत्री बनने का मौका मिला है। अब समय आ गया है कि उन वरिष्ठ सदस्यों को अवसर दिया जाए जो अब तक वंचित रहे हैं। वहीं, विधायक अशोक पाटन ने याद दिलाया कि मुख्यमंत्री ने पहले दो साल बाद बदलाव के संकेत दिए थे, लेकिन अब तीन साल बीत जाने के बाद भी फेरबदल का इंतजार बना हुआ है। हैरानी की बात यह है कि केवल अनुभवी नेता ही नहीं, बल्कि पहली बार जीतकर आए विधायक भी मंत्री पद के लिए अपनी दावेदारी मजबूती से पेश कर रहे हैं। मांड्या से विधायक रविकुमार गौड़ा ने बताया कि लगभग 38 नए विधायकों ने नेतृत्व को पत्र लिखकर मांग की है कि प्रस्तावित फेरबदल में उनमें से कम से कम पांच को मंत्री बनाया जाए। उनका तर्क है कि राज्य की सेवा के लिए नए दृष्टिकोण की भी आवश्यकता है। वरिष्ठ विधायकों की मांग है कि कम से कम 20 नए चेहरों को कैबिनेट में स्थान मिले। इस बीच, विपक्ष ने सत्तारूढ़ दल की इस आंतरिक खींचतान पर निशाना साधा है। विधानसभा में विपक्ष के नेता आर. अशोक ने दावा किया कि यह दिल्ली यात्रा केवल मंत्री पद के लिए नहीं, बल्कि नेतृत्व परिवर्तन के दबाव का हिस्सा है। उन्होंने आरोप लगाया कि विधायकों का एक गुट उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार को मुख्यमंत्री बनाने की पैरवी कर रहा है, जबकि दूसरा गुट सिद्धारमैया को बनाए रखना चाहता है। हालांकि, दिल्ली गए विधायकों ने इसे केवल कैबिनेट में उचित प्रतिनिधित्व की मांग बताया है। अब सारा फैसला कांग्रेस आलाकमान और मुख्यमंत्री के हाथ में है कि वे इस असंतोष को कैसे शांत करते हैं।

आधी आबादी ही है जो ममता दीदी की ताकत बनी हुई है, भाजपा नहीं दे पा रही मात!

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल की राजनीति और विधानसभा चुनावों का विश्लेषण करने वाले विशेषज्ञों के लिए ममता बनर्जी की सत्ता में निरंतरता एक शोध का विषय रही है। देश की सबसे शक्तिशाली पार्टी भाजपा की तमाम कोशिशों के बावजूद, मुख्यमंत्री ममता बनर्जी और तृणमूल कांग्रेस का दुर्ग अभेद्य बना हुआ है। इस राजनीतिक मजबूती के पीछे की सबसे बड़ी ताकत ममता बनर्जी की महिला ब्रिगेड है, जो न केवल पार्टी के शीर्ष पदों पर आसीन है, बल्कि जमीनी स्तर पर संगठन की रीढ़ बनकर उभरी है।

71 वर्षीया ममता बनर्जी, जिन्हें उनके समर्थक दीदी कहकर पुकारते हैं, ने अपनी सादगीपूर्ण छवि और संघर्षशील व्यक्तित्व के साथ महिलाओं को अपनी राजनीति के केंद्र में रखा है। कन्याश्री, लक्ष्मी भंडार और स्वास्थ्य साथी जैसी कल्याणकारी योजनाओं ने राज्य में एक वफादार महिला वोट बैंक तैयार किया है। लेकिन ममता की शक्ति केवल वोट बैंक तक सीमित नहीं है; उन्होंने महिलाओं का एक ऐसा नेतृत्व ढांचा तैयार किया है जो संगठन और सरकार दोनों को मजबूती प्रदान करता है। तृणमूल कांग्रेस चुनावों में लगभग 40 प्रतिशत टिकट महिलाओं को देती है, जो अन्य राष्ट्रीय दलों की तुलना में कहीं अधिक है।

इस महिला ब्रिगेड में सबसे अनुभवी चेहरों में 70 वर्षीया चंडीमा भट्टाचार्य शामिल हैं। राज्य के वित्त और भूमि जैसे महत्वपूर्ण विभागों की मंत्री चंडीमा, सिंगुर-नंदीग्राम आंदोलन के समय से ममता की भरोसेमंद सहयोगी रही हैं। पेशे से वकील चंडीमा पर नेतृत्व का अटूट विश्वास ही है कि 2016 में चुनाव हारने के बावजूद उन्हें उपचुनाव के जरिए वापस लाया गया और मंत्री पद सौंपा गया। वहीं, 63 वर्षीया डॉ. शशि पांजा, जो महिला एवं बाल विकास मंत्रालय संभाल रही हैं, ने कन्याश्री जैसी योजनाओं को जमीनी स्तर पर सफल बनाने में अहम भूमिका निभाई है। संसदीय राजनीति में बारासात से सांसद डॉ. काकोली घोष दस्तीदार और राज्यसभा में पार्टी की मुखर आवाज डोला सेन जैसे नाम ममता बनर्जी के पुराने और संघर्ष के दिनों के साथी हैं। युवा नेतृत्व में संथाली फिल्मों से राजनीति में आईं बिरबाहा हांसदा जनजातीय क्षेत्रों में पार्टी का प्रमुख चेहरा हैं। इसके अलावा, कृष्णा चक्रवर्ती जैसी नेता पिछले चार दशकों से ममता बनर्जी के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी हैं। अब जब ममता बनर्जी चौथी बार सत्ता में लौटने की तैयारी कर रही हैं, तो उनकी यह सशक्त महिला ब्रिगेड कोलकाता की सड़कों से लेकर दिल्ली के गलियारों तक चुनावी बिसात बिछाने में जुट गई है। यह नेतृत्व ही टीएमसी को बंगाल की राजनीति में अन्य दलों से अलग और मजबूत बनाता है।

65 से बढ़कर 3330 पर पहुंचा शेयर, 5 साल में निवेशकों की बदली किस्मत

नईदिल्ली, एजेंसी। कोरोना के दौर में कुछ शेयरों ने चौंकाने वाला रिटर्न दिया। ऐसा ही एक शेयर बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज का है। इस शेयर से सिर्फ पांच साल में निवेशकों को 4900 प्रतिशत से ज्यादा का रिटर्न मिला।

शेयर बाजार में कई ऐसे स्टॉक हैं जिन्होंने कम समय में निवेशकों को मल्टीबैगर रिटर्न दिया है। खासतौर पर कोरोना के दौर में कुछ शेयरों ने चौंकाने वाला रिटर्न दिया। ऐसा ही एक शेयर बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज का है। इस कंपनी के शेयर की कीमत पांच साल पहले 65 से बढ़कर 3330 हो गई। इस तरह, सिर्फ पांच साल में निवेशकों को 4900 प्रतिशत से ज्यादा का रिटर्न मिला। अगर रकम के हिसाब से देखें तो साल 2021 में किया गया 1 लाख का निवेश बढ़कर लगभग 50 लाख के आसपास हो गया होगा।

बीएसई को लेकर नया अपडेट

बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज को सेबी से फोकस्ड इंडेक्स पर डेरिवेटिव्स कॉन्ट्रैक्ट लॉन्च करने की मंजूरी मिली है। यह डेरिवेटिव्स सेगमेंट में अपने उत्पादों की चेन को मजबूत करने की दिशा में एक अहम कदम है। बीएसई फोकस्ड आइटी इंडेक्स, इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी सेक्टर की 14 कंपनियों के परफॉर्मेंस को ट्रैक करता है, जिससे निवेशकों को इस सेक्टर के लिए एक खास बेंचमार्क मिलता है। एक्सचेंज के मुताबिक लॉन्च की टाइमलाइन और कॉन्ट्रैक्ट से जुड़ी खास बातों के बारे में और जानकारी अलग-अलग सर्कुलर के जरिए दी जाएगी।

वर्तमान में शेयर का हाल- बीएसई के शेयर अपनी पिछली क्लोजिंग 3,257.40 रुपये के मुकाबले 3,310 रुपये पर खुले और 3,330 रुपये तक पहुंच गए। इस दौरान शेयर 3,234 रुपये के लो पर भी आया। शेयर की क्लोजिंग 3,281.20 रुपये पर हुई। बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज ने बीते 9 फरवरी को एफवाय26 की तीसरी तिमाही के नतीजे जारी किए थे। इस तिमाही में मुनाफा 601.81 करोड़ रुपये रहा। यह पिछले वित्त वर्ष की इसी तिमाही में बताए गए 219.67 करोड़ रुपये के नेट प्रॉफिट से 174 प्रतिशत की साल-दर-साल बढ़ोतरी है। इस बीच, तिमाही के दौरान कंपनी का ऑपरेशन से रेवेन्यू लगभग 62 प्रतिशत वायओवाय बढ़कर 1,244.10 करोड़ रुपये हो गया। यह भारत के सबसे पुराने और सबसे बड़े स्टॉक एक्सचेंजों में से एक है, जिसकी स्थापना 1875 में हुई थी। यह इक्विटी, डेरिवेटिव और डेट सिक्योरिटीज जैसे अलग-अलग फाइनेंशियल इंस्ट्रूमेंट्स में ट्रेडिंग के लिए एक प्लेटफॉर्म प्रोवाइड करके भारतीय कैपिटल मार्केट में एक अहम भूमिका निभाता है। यह अपने मजबूत तकनीकी इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए जाना जाता है और इसने ऑन-लाइन ट्रेडिंग सिस्टम जैसे इनोवेशन की शुरुआत की है। म्यूचुअल फंड उद्योग में भी अहम भूमिका निभा रहा है।

टाइटन के शेयरों में लगाए गए 1 लाख रुपये

● अब 44 लाख रुपये से ज्यादा हो गए

नईदिल्ली, एजेंसी। गोल्ड और टाइटन के पिछले 16 साल के रिटर्न की बात करें तो टाइटन के शेयरों में लगाए गए 1 लाख रुपये अब 44 लाख रुपये से ज्यादा हो गए हैं। वहीं, 1 लाख रुपये से खरीदे गए गोल्ड के दाम अब 8 लाख रुपये के ऊपर पहुंच गए हैं। गोल्ड को सबसे सुरक्षित निवेश विकल्पों में से एक माना जाता है।

निवेशकों को मालामाल करने के मामले में भी गोल्ड का कोई जवाब नहीं है।

हालांकि, अगर आप जोखिम उठा सकते हैं तो मजबूत फंडामेंटल्स वाली कंपनियों के शेयरों में भी आपको छप्परफाड़ रिटर्न मिल सकता है।

हमने गोल्ड और शेयर के रिटर्न की एक तुलना करने की कोशिश की है। हालांकि, दोनों बिल्कुल अलग-अलग निवेश विकल्प हैं और दोनों के अपने नफा-नुकसान हैं। हमने गोल्ड और ज्वैलरी बिजनेस से जुड़ी टाटा ग्रुप की कंपनी टाइटन के शेयरों में 1-1 लाख रुपये के निवेश के आधार पर कैलकुलेशन किया है। निवेश की अवधि हमने 16 साल रखी है तो आइए जानते हैं कि गोल्ड और टाटा ग्रुप के स्टॉक टाइटन, किसने निवेशकों को ज्यादा रिटर्न दिया।

टाइटन ने जून 2011 में अपने शेयरधारकों को 1:1 के रेशियो में बोनस शेयर दिए। यानी, कंपनी ने हर 1 शेयर पर 1 बोनस शेयर दिया।

साथ ही, टाइटन ने जून 2011 में ही 10:1 के रेशियो में अपने शेयर का बंटवारा (स्टॉक स्प्लिट) किया।

बोनस शेयर और स्टॉक स्प्लिट जोड़ लें तो शेयरों की कुल संख्या 960 पहुंच जाती है। टाइटन के शेयर शुक्रवार 10 अप्रैल 2026 को में 4,505 रुपये पर बंद हुए हैं। इस हिसाब से 960 शेयरों की मौजूदा वैल्यू 44.86 लाख रुपये होती है।

गोल्ड में लगाए गए 1 लाख रुपये अब बन गए 8 लाख रुपये से ज्यादा

गोल्ड ने भी अपने निवेशकों को तगड़ा रिटर्न दिया है। पिछले दिनों ही गोल्ड के दाम 1,75,000 रुपये प्रति 10 ग्राम के ऊपर पहुंच गए थे। अगर 16 साल पहले गोल्ड में लगाए गए 1 लाख रुपये का कैलकुलेशन देखें तो अप्रैल 2010 में 24 कैरेट गोल्ड का रेट 18,500 रुपये प्रति 10 ग्राम पर था।

टाइटन के शेयरों में लगाए गए 1 लाख रुपये

अब बने 44 लाख से ज्यादा टाटा ग्रुप की कंपनी टाइटन के शेयर 20 अप्रैल 2010 को 2046.10 रुपये पर थे। अगर किसी व्यक्ति ने 20 अप्रैल 2010 को टाइटन के शेयरों में 1 लाख रुपये लगाए होते तो उसे कंपनी के 48 शेयर मिलते।

सैलरी से लेकर पेंशन तक पर होगी बात

8वें वेतन आयोग के लिए सोमवार को बड़ी बैठक

नईदिल्ली, एजेंसी। केंद्रीय कर्मचारियों के लिए 13 अप्रैल की तारीख काफी अहम है। इस दिन आठवें वेतन आयोग के लिए अपना मेमोरेंडम फाइनल किया जाएगा। इसके लिए नेशनल काउंसिल ऑफ जॉइंट कंसल्टेटिव मशीनरी की अहम बैठक होने वाली है। यह बैठक इसलिए अहम है क्योंकि कर्मचारियों के प्रतिनिधि सैलरी, पेंशन और सेवा शर्तों से जुड़ी अपनी मांगों को एक साझा मेमोरेंडम में इकट्ठा कर रहे हैं, जिसे 8वें वेतन आयोग को सौंपा जाएगा। ऑल इंडिया डिफेंस एम्प्लॉइज फेडरेशन के सी. श्रीकुमार ने इकोनॉमिक टाइम्स को बताया कि 13 अप्रैल की बैठक में संभवतः एक साझा ज्ञापन को अंतिम रूप दिया जाएगा। रेलवे, रक्षा और अन्य क्षेत्रों के कर्मचारी प्रतिनिधियों के साथ मिलकर इस बैठक में अपने प्रस्तावों पर चर्चा करेगा और उन्हें अंतिम रूप देगा। फिटमेंट फैक्टर की होगी बड़ी भूमिका

आठवें वेतन आयोग की सिफारिशों में फिटमेंट फैक्टर की बड़ी भूमिका होगी। इसका इस्तेमाल सरकारी कर्मचारियों की सैलरी, पेंशन और भत्तों को रिवाइज करने के लिए किया जाता है। केंद्रीय कर्मचारियों का सैलरी स्ट्रक्चर अभी 7वें वेतन आयोग के फिटमेंट फैक्टर पर आधारित है, जिसे 2016 में लागू किया गया था। आयोग ने 2.57 का फिटमेंट फैक्टर इस्तेमाल किया था। आठवें वेतन आयोग में कुछ कर्मचारी समूह 3.15 के फिटमेंट फैक्टर की मांग कर रहे हैं। वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी ने पिछले महीने संसद में कहा था कि 8वां वेतन आयोग केंद्र सरकार के कर्मचारियों के वेतन, भत्ते, पेंशन और अन्य लाभों पर अपनी सिफारिशें देगा।

वेतन आयोग की 24 अप्रैल को बैठक

वेतन आयोग की बैठक 24 अप्रैल, 2026 को उत्तराखंड की राजधानी देहरादून में होगी। 8वें वेतन आयोग ने कर्मचारियों, पेंशनभोगियों, संगठनों, यूनियनों और अन्य हितधारकों से वेतन, पेंशन, भत्ते और नौकरी से संबंधित अन्य मामलों के संबंध में सुझाव और अभ्यावेदन आमंत्रित किए हैं।

12 मार्च को भी हुई थी बैठक

बता दें कि 13 अप्रैल की यह बैठक 12 मार्च को हुई पिछली चर्चाओं के बाद हो रही है। इस बैठक में ड्राफ्टिंग कमिटी के सदस्यों ने संयुक्त ज्ञापन में शामिल किए जाने वाले मुख्य प्रस्तावों पर चर्चा की थी। वहीं, एनसी-जेसीएम (स्टाफ साइड) के सचिव शिव गोपाल मिश्रा ने 1 अप्रैल के एक पत्र में आयोग से आग्रह किया था कि अंतिम प्रस्ताव जमा करने से पहले, वह अपनी प्रश्नावली में नौ अतिरिक्त बिंदुओं पर विचार करे।.

डीए ऐलान के बाद भी 4 महीने का एरियर केंद्रीय कर्मचारियों की सैलरी पर बड़ा असर

नईदिल्ली, एजेंसी। आमतौर पर केंद्र सरकार मार्च के महीने में होली के आसपास डीए बढ़ोतरी का ऐलान कर देती है। यह साल की पहली छमाही के लिए लागू होता है।अप्रैल महीने के 10 दिन से भी ज्यादा बीत चुके हैं लेकिन अब तक कर्मचारियों के डीए बढ़ोतरी का ऐलान नहीं हुआ। केंद्रीय कर्मचारियों के महंगाई भत्ता यानी डीए में इजाफे का इंतजार बढ़ता जा रहा है। अप्रैल महीने के 10 दिन से भी ज्यादा बीत चुके हैं लेकिन अब तक कर्मचारियों के डीए बढ़ोतरी का ऐलान नहीं हुआ। इस देरी की वजह से अब केंद्रीय कर्मचारियों की अप्रैल की सैलरी पर भी असर पड़ने की आशंका है। आइए समझते हैं पूरा मामला।

क्या कहते हैं एक्सपर्ट

फाइनेंशियल एक्सपर्ट्स इस बात से सहमत हैं कि पिछले सालों के मुकाबले इस बार डीए में थोड़ी देरी हुई है। अधिल शेट्टी ने मनीकंट्रोल से इसकी वजह बताते हुए कहा- यह शायद एडमिनिस्ट्रेटिव सीक्वेंसिंग और 8वें फ्रेमवर्क की ओर बदलाव की वजह से है, जिसके लिए अपडेटेड पे स्ट्रक्चर और महंगाई के डेटा के बीच तालमेल जरूरी होता है।

क्या है मामला

आमतौर पर केंद्र सरकार मार्च के महीने में होली के आसपास डीए बढ़ोतरी का ऐलान कर देती है। यह साल की पहली छमाही के लिए लागू होता है। मार्च महीने में डीए ऐलान के बाद कर्मचारियों की अगले महीने सैलरी बढ़कर आती है। इसमें जनवरी, फरवरी महीने का एरियर भी जुड़ा रहता है। हालांकि, इस बार भत्ते में देरी से अब केंद्रीय कर्मचारियों को मई महीने का इंतजार करना पड़ सकता है।

दरअसल, केंद्र सरकार के कई ऐसे भी विभाग हैं जहां सैलरी कैल्कुलेशन 15 से 15 तारीख का चलता है। मतलब ये कि जो सैलरी बनती है वो पिछले महीने की 15 तारीख से चालू महीने की 15 तारीख तक की होती है। अगर डीए के ऐलान में देरी होती है तो यह संभव है कि केंद्रीय कर्मचारियों की मई की सैलरी।

आपूर्ति का भरोसा दिलाया और ज़िम्मेदारी से इस्तेमाल की अपील की

नई दिल्ली, एजेंसी। पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय ने नागरिकों को भरोसा दिलाया है कि पूरे देश में एलपीजी की आपूर्ति स्थिर और पर्याप्त है। मंत्रालय ने उपभोक्ताओं से अपील की है कि वे घबराहट में ज़्यादा खरीदारी न करें और ज़िम्मेदारी के साथ एलपीजी का इस्तेमाल करते रहें। मौजूदा डिस्ट्रीब्यूशन नेटवर्क की मज़बूती का ज़िक्र करते हुए, मंत्रालय ने बताया कि एलपीजी की उपलब्धता पर निगरानी रखी जा रही है और इसका प्रबन्धन किया जा रहा है, ताकि देश भर के परिवारों तक बिना किसी रुकावट के एलपीजी पहुँचती रहे। मंत्रालय ने एलपीजी बुकिंग के लिए डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म के बढ़ते इस्तेमाल पर भी ज़ोर दिया। अब लगभग 95 फीसदी उपभोक्ता आईवीआरएस, एसएमएस, व्हॉट्सऐप और मोबाइल ऐप के ज़रिए बुकिंग करते हैं। उपभोक्ताओं को सलाह दी गई है कि वे इन आसान और प्रभावी डिजिटल तरीकों का इस्तेमाल करते रहें, ताकि डिस्ट्रीब्यूटरशिप पर भीड़ न लगे और उन्हें बिना किसी रुकावट के सेवा मिलती रहे।

सैमसंग के और गैलेक्सी डिवाइसेस पर मिलेगा वन यूआई 8.5 बीटा प्रोग्राम

गुरुग्राम, एजेंसी। सैमसंग अपने वन यूआई 8.5 बीटा प्रोग्राम का विस्तार और अधिक गैलेक्सी डिवाइसों तक कर रहा है। मार्च में वन यूआई 8.5 बीटा के विस्तार के बाद, अब यह प्रोग्राम गैलेक्सी एस23 सीरीज़, गैलेक्सी जेड फोल्ड5, गैलेक्सी जेड फ्लिप5, गैलेक्सी एस23 स्नश्च और पहली बार ए-सीरीज़ के गैलेक्सी ए36 5जी सहित अन्य डिवाइसेस के लिए जारी किया जा रहा है। यह बीटा प्रोग्राम भारत, कोरिया, यूके और अमेरिका जैसे चुनिंदा बाजारों में चरणबद्ध तरीके से उपलब्ध होगा। एंड्रॉइड के साथ अपने निरंतर सहयोग को आगे बढ़ाते हुए, सैमसंग वन यूआई 8.5 बीटा पर क्लिक शेयर के माध्यम से एयरड्रॉप के लिए सपोर्ट पेश कर रहा है, जिससे गैलेक्सी एस25 सीरीज़, गैलेक्सी एस24 सीरीज़, गैलेक्सी जेड फोल्ड7, गैलेक्सीजेड जेड फ्लिप7, गैलेक्सी जेड फोल्ड6 और गैलेक्सी जेड फ्लिप6 जैसे चुनिंदा डिवाइसेस के उपयोगकर्ताओं के लिए क्रॉस-प्लेटफॉर्म फाइल शेयरिंग अधिक सुगम हो जाएगी। बीटा प्रोग्राम का विस्तार इस महीने के अंत में अन्य गैलेक्सी डिवाइसेस तक भी जारी रहेगा और इच्छुक उपयोगकर्ता सैमसंग मेंबर्स ऐप के माध्यम से इसके लिए पंजीकरण कर सकते हैं।

सैमसंग ने भारत में टॉप माउंट फ्रीज़र रेफ्रिजरेटर्स तक बढ़ाया अपना बीस्पोक एआई लाइन-अप

● बिजली की बचत ● ताज़गी और सुविधा के लिए इसमें है एआई एनर्जी मोड ● फ्लैट डोर डिज़ाइन और एडवांस कूलिंग

गुरुग्राम, एजेंसी। भारत के सबसे बड़े कंज्यूमर इलेक्ट्रॉनिक्स ब्रांड सैमसंग ने अपने बीस्पोक एआई टॉप-माउंट फ्रीज़र रेफ्रिजरेटर लाइन-अप के विस्तार की घोषणा की है। यह नई रेंज भारतीय घरों में समझदारी भरी बिजली बचत और आधुनिक लुक लाने के लिए तैयार की गई है। शानदार बीस्पोकडिज़ाइन वाले इन रेफ्रिजरेटर्स में एडवांस एआई फीचर्स, स्मार्ट कनेक्टिविटी और भरोसेमंद परफॉरमेंस काबेहतरीन मेल है।

रेफ्रिजरेटर्स की इस नई रेंज में 256 लीटर और 236 लीटर की क्षमता वाले चुनिंदा मॉडल्स वाई-फाईकनेक्टिविटी के साथ आते हैं, ताकि इन्हें स्मार्टथिंग्स ऐप के ज़रिए स्मार्टफोन से आसानी से कंट्रोल और मॉनिटरकिया जा सके। इन मॉडल्स में स्टाइलिश फ्लैट-डोर डिज़ाइन के साथ-साथ तुरंत कूलिंग के लिए पावर कूल और पावर फ्रीज़ जैसे फीचर्स दिए गए हैं। इंडस्ट्री के बेहतरीन मानकों के साथ, ये रेफ्रिजरेटर्स बिजली बचानेऔर शानदार परफॉरमेंस देने के लिए बनाए गए हैं। सैमसंग इंडिया के डिजिटल अप्लायंसेज़ बिज़नेस के वाइस प्रेसिडेंट घुफरान आलम ने कहा, भारत में सैमसंग के 30 साल पूरे होने के मौके पर, हम भारतीय ग्राहकों के लिए लगातार नए और बेहतर एनर्जी-एफिशिएंट समाधान ला रहे हैं। 300 लीटर से कम क्षमता वाले हमारे नए एआई-इनेबल्ड रेफ्रिजरेटर्स, जिनमें बीस्पोक एआई टॉप माउंट फ्रीज़र भी शामिल है, भारतीय घरों में स्मार्टथिंग्स कनेक्टिविटी, मॉडर्न डिज़ाइन और बेहतर बिजली मैनेजमेंट की सुविधा देते हैं। यह एआई तकनीक को हर किसी तक पहुँचाने और लोगों की ज़रूरत के हिसाब से समाधान देने की हमारी कोशिश को दर्शाता है।

बेहतर बिजली मैनेजमेंट के लिए एनर्जी मोड

बीस्पोक एआई रेफ्रिजरेटर्स में एआई एनर्जी मोड दिया गया है, जो आपके फ्रिज को इस्तेमाल करने का तरीका समझता है और बिजली की खपत का अनुमान लगाता है। यह बिजली के इस्तेमाल को 10 प्रतिशत तक कम करने में मदद करता है। ग्राहक स्मार्टथिंग्स एनर्जी ऐप के ज़रिए रोज़ाना, साप्ताहिक या मासिक आधार परबिजली के खर्च को ट्रैक भी कर सकते हैं, जिससे बिजली का मैनेजमेंट और आसान हो जाता है।

भारत में पेट केयर पर होने वाले खर्च और पेट केयर अर्थव्यवस्था में वृद्धि हो रही है

● जेन ज़ी और मिलेनियल्स इसमें मुख्य भूमिका निभा रहे हैं

मुंबई, एजेंसी। पेट्स को सभी प्यार करते हैं। उनकी देखभाल करते हैं और एक परिवार के सदस्य की तरह उनका पालन-पोषण करते हैं। उनके साथ गहरे भावनात्मक जुड़ाव के कारण भारत में 'पेट पैरेंट्स' बढ़ रहे हैं। यह बदलाव केवल भावनात्मक नहीं है, बल्कि दैनिक जीवन में उनके लिए शॉपिंग, खर्च और उनकी केयर में भी दिखाई दे रहा है। भारत में पेट इंडस्ट्री पर जारी हुई आई.बी.ई.एफ रिपोर्ट के अनुसार यह सेक्टर लगभग 20 प्रतिशत की दर से बढ़ रहा है, जिसमें लोगों की बढ़ती आय, शहरी जीवनशैली और पेट की सेहत के प्रति बढ़ती प्राथमिकता का महत्वपूर्ण योगदान है। यह वृद्धि फ्लिपकार्ट पर भी प्रदर्शित हो रही है, जहाँ पेट-केयर के प्रति जीवनशैली पर आधारित बढ़ते दृष्टिकोण के साथ इस श्रेणी में 50 प्रतिशत से अधिक की साल-दर-साल वृद्धि दर्ज हो रही है। ग्राहकों द्वारा फ्लिपकार्ट पर कुत्ते और बिल्लियों से लेकर मछलियों, पक्षियों और अन्य पालतू जानवरों तक कई दैनिक उपयोगिता की वस्तुओं और विशेष प्रीमियम प्रोडक्ट्स की खरीदारी की जा रही है। बैंगलोर, दिल्ली और कोलकाता जैसे शहर मांग के मुख्य केंद्र बन रहे हैं और पेट केयर के कुल ऑर्डर्स में लगभग 10 प्रतिशत का योगदान दे रहे हैं। वहीं नॉन-मेट्रो शहर, जैसे मैसूर, देहरादून और कटक मेट्रो शहरों के बाहर पेट्स की बढ़ती ओनरशिप प्रदर्शित करते हैं।

पेट केयर में अब केवल फूड और हाईज़ीन की शॉपिंग ही नहीं,

बल्कि न्यूट्रिशन, ग्रूमिंग, वैलनेस और एनरिचमेंट आदि जैसी कई श्रेणियों की शॉपिंग शामिल हो गई है। इस परिवर्तन में नई पीढ़ी के पेट पैरेंट्स की भूमिका महत्वपूर्ण है। आज फ्लिपकार्ट पर दर्ज होने वाली 80 प्रतिशत से अधिक मांग जेन ज़ी और मिलेनियल्स से प्राप्त हो रही है, जो पेट केयर के लिए ज्यादा सूचित और विकसित दृष्टिकोण रखते हैं।

आज पेट्स की लोगों के जीवन में गहरी भावनात्मक भूमिका है

वो दैनिक जीवन में साथ देते हैं, खेलते कूदते रहते हैं और आराम देते हैं। पेट पैरेंट्स के शॉपिंग के व्यवहार में उनका यह संबंध साफ दिखाई देता है और वो कम्फर्ट, केयर एवं संपूर्ण सेहत को अधिक महत्व देते हैं। फ्लिपकार्ट पर इसलिए एक बढ़ता हुआ परिवेश विकसित हो रहा है, जो पेट्स की केयर को सरल, सुलभ और बेहद निजी बनाता है।

हंगामा ओटीटी पर 'मंगलमुखी' लॉन्च

मुंबई। भारत के प्रमुख डिजिटल एंटरटेनमेंट प्लेटफॉर्म्स में से एक हंगामा ओटीटी ने 9 अप्रैल 2026 को अपनी नई ओरिजिनल सीरीज 'मंगलमुखी' लॉन्च की। यह एक सशक्त क्राइम ड्रामा है, जिसकी कहानी वाराणसी और मुंबई जैसे दो अलग-अलग माहौल के बीच आगे बढ़ती है। इस सीरीज में एला डी वर्मा मुख्य भूमिका में नजर आएंगे, उनके साथ नमिश तनेजा, रति पांडे और तान्या शर्मा भी अहम किरदार निभा रहे हैं। यह कहानी एक हाई-स्टेक मर्डर मिस्ट्री को पहचान, सम्मान और संघर्ष की भावनात्मक परतों के साथ जोड़ती है। 'मंगलमुखी' की कहानी मंगल के इर्द-गिर्द घूमती है, जो एक ट्रांसजेंडर पुलिस ऑफिसर है और जिसे लंबे समय से अपने विभाग में तिरस्कार और नजरअंदाजी झेलनी पड़ी है। लेकिन उसकी जिंदगी तब बदलती है, जब उसे अपना पहला बड़ा केस मिलता है। यह केस एक लोकप्रिय टीवी स्टार की कैमरे पर हुई रहस्यमयी मौत से जुड़ा है, जो उसे वाराणसी से मुंबई के अंधेरे एंटरटेनमेंट जगत तक ले जाता है। जो शुरुआत में एक हादसा लगता है, वह धीरे-धीरे एक खौफनाक जांच में बदल जाता है, जहां मंगल को सिर्फ इंसाफ के लिए नहीं बल्कि अपनी पहचान के लिए भी लड़ना पड़ता है। अपने किरदार के बारे में एला डी वर्मा कहते हैं, मंगलमुखी सिर्फ एक पुलिस ऑफिसर की कहानी नहीं है, यह पहचान, हिम्मत और खुद पर विश्वास की कहानी है। उसकी यात्रा जेंडरसे आगे जाती है। यह साबित करने की कहानी है कि आपकी काबिलियत इस बात से तय नहीं होती कि समाज आपको कैसे देखता है। वह तेज, मजबूत और निडर है, और यही बात मुझे इस किरदार की तरफ खींच लाई।

वंदे भारत स्लीपर दूसरी ट्रेन की हो गई घोषणा

ना दिल्ली ना पटना, यह तो चलेगी मुंबई से

नईदिल्ली, एजेंसी। वंदे भारत स्लीपर ट्रेन का इंतजार देश के हर राज्य को है। देश की पहली वंदे भारत स्लीपर ट्रेन हावड़ा से गुवाहाटी रूट पर चली थी। दूसरी वंदे भारत के बारे में कयास था कि यह दिल्ली से पटना या दिल्ली से हावड़ा के रूट पर चलेगी। लेकिन रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने इन सब कयासों पर विराम लगा दिया है। उन्हें खुद पत्र लिख कर सूचित किया है कि वंदे भारत स्लीपर का दूसरा रूट क्या होगा। अश्विनी वैष्णव ने बीते 5 अप्रैल को बेंगलुरु सेंट्रल से लोकसभा सदस्य पी.सी. मोहन को पत्र लिख कर बताया कि चस्क्र बेंगलुरु और ष्टस्स्ख्र मुंबई स्टेशनों के बीच वंदे भारत स्लीपर ट्रेन सेवा को मंजूरी दी गई है। केएसआर बेंगलुरु रेलवे स्टेशन दरअसल बेंगलुरु सिटी रेलवे स्टेशन है जिसका नाम अब बदल कर क्रांतीवीर संगोली रायना बेंगलुरु कर दिया गया है। वैष्णव ने बताया कि इस समय ट्रेन के रूट, जर्नी टाइम और फ्रीक्वेंसी आदि पर काम कर चल रहा है। उन्होंने लिखा है 'ट्रेन सेवा जल्द ही शुरू होगी। 'बेंगलुरु से मुंबई 17 घंटे में

बेंगलुरु डिवीजन के डीआरएम आशुतोष कुमार सिंह ने डेक्कन हेराल्ड के साथ बातचीत में बताया है कि इन दोनों शहरों के बीच वंदे भारत स्लीपर ट्रेन चलेगी, इसकी घोषणा तो हो गई है। लेकिन अभी रूट फाइनल नहीं हुआ है। उन्होंने उम्मीद जताई कि दोनों शहरों के बीच यह ट्रेन 17 से 18 घंटे में यात्रा पूरी करेगी। इसका रूट क्या होगा, वाया कालबुर्गी या वाया हुबली इस सवाल पर उनका कहना था कि अभी भी इस पर काम चल रहा है। हां, उन्होंने बताया कि बेंगलुरु से मुंबई जाने का वाया हुबली छोटा रूट है जबकि वाया हुबली जाने में ज्यादा समय लगता है।

साड़ी की है बात निराली

छह गज का बिना सिला कपड़ा बुनकरों और डिजाइनरों के लिए एक कैनवास की तरह होता है। साड़ी केवल एक परिधान नहीं है, बल्कि यह एक पूरा ताना-बाना है। यानी एक ऐसा धागा जो अनेक सपनों का साक्षी है। जो हमारी सांस्कृतिक धरोहर है। सदियों से अपने रूप, डिजाइन और कढ़ाई के लिए प्रसिद्ध साड़ी के स्वरूप में भी आज के समय में परिवर्तन आ गया है। बदलती जीवनशैली और आधुनिकता ने अन्य चीजों की तरह इसके स्वरूप पर भी असर डाला है। भारी-भरकम कांजीवरम और बनारसी की जगह हल्की डिजाइनर साड़ियों ने ले ली है। पहले हर समारोह में जहां जरी के काम वाली भारी साड़ी पहनना अनिवार्य ही नहीं शुभ भी माना जाता था, वहीं आज दादी-नानी की उस धरोहर ने अपनी जगह अलग एक संदूक में बना ली है तो दूसरी ओर सिंथेटिक साड़ियां अलमारियों में पहुंच गई हैं। यहां तक कि कल की महिलाएं जो अपनी कांजीवरम की साड़ियों में अपनी खूबसूरती को निहारती थी, अब वे भी सिक्केस वर्क की जार्जेट, शिफॉन साड़ी पहनने लगी हैं। एक जमाना था जब हर स्त्री के पास कांजीवरम्, बनारसी, जामावार और पैठनी की साड़ियां अवश्य हुआ करती थीं। आज ब्लाउज के फैशन में जो बदलाव आया है, उसने साड़ी को वेस्टर्न टच में बदलने को उकसाया है। सबसे ज्यादा बदलाव कढ़ाई व डिजाइन में आया है। पहले भारी कढ़ाई की साड़ियों पर ज्यादातर जरी का काम किया जाता था पर अब जरी की जगह सिक्केस, क्रिस्टल व बीड्स ने ले ली है। यही वजह है कि आज साड़ियां पांच सौ से लेकर डेढ़ लाख रुपए तक में उपलब्ध हैं।

कांफिडेंस और लुक

आप जब घर से निकलती हैं, तो क्या अपने लुक को लेकर काफी कांसस रहती हैं। ऐसे में आप चाहें तो अपने ड्रेसकोड में थोड़ा सा परिवर्तन कर अपने दोस्तों में कांफिडेंस के साथ इंज्वाय कर सकती हैं। आप अपने ड्रेस डिजाइन को परिवर्तित कर अपने को आकर्षक और ग्लैमरस बना सकती हैं। इसके लिए आपको वेस्टन ड्रेस का भी सहारा लेने की कोई जरूरत नहीं है, आप भारतीय ड्रेस से ही अपने को आकर्षक बना सकती हैं। इसके लिए आप इंडियन आर्ट, अच्छे कट्स और फिटिंग वाले कपड़े का सहारा ले सकती हैं। इसके अलावा आप ब्राइट फ्रेश टोन अजमा सकती हैं। इसके साथ ही आप अपने कपड़ों को नये लुक के अलावा इनके रंगों पर भी ध्यान दें, जिनमें आप ब्लैक, ग्रे, व्हाइट के साथ थोड़ा-सा सिल्वर कलर का यूज करें तो बेहतर होगा। ये कभी फैशन सर्किट से बाहर नहीं होते। यदि आप डेनिम जींस पहनने की शौकीन हैं, तो इसे नीचे से थोड़ा मोड़ दें। साथ में ऐसे जूते पहनें, जो सभी तरह के मौसम के लिए उपयुक्त हों।

प्रैग्नेंसी में रखें खुद का ख्याल

प्रैग्नेंसी में नन्हें मेहमान के आने की जितनी ज्यादा खुशी होती हैं, उससे भी ज्यादा इस बात का फिक्र सताता है कि आने वाला बच्चा हैल्दी हो। इस लिए मां का खास ख्याल रखा जाता है क्योंकि उसी से बच्चे को पूरा पोषण मिलता है।

अगर मां में ही पोषक तत्वों की कमी होगी तो भविष्य में इसका असर बच्चे पर भी पड़ेगा। कैल्शियम, आयरन, विटामिन, खनिज पदार्थ, फाइबर, पोटाशियम आदि से भरपूर आहारों का सेवन गर्भावस्था में बहुत जरूरी है। इसी से बच्चे का शारीरिक और मानसिक विकास होगा और बीमारियों से भी उसका बचाव रहेगा। शरीर में इस समय हॉर्मोंस का परिवर्तन होने से मां का मूड बदलना स्वभाविक है। इससे उसे बहुत सी परेशानियों से भी गुजरना पड़ता है। ऐसे में प्रेग्नेंसी का समय एंज्वाय करने के लिए कुछ बातों का खास ख्याल रखना बहुत जरूरी है।

ऐसे करें स्किन केयर

गर्भावस्था में पेट और स्तन का आकार बढ़ने से स्किन पर खिंचाव के निशान पड़ जाते हैं। जिससे स्किन पर धारियां और गहरे भूरे रंग की लकीरे पड़ने का डर रहता है। इसके लिए अपनी मर्जी से दवाइयों खाने की गलती न करें। खास तरीकों से ही अपनी स्किन की केयर करें।

- प्रेग्नेंसी में त्वचा खुष्क होने लगती है इसलिए नहाने से पहले सरसो या फिर जैतून के तेल से शरीर की मसाज करें। मसाज हमेशा हल्के हाथों से करें। इससे त्वचा में नमी बरकरार रहेगी और त्वचा पर पड़े दाग-धब्बे भी दूर हो जाएंगे।
- पर्याप्त मात्रा में पानी का सेवन करना बहुत जरूरी है। इससे स्किन और सेहत दोनों अच्छी रहेंगी
- स्ट्रेच मॉस्क पर दवाइयां लगाने की बजाए नारियल का तेल लगाएं। इससे किसी तरह की एलर्जी भी नहीं होगी और दाग के निशान भी गायब हो जाएंगे।

कपड़े पहने स्टाइलिश

गर्भावस्था के समय मां जितना खुश रहेगी बच्चा भी उतना ही हैल्दी रहेगा। गर्भवती महिला का स्मार्ट बनकर रहना बहुत जरूरी होता है। ड्रैसिंग स्टाइल भी आपकी खुशी को व्यक्त करने का काम करता है। इस समय टाइट कपड़े पहनने से परहेज करें। इससे बच्चे की ग्रोथ होने में आसानी होगी।

- स्टाइलिश मैक्सी ड्रैस पहनने में आरामदायक होती हैं।
- डार्क रंग के कपड़ें इस समय मन को खुशी देते हैं।
- फ्लोरल या फिर कॉर्टून प्रिंट के आउटफिट्स बहुत अच्छे लगते हैं।

सेहत के रखें ख्याल

संतुलित आहार खाना इस समय बहुत महत्वपूर्ण होता है। फल, सब्जियां, दूध, सूप आदि समय-समय खाना बहुत जरूरी है। एक बार खाने की बजाए 2-3 घंटे में कुछ न कुछ खाना चाहिए।

- रोटी,ब्रेड,चावल,साबुत अनाज को अपनी डाइट का हिस्सा बनाएं। इन चीजों से आपको प्रोटीन मिलता है। इस समय प्रोटीन का सेवन बहुत जरूरी होता है।
- दूध,पनीर,अंडे,छाछ को भी आहार में शामिल करें। दूध से एलर्जी है तो छोले, राजमा, जई, बादाम, सोया दूध और सोयाबीन पनीर का भी खा सकते हैं।
- फलों का जूस पीने से साथ-साथ फल चबाकर खाने से ज्यादा फायदा मिलता है। यह शरीर में ऊर्जा का स्तर बनाए रख सकते हैं।

काम को आसान बना देंगे ये स्मार्ट ट्रिक्स

हाउस वाइफ ही नहीं बल्कि वर्किंग वुमन्स का भी किचन के साथ गहरा रिश्ता होता है। वैसे तो गृहणीयां खाना बनाने से लेकर किचन में हर में माहिर होती है लेकिन इसके बावजूद भी कई बार उन्हें काम करते समय कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ता है, जिसके कारण काम में देरी हो जाती है। किचन से जुड़ी छोटी-मोटी बातों के बारे में हर औरत को पता होना चाहिए, ताकि वो अपने काम को और भी आसान बना सके। आज हम आपको ऐसे ही कुछ टिप्स बताने जा रहें है, जिनकी मदद से आप अपने काम को और भी आसान बना सकते है। ये शानदार किचन ट्रिक्स आपका काम आसान करने के साथ-साथ खाने का स्वाद भी बढ़ जाएगा।

- बादाम या टमाटर छिलने के लिए पहले उन्हें 5-10 मिनट तक पानी में उबाले। इससे इनके छिलके आसानी से निकल जाएंगे।
- प्याज को काटने और लहसुन को छिलने से पहले उसे 10 मिनट के लिए पानी में भिगो दें। इससे प्याज काटते समय आंसू नहीं आएंगे और लहसुन के छिलके भी आराम से उतर जाएंगे।
- सूखे मेवे या ड्राईफ्रूट्स को काटने से पहले 1 घंटे के लिए फ्रिज में रख दें। इससे यह सॉफ्ट हो जाएंगे और आप इन्हें आसानी से काट सकेंगी।
- मशरूम को कभी भी पानी से न धाएं। क्योंकि यह पानी को सोख लेते है और कपाते समय पानी छोड़ देते है, जिससे सब्जी का टेस्ट खराब हो जाता है। इसकी बजाए आप मशरूम को गीले कपड़े से साफ करें।
- अगर आप पनीर बना रही है तो उसमें थोड़ा-सा ऑयल लगा दें। इससे यह बर्तन के साथ चिपकेंगे नहीं।
- शहद की शुद्धता पता लगाने के लिए उसकी कुछ बूंदें कांच की बोतल या गिलास में डालें। अगर शहद तले पर बैठ जाए तो शुद्ध है और अगर वो पानी में मिक्स हो जाए तो मिलावटी है।
- अगर आप बिरयानी या कोई ग्रेवी वाली डिश बना रही है तो उसमें दही डालने से पहले अच्छी तरह फेंट लें। इससे खाने का स्वाद बढ़ जाएगा। इसके अलावा सब्जियां उबालने के बाद इसके पानी को दाल बनाने में इस्तेमाल करें। इससे दाल का स्वाद दोगुना हो जाएगा।
- चावल पकाने से पहले उससे अच्छी तरह से धो लें। इससे चावल में मौजूद स्टार्च निकाल जाएगा और चावल पकने के बाद चिपचिपा नहीं होगा। इसके अलावा चावल की खीर बनाते समय बर्तन में पहले थोड़ा-सा पानी डाल दें। इससे दूध बर्तन के तले पर नहीं चिपकेगा।
- फलों को काटने के बाद उसके उपर अच्छी तरह से नींबू छिड़ककर फ्रिज में स्टोर करें। इससे फल पूरा दिन ताजे रहेंगे और इनका रंग भी खराब नहीं होगा।

अगर आप भी अभी नया-नया रिश्ता बना रहे है...

जब कोई लड़का या लड़की नए-नए रिलेशन में पड़ते है तो वह हर वक्त एक-दूसरे से बातें करने का बहाना ढूंढते रहते है। हर वक्त मैसेज के जरिए एक-दूसरे से बातें करने लगते है लेकिन नए रिश्ते में लड़की को अधिक मैसेज करने से आपका बना हुआ रिश्ता टूट भी सकता है क्योंकि कोई भी लड़की शुरूआत में अपनी लाइफ में किसी दूसरे की दखलअंदाजी पसंद नहीं करती। इसलिए ऐसे में लड़कों को थोड़ा सावधानी बरत कर लड़की को मैसेज करने चाहिए।

अधिक मैसेज न करें

पहली डेट के बाद लड़की के साथ बातचीत बढ़ाना अच्छी बात है लेकिन इसका मतलब ये नहीं कि उसके बार-बार मैसेज करके टंग करते रहे। अधिक मैसेज करने से भी रिश्ता जुड़ने से पहले ही टूट सकता है। इसलिए मैसेज करने पहले इस बात का खास ध्यान रखें।

देर रात मैसेज न करें

दिन के समय मैसेज करके थोड़ी-बहुत बात करना तो ठीक है लेकिन देर रात तक लड़की को कभी मैसेज न करें। इससे लड़की नाराज भी हो सकती है और आपसे दूरिया भी बना सकती है।

शराब पीने के बाद

नया रिश्ता जोड़ रहे है तो कोई भी गलती करने से पहले दस बार जरूर सोचें। इसके अलावा अगर आप ड्रिंक भी करते है तो शराब पीने के बाद लड़की को कभी मैसेज न करें क्योंकि ड्रिंक करने के बाद कोई भी अपनी भावनाओं पर काबू नहीं रख पाता और कोई न कोई गलती कर बैठता है।

क्रोधित होने भी न करें मैसेज

कहते है कि गुस्सा बहुत बुरी चीज है। गुस्सा आने पर इंसान कोई होश नहीं रहता है कि वह किसे क्या बोल रहा है। इसलिए बेहतर होगा कि जब आप गुस्से में हो तो किसी लड़की को मैसेज न करें। क्योंकि उस वक्त आपको खुद नहीं पता होता है कि आप क्या बोल रहे है।

मैसेज में सवाल-जवाब कम करें

पहली डेट के साथ अगर लड़की के साथ मैसेज पर बात कर भी रहे है तो उसके साथ ज्यादा सवाल न करें क्योंकि इससे उसे गुस्सा भी आ सकता है और वह आपसे चिड़ भी सकती है।

लड़के अगर कुछ फैक्टर्स के बल पर लड़कियों को पसंद करते हैं, तो इस मामले में लड़कियां भी कोई कम नहीं हैं। लड़कों को पसंद करने के उनके अपने कायदे हैं और वे खुद से बेटर पोजिशन वाले को जल्दी पसंद कर लेती हैं। इसके लिए वे कुछ ऐसी बातों तक को इग्नोर कर देती हैं, जिनसे समझौता आमतौर पर मुश्किल होता है।

लड़का चाहिए खुद से सुपीरियर

मशहूर दार्शनिक फ्रायड ने कहा था कि उन्हें इस बात का जवाब कभी नहीं मिला कि एक औरत अपनी जिंदगी से क्या चाहती है। कुछ ऐसी ही उधेड़बुन से आपको आज की ज्यादातर महिलाएं भी जूझती दिख जाएंगी। बेशक, इस कन्फ्यूजन के केंद्र में शादी और उससे जुड़े सवाल ही अहम रहते हैं। ऐसे में यह सोचना कि महिलाएं फाइनैंशियल तौर पर पुरुषों पर निर्भर नहीं होना चाहतीं, पूरी तरह से सच नहीं है। आज की महिलाएं भी बेहतर कैरियर से ज्यादा खुशहाल परिवार का सपना देखती हैं। हालांकि, इस बात को खुले तौर पर मानने में उन्हें थोड़ी हिचक होती है। जी हां, तमाम स्टडी से यह बात साबित हुई है। अक्सर देखा भी गया है कि लड़कियां बॉयफ्रेंड को शादी के लिए मना कर देती हैं। उनका कहना होता है कि वे अपने कैरियर में आगे बढ़ना चाहती हैं और अभी सेटल होने के बारे में नहीं सोच रही हैं। लेकिन, हायर डिग्री वाले या फिर हाई इनकम वाले वेल-सेटल्ड लड़के के साथ उनका रवैया ऐसा नहीं रहता। ऐसे पुरुष के साथ शादी के प्रपोजल को वे झट मान जाती हैं। इसी तरह की एक रिसर्च से जुड़ीं लंदन स्कूल ऑफ इकॉनमिक्स की रिसर्चर कैथरिन हाकिम बताती हैं, 'दुनिया भर में विमिन इम्पॉवरमेंट की बातें लगभग 40 साल से चल रही हैं। ऐसे में बस हाउसवाइफ बनने की बात को महिलाएं स्वीकार नहीं पातीं। अगर यह बात उनके मन में होगी, तो भी वे दकियानूसी कहलाए जाने के डर से यह बात नहीं कहेंगी। हालांकि, हमारे आसपास ऐसी तमाम महिलाएं हैं, जो फाइनैंशल मैटर्स के लिए अपने पार्टनर पर डिपेंड रहना चाहती हैं।' गौर करने वाली बात यह है कि उम्र ज्यादा होने पर भी महिलाएं ऐसे साथी के सपने संजोए रहती हैं, जो हर लिहाज से उनसे आगे हो। रिसर्च के दौरान देखा गया कि कई यूरोपियन देशों की उम्रदराज महिलाएं भी शादी के लिए तभी तैयार हुईं, जब उन्हें अपने से ज्यादा धनवान और पढ़े-लिखे पुरुष मिले। ब्रिटेन में लगभग 50 साल पहले हुई एक रिसर्च में 20 फीसदी महिलाएं अपने से ज्यादा पढ़े-लिखे पुरुष से शादी करना चाहती थीं, वहीं पिछले दशक में ये आंकड़े 38 फीसदी तक पहुंच चुके हैं। यही पैटर्न पूरे यूरोप, यूएस और ऑस्ट्रेलिया में भी नोट किया गया। जाहिर है, तेजी से वेस्टर्न कल्चर में ढल रहीं इंडियन मेट्रोज की महिलाएं भी इस राह पर हैं।

सोच का रहता है असर

हालांकि इस रिसर्च को लेकर महिलाओं की राय अलग-अलग है। जहां, कुछ इससे सहमत नजर आती हैं, वहीं कुछ को इसमें दम नजर नहीं आता। एक एचआर फर्म में बतौर हेड काम कर चुकीं श्रुति सिंह कहती हैं। 'मैंने लव मैरिज की और हाल में अपनी जॉब से रिजाइन दिया है। दरअसल, मेरे पति को पांच साल के लिए लंदन की एक आईटी कंपनी में जॉब मिली है और मैं उनके साथ जाना चाहती हूं। मेरा फैसला इमोशंस और जिम्मेदारी से लिया गया है। इसमें उनके पैकेज की बात कहीं नहीं है। फिर वहां जाने पर भी मैं पढ़ाई या जॉब कर सकती हूं।' वैसे, बैंक प्रोफेशनल निहारिका जोशी ऐसे मैच को बेस्ट ऑप्शन मानती हैं। उनका कहना है, 'जिंदगी में घर और ऑफिस की दुधारी तलवार पर लटकने से क्या मिलेगा? आपको घर की जिम्मेदारी तो निभानी ही होगी, तो अच्छा है कि ज्यादा पैकेज वाले पुरुष से शादी की जाए। इस तरह न तो बॉस की धौंस सहनी पड़ेगी और एक स्टैंडर्ड के घर का आराम भी मिलेगा।' इस बात का एक और पहलू मीडिया प्रोफेशनल गौरी कपूर सामने रखती हैं। वह कहती हैं, 'हर सफल पुरुष ऐसी बीवी चाहता है, जो अपने लेवल पर सफल हो। इसलिए महिलाओं से जुड़ी इस रिसर्च में मुझे खास दम नहीं लग रहा है।' गुड़गांव की एक फूड बेवरेज फर्म में काम करने वाले गौरव कपूर की बात से यंग जेनरेशन की अप्रोच एकदम क्लीयर हो जाती है। बकौल गौरव, 'मैंने अपनी गर्लफ्रेंड से साफ कह दिया है कि जब तक मैं सीनियर मैनेजर की पोस्ट पर नहीं आ जाता, सेटल होने का सवाल ही नहीं उठता है। इससे उसे भी कोई ऐतराज नहीं है, क्योंकि उसकी फैमिली को भी तो ऊंची पोस्ट का दामाद पसंद आएगा।' उनका कहना है कि हाई सोसाइटी की तमाम महिलाएं अपने पार्टनर के एक्स्ट्रा मैरिटल अफेयर तक को इसी वजह से इग्नोर कर देती हैं।

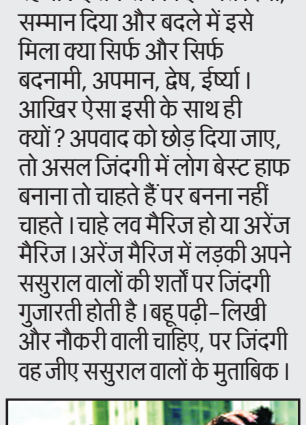

....अब तो बदल जाओ

कालांतर से वर्तमान तक मानों आरोप-प्रत्यारोप ही इसकी जीवनी हो। सबने इसके आचरण पर दाग लगाए, यहां तो एक सामान्य स्त्री क्या सीता को भी नहीं बख्शा गया। वाह रे दुनिया! इसकी नियति में क्या है, यह एक प्रश्न ही रहेगा? इसने सबको इज्जत दिया, सम्मान दिया और बदले में इसे मिला क्या सिर्फ और सिर्फ बदनामी, अपमान, द्वेष, ईर्ष्या। आखिर ऐसा इसी के साथ ही क्यों? अपवाद को छोड़ दिया जाए, तो असल जिंदगी में लोग बेस्ट हाफ बनाना तो चाहते हैं पर बनना नहीं चाहते। चाहे लव मैरिज हो या अरेंज मैरिज। अरेंज मैरिज में लड़की अपने ससुराल वालों की शर्तों पर जिंदगी गुजारती होती है। बहू पढ़ी-लिखी और नौकरी वाली चाहिए, पर जिंदगी वह जीए ससुराल वालों के मुताबिक।

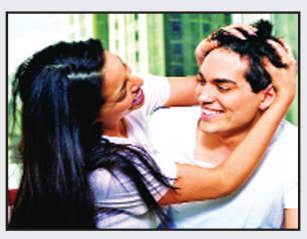

केकेआर के खिलाफ जीत के इरादे से उतरेगी सीएसके

चेन्नई (एजेंसी)। चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) की टीम मंगलवार को यहां होने वाले इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) मुकाबले में कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) के खिलाफ जीत के इरादे से उतरेगी। सीएसके की टीम ने संजू सैमसन के शतक से पिछले मैच में दिल्ली कैपिटल्स को हराया था जिससे उसका मनोबल बढ़ा हुआ है। अब उसका लक्ष्य इस मैच में भी जीत के सिलसिले को बनाये रखना होगा। सीएसके की ओर से पिछले मैच में जेमी ओवरटन ने भी चार विकेट लेकर काफी अच्छा प्रदर्शन किया था। जिसे वह इस मैच में भी बनाये रखना चाहेंगे। इसके अलावा बाएं हाथ के तेज गेंदबाज गुरजपनीत सिंह ने भी पिछले मैच में अच्छी गेंदबाजी की थी। उन्होंने अपनी उछाल भरी गेंदों से विरोधी टीम के बल्लेबाजों को हैरान कर दिया था। वहीं स्पिनर अकील हुसैन ने भी पिछले मैच में अच्छी गेंदबाजी की थी।

बल्लेबाजी में सीएसके के पास सैमसन के अलावा कप्तान रुतुराज गायकवाड़ भी हैं।युवा डेवाल्ड ब्रेविस के फिट होकर वापसी करने का भी लाभ मिलेगा।

वहीं दूसरी ओर केकेआर इस सत्र में अब तक एक भी मैच नहीं जीती है और ऐसे में उसपर इस मैच में किसी प्रकार से जीत हासिल करने का दबाव रहेगा। पिछले मैच में लखनऊ सुपर जायंट्स (एलएसजी) के खिलाफ वह जीत के करीब पहुंचकर भी उसे हासिल नहीं कर पायी थी। ऐसे में अजिंक्य रहाणे इस मैच में किस रणनीति से उतरते हैं ये देखना होगा। केकेआर की बल्लेबाजी और गेंदबाजी दोनो ही इस सत्र में अच्छी नहीं रही है।

कैमरन ग्रीन के गेंदबाजी शुरु करने से हालांकि उसकी उम्मीदें जगी हैं। रिंकू सिंह भी अब तक उम्मीद के अनुसार प्रदर्शन नहीं कर पाये हैं और उनका इरादा अब अपने को साबित करना रहेगा। रहाणे ने अब तक अच्छी बल्लेबाजी की है पर उन्हें अंत तक टिके रहना होगा। युवा अंगकृष रघुवंशी और रोवमैन

पॉवेल भी फार्म में आ गये हैं जो टीम के लिए सकारात्मक संकेत हैं। . केकेआर को अगर सीएसके को उसके घरेलू मैदान पर हराना है तो उसके गेंदबाजों को भी अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर मेजबान टीम के बल्लेबाजों पर अंकुश लगाना होगा। आंकड़ों पर नजर डातें तो अबतक दोनो के बीच 32 मैच हुए हैं जिसमें सीएसके ने 20 मैच जीते हैं, जबकि केकेआर ने 11 मैचों में जीत हासिल की है जबकि एक मैच का परिणाम नहीं निकला है।

पिच की बात करें तो शुरुआत में बल्लेबाजों को लाभ होता है पर मैच आगे बढ़ने

टीम इस प्रकार है

चेन्नई सुपर किंग्स- संजू सैमसन (विकेटकीपर), रुतुराज गायकवाड़ (कप्तान), डेवाल्ड ब्रेविस, आयुष म्हात्रे, सरफराज खान, शिवम दुबे, जेमी ओवरटन, अकील हुसैन, अंशुल कंबोज, खलील अहमद, गुरजनप्रीत सिंह

इम्पैक्ट प्लेयरः कार्तिक शर्मा/मैथ्यू शॉर्ट

कोलकाता नाइट राइडर्स- फिन एलन, अजिंक्य रहाणे (कप्तान), अंगकृष रघुवंशी (विकेटकीपर), कैमरन ग्रीन, रोवमैन पॉवेल, रिंकू सिंह, रमनदीप सिंह, अनुकूल रॉय, ब्लेसिंग मुजरबानी, वैभव अरोड़ा, वरुण चक्रवर्ती

इम्पैक्ट प्लेयरः नवदीप सैनी

रॉयल्स के मैनेजर रोमी पर कार्रवाई कर सकता है बीसीसीआई

मुम्बई (एजेंसी)। राजस्थान रॉयल्स (आरआर) के टीम मैनेजर रोमी भिंडर की मुश्किलें बढ़ सकती है। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) के खिलाफ आईपीएल 2026 मैच के दौरान टीम के डगआउट में मोबाइल फोन का उपयोग करना उन्हें भारी पड़ सकता है। इसको लेकर भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) भी उनपर कार्रवाई कर सकता है। गुवाहाटी में हुए इस मैच में रोमी टीम के उभरते बल्लेबाज वैभव सूर्यवंशी के पास बैठकर मोबाइल चला रहे थे। बीसीसीआई के एक अधिकारी ने भी माना है कि टीम मैनेजर ने नियमों का उल्लंघन किया है।

इस अधिकारी ने कहा, जी हां रोमी ने वास्तव में खिलाड़ियों एवं मैच अधिकारियों के लिए बने प्रोटोकॉल को तोड़ा है क्योंकि मैच के दौरान डगआउट में मोबाइल फोन के उपयोग पर रोक है। आईपीएल के अनुसार, टीम मैनेजर ड्रेसिंग रूम में फोन का उपयोग कर सकता है पर डगआउट में नहीं। रोमी फ्रेंचाइजी की शुरुआत से ही इससे जुड़े हुए हैं और जानकारों का मानना ??है कि उन्हें भ्रष्टाचार रोधी प्रोटोकॉल के बारे में अच्छी तरह से पता होना चाहिए। अब देखना होगा कि उनपर क्या कार्रवाई होती है।

इस अधिकारी ने कहा, यह अनजाने में भी हो सकता है पर इस पर कार्रवाई होनी चाहिए क्योंकि यह नियमों का उल्लंघन है। चेतावनी दी जाएगी या प्रतिबंध लगाया जाएगा, इसका फैसला मैच रेफरी और भ्रष्टाचार निरोधक इकाई (एसीयू) की रिपोर्ट के आधार पर किया जाएगा। आईपीएल की संचालन परिषद इस आधार पर फैसला ले सकती है। रोमी को और भी गहन जांच का सामना करना पड़ सकता है, क्योंकि सूर्यवंशी ने मैच के बाद उन्हें अपना स्थानीय संरक्षक बताया था।

आईपीएल अंकतालिका में तीसरे नंबर पर पहुंची आरसीबी, रॉयल्स शीर्ष पर बरकरार

मुम्बई (एजेंसी)। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) की टीम मुम्बई इंडियंस के खिलाफ मुकाबले में जीत के साथ ही आईपीएल 2026 की अंक तालिका में तीसरे नंबर पर पहुंच गयी है। इस मैच के साथ ही इस सत्र में आरसीबी ने लगातार अपना तीसरा मैच जीता। अंकतालिका में अभी पहले स्थान पर राजस्थान रॉयल्स की टीम है। रॉयल्स ने अब तक अपने सभी चारों मैच जीतकर 8 अंक हासिल किए हैं। वहीं, पंजाब किंग्स ने 4 में से 3 मैच जीत कर 7 अंक के साथ ही दूसरा स्थान हासिल किया है जबकि आरसीबी 4 में तीन मैच जीतकर 6 अंक के साथ ही तीसरे स्थान पर है। इसके अलावा दिल्ली कैपिटल्स, गुजरात टाइटंस, लखनऊ सुपर जायंट्स 4-4 अंक लेकर आगे के स्थानों पर हैं। सनराइज हैदराबाद, मुंबई इंडियंस, चेन्नई सुपरकिंग्स ने अभी तक 4-4 मैच में से केवल 1-1 मैच ही जीता है। इन तीनों टीमों के अंक 2 हैं। अंतिम स्थान पर कोलकाता नाइट राइडर्स है (केकेआर) है। केकेआर ने अभी तक एक भी मैच नहीं जीता है।

अंक तालिका में चौथे पायदान पर दिल्ली कैपिटल्स है। उसने चार मैचों में से दो मैच जीत चुकी है और उसके खाते में 4 अंक हैं। सूची में पांचवें पायदान पर गुजरात टाइटन्स है, जो चार में से दो मैच जीती और दो मैच हारी है। छठे पायदान पर बरकरार लखनऊ सुपर जायंट्स ने चार में से दो मैच जीते हैं। चौथे, पांचवें और छठे स्थान पर कायम टीमों ने कम से कम दो मैच जीते हैं और इतने ही मैच ये हारी हैं।सातवें से 10वें नंबर तक की टीमों ने एक से ज्यादा मुकाबला नहीं जीता है। सातवें नंबर पर सनराइजर्स हैदराबाद है। वह चार में से तीन मैच हारी है और एक मैच जीती है। आठवें स्थान पर मुंबई इंडियंस है। चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके)की हालत भी यही है। वह भी तीन मैच हारने के बाद चौथा मैच जीती है। सीएसके नौवें नंबर पर है। सबसे अंतिम स्थान पर कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) है जो एक भी मैच नहीं जीती है। तीन मैच हारे हैं और एक मैच बेनतीजा रहा है। इस तरह केकेआर को केवल एक ही अंक मिला है।

इम्पैक्ट प्लेयर नियम को हटाया जाना चाहिये : पोलार्ड

मुम्बई (एजेंसी)। आईपीएल में इम्पैक्ट प्लेयर नियम शुरुआत से ही विवादों में रहा है। साल 2023 से लागू होने के बाद से ही कई दिग्गज खिलाड़ियों ने इसका विरोध करते हुए कहा है कि इससे ऑलराउंडरों को ही नुकसान हो रहा है। ऐसे में इस नियम को हटा दिया जाना चाहिये। वहीं अब मुंबई इंडियंस के बल्लेबाजी कोच कीरोन पोलार्ड ने भी कहा है कि इम्पैक्ट प्लेयर का विकल्प ऑलराउंडरों की भूमिका को सीमित कर रहा है। इससे अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट पर भी विपरीत प्रभाव पड़ सकता है। पोलार्ड लंबे समय से आईपीएल का हिस्सा हैं। वह 2010 से अलग-अलग भूमिकाओं में आईपीएल से जुड़े रहे हैं और टीम में ऑलराउडर के तौर पर भी शामिल रहे हैं।

पोलार्ड ने कहा, मैं इस नियम को पसंद नहीं करता हूं पर इसे हटाना मेरे हाथ में नहीं है। इससे केवल ये हो रहा है कि इसने टी20 क्रिकेट में बड़े स्कोर बन रहे हैं। वहीं अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में भी इसके पड़ने वाले असर पर अभी तक मैंने धयान नहीं दिया है। आईपीएल में इम्पैक्ट प्लेयर होने से केवल तब ही लाभ हो रहा है जब कोई टीम लीग गेम में कुछ विकेट गंवा देती है तो भी उसके पास अधिक रन बनाने का अवसर रहता है। उन्होंने जो लोग इस प्रकार के नियम बना रहे हैं उन्हें यह देखना चाहिये कि क्या यह वास्तव में खेल के लिए अच्छा है, टेलीविज़न के लिए अच्छा है, या सिर्फ़ लोगों के लिए फ़ायदेमंद है। इम्पैक्ट प्लेयर नियम के साथ, कुछ ऐसे कौशल सेट होत हैं जिनका अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में प्रयोग नहीं हो रहा है। ऐसें में मेरा मानना है कि उनको इसकी समीक्षा करनी चाहिये। अगर ऐसा नहीं होता हो ये इसी प्रकार जारी रहेगा।

गौरतलब है कि रोहित शर्मा और विराट कोहली सहित कई खिलाड़ियों ने अलग-अलग मौकों पर इस नियम की आलोचना की है। अक्षर पटेल ने सीजन शुरू होने से पहले कहा, मुझे यह नियम पसंद नहीं है, क्योंकि मैं एक ऑल-राउंडर हूं। पहले, आप बैटिंग और बॉलिंग के लिए एक ऑलराउंडर चुनते थे। इस नियम की वजह से, टीम प्रबंधन किसी खास बल्लेबाज या गेंदबाज को रखती है, यह सोचकर कि हमें ऑलराउंडर की क्या जरूरत है?शुभमन गिल भी इसके विरोध में हैं। उनका कना है कि कोई इम्पैक्ट प्लेयर नहीं होना चाहिए। आम तौर पर क्रिकेट 11 खिलाड़ियों का गेम है। एक अतिरिक्त बल्लेबाज जोड़ने से, मुझे लगता है कि गेम

से कौशल समाप्त हो जाता है। उस एक खिलाड़ी से गेम को और भी वन-डाइमेंशनल बना रहा है। गुजरात टाइटन्स के कप्तान ने हाल ही में कहा, ÷मुश्किल विकेट पर 180 या 160 रन का पीछा करना मेरे लिए सपाट ट्रैक पर 220 रन का पीछा करने से ज़्यादा रोमांचक है।÷ इम्पैक्ट प्लेयर नियम 2023 से लागू है।

फॉर्मूला वन की 2027 में भारत में वापसी होगी, खेल मंत्री ने कर दिया बड़ा ऐलान

नई दिल्ली । खेल मंत्री मनसुख मांडविया ने सोमवार को कहा कि 2027 में भारत में फॉर्मूला वन रेस की वापसी होगी। मांडविया ने यहां मीडिया से अनौपचारिक बातचीत में कहा कि ग्रेटर नोएडा में बुद्ध इंटरनेशनल सर्किट में इस रेस के आयोजन के लिए कम से कम तीन कंपनियों ने दिलचस्पी दिखाई है। उन्होंने कहा, 'भारत में 2027 में फॉर्मूला वन रेस होगी। पहली रेस बुद्ध इंटरनेशनल सर्किट में आयोजित की जाएगी।' भारत इससे पहले फॉर्मूला वन रेस इंडियन ग्रां प्री आयोजित कर चुका है, लेकिन कर और नौकरशाही संबंधी समस्याओं के कारण 2013 में तीसरे संस्करण के बाद इसे फॉर्मूला वन रेस के कैलेंडर से हटा दिया गया था।

रोहित मुंबई इंडियंस के लिए 6000 रन बनाने वाले पहले खिलाड़ी बने

मुम्बई । मुंबई इंडियंस के पूर्व कप्तान रोहित शर्मा रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) के खिलाफ मैच में अपनी 19 रनों की पारी के दौरान ही एक बड़ा रिकार्ड अपने नाम कर लिया है। इसी के साथ ही वह आईपीएल में 6000 रन बनाने वाले मुंबई इंडियंस के पहले बल्लेबाज बने हैं। रोहित ने जैसे ही आरसीबी के खिलाफ अपने 6 रन पूरे किये। उसी के साथ ही उनके 6000 रन परे हो गये। रोहित ने जैकब डफी की गेंद पर छक्का लगाकर ये आंकड़ा हासिल किया। रोहित साल 2011 मुंबई इंडियंस से जुड़े थे। उसके बाद से ही वह इस टीम से खेलते हुए नजर आ रहे हैं। वहीं सूर्यकुमार सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाजों की सूची में दूसरे नंबर पर हैं। सूर्यकुमार ने 116 मैचों में 3776 रन बनाए हैं। उनके बाद कीरोन पोलार्ड ने 2010 से 2022 तक मुंबई इंडियंस की ओर से 189 आईपीएल मैचों में 3412 रन बनाए हैं। वहीं आईपीएल में एक ही टीम के लिए सबसे ज्यादा रन बनाने के मामले में रोहित से आगे विराट कोहली हैं। कोहली ने रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) की टीम के लिए 271 आईपीएल मैचों में कुल 8840 रन बनाए हैं।

महिला टी20 विश्व कप के लिए रिकॉर्ड पुरस्कार राशि की घोषणा, पिछली बार की तुलना में 10 प्रतिशत की वृद्धि

दुबई । अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (ICC) ने सोमवार को आगामी महिला टी20 विश्व कप के लिए 82 करोड़ रुपए की रिकॉर्ड पुरस्कार राशि की घोषणा की। इस विश्व कप का आयोजन दो महीने बाद इंग्लैंड एवं वेल्स में होगा। कुल पुरस्कार राशि में पिछले सत्र की तुलना में 10 प्रतिशत की वृद्धि की गई है। टूर्नामेंट के पिछले सत्र में 10 टीमों ने भाग लिया था, लेकिन 12 जून से 05 जुलाई तक सात स्थानों पर खेले जाने वाले आगामी विश्व कप में 12 टीमें भाग लेंगी। इसका फाइनल लॉर्ड्स क्रिकेट स्टेडियम में आयोजित होगा। संयुक्त अरब अमीरात में आयोजित पिछले सत्र की कुल पुरस्कार राशि 7,958,077 डॉलर (लगभग 74 करोड़ रुपए) थी, जो अब बढ़कर 8,764,615 डॉलर (लगभग 82 करोड़ रुपये) हो गई है। विजेता टीम को 23,40,000 डॉलर (लगभग 21.8 करोड़ रुपए) मिलेंगे, जबकि उपविजेता को 11,70,000 डॉलर (लगभग 10 करोड़ रुपये) प्राप्त होंगे। सेमीफाइनल में हारने वाली टीमों को 6,75,000 डॉलर (लगभग 6.29 करोड़ रुपए) मिलेंगे, जबकि प्रत्येक ग्रुप मैच जीतने पर टीमों को 31,154 डॉलर (लगभग 29 लाख रुपये) मिलेंगे। आईसीसी ने यहां विज्ञप्ति में कहा, 'सभी 12 प्रतिभागी टीमों को कम से कम 2,47,500 डॉलर (लगभग 2.06 करोड़ रुपए) का सुनिश्चित पुरस्कार मिलेगा।' टूर्नामेंट की शुरुआत 12 जून को बर्मिंघम के एडजबेस्टन में मेजबान इंग्लैंड और श्रीलंका के बीच मैच से होगी। इस विश्व कप में भाग लेने वाली अन्य टीमें ऑस्ट्रेलिया, बांग्लादेश, भारत, आयरलैंड, नीदरलैंड, न्यूजीलैंड, पाकिस्तान, स्कॉटलैंड, दक्षिण अफ्रीका और वेस्टइंडीज हैं। 33 मैचों का यह टूर्नामेंट 24 दिनों तक चलेगा। इस बीच, टी20 विश्व कप ट्रॉफी मेजबान शहरों का दौरा करेगी और लंदन में इसका समापन होगा। स्कॉटलैंड में सात से 10 मई तक इसका पहला पड़ाव होगा। ICC के सीईओ संजोग गुप्ता ने कहा, 'महिला क्रिकेट का विकास लगातार तेज हो रहा है। ICC महिला टी20 विश्व कप का 12 टीमों तक विस्तार और रिकॉर्ड पुरस्कार राशि, एक मजबूत और अधिक प्रतिस्पर्धी वैश्विक खेल के निर्माण के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाती है।'

आईपीएल2026 : प्रसिद्ध कृष्णा का लखनऊ के खिलाफ बेहतरीन प्रदर्शन से पर्पल कैप पर कब्जा

लखनऊ (एजेंसी)। गुजरात टाइटंस के तेज गेंदबाजी प्रसिद्ध कृष्णा ने लखनऊ सुपर जायंट्स के खिलाफ मुकाबले में बेहतरीन गेंदबाजी प्रदर्शन करते हुए 4 विकेट झटक कर पर्पल कैप पर कब्जा जमा लिया है।

इंडियन प्रीमियर लीग (IPL) 2026 में रविवार को खेले गए इस मुकाबले में प्रसिद्ध कृष्णा चार विकेट लेकर गेंदबाजों की सूची में चार मैचों में कुल 10 विकेटों के साथ शीर्ष पर पहुंच गए है। इस दौरान प्रसिद्ध ने 28/4 के आंकड़े के साथ सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया है जबकि उकना इकोनॉमी रेट 9.50 रहा है।

इस सूची में दूसरे स्थान पर राजस्थान रॉयल्स (RR) के रवि बिश्नोई (9 विकेट) तथा चेन्नई सुपर किंग्स के गेंदबाज अंशुल कंबोज (8 विकेट) तीसरे स्थान पर है। चौथे स्थान पर लखनऊ सुपर जायंट्स के प्रिंस यादव और रॉयल चैलेंजसै बेंगलुरु के जैकब डफी हैं, जिनके नाम 6-6 विकेट हैं।

LSG vs RCB

मैच की बात करें तो तेज गेंदबाज प्रसिद्ध कृष्णा (चार ओवर में 28 रन पर चार विकेट) की अगुवाई में गेंदबाजों के शानदार प्रदर्शन के बाद कप्तान शुभमन गिल और जोस बटलर की कमाल की बल्लेबाजी से गुजरात टाइटंस ने इंडियन प्रीमियर लीग टी20 मैच में रविवार को यहां लखनऊ सुपर जायंट्स को सात विकेट से शिकस्त दी। स्स्त को 8 विकेट पर 164 रन पर रोकने के बाद टाइटंस ने 18.4 ओवर में तीन विकेट पर 165 रन बनाकर आसानी से लक्ष्य हासिल कर चार मैचों में दूसरी जीत दर्ज की। गिल ने 40 गेंद की पारी में छह चौके और एक छक्के की मदद से 56 रन बनाने के अलावा पहले विकेट के लिए साई सुदर्शन (15) के साथ 31 गेंद में 45 और दूसरे विकेट के लिए जोस बटलर (60) के साथ 58 गेंद में 84 रन की साझेदारी की। बटलर ने 37 गेंद की पारी में 11 चौके लगाए। सुपर जायंट्स के लिए दिग्वेश राठी, मोहम्मद शमी और प्रिंस यादव को एक-एक सफलता मिली।

इससे पहले प्रसिद्ध को मोहम्मद सिराज (चार ओवर में 19 रन पर एक विकेट) और अशोक शर्मा (चार ओवर में 32 रन पर दो विकेट) का अच्छा साथ मिला। कागिसो रबाडा को भी एक सफलता मिली, लेकिन उन्होंने चार ओवर में 54 रन लुटाए। राशिद खान ने चार ओवर में 25 रन दिए। सुपर जायंट्स के लिए एडेन मारक्रम ने सबसे ज्यादा 30 रन का योगदान दिया। उनके अलावा कोई भी बल्लेबाज 20 रन के आंकड़े तक नहीं पहुंच पाया। कप्तान ऋषभ पंत (18), निकोलस पूरन (19), अब्दुल समद (18) और मुकुल चौधरी (18) ने क्रीज पर समय बिताने के बाद अपने विकेट गंवा दिए और स्स्त 164 रन ही बना पाई।

नेमार हर मैच के साथ ही बेहतर हो रहे : मैनेजर कुका

रियो डी जेनेरो । स्टार फुटबॉलर नेमार आगामी विश्वकप को देखते हुए ब्राजील की टीम में जगह पाने के प्रयासों में लगे हुए हैं। इसी कड़ी में नेमार सैंटोस और एटलेटिको मिनेरो के बीच हुए मैच के दौरान पूरे समय मैदान में बने रहे। इस मैच से वापसी करते हुए नेमार को पूरे समय खेलते देकर प्रशंसक भी उत्साहित दिखे। वहीं टीम के मैनेजर कुका ने भी नेमार के प्रदर्शन की प्रशंसा करते हुए कहा है कि वह इसी प्रकार खेलते रहे तो जून में होने वाले विश्वकप में ब्राजील की टीम में उनकी जगह पक्की हो सकती है। कुका ने कहा, नेमार हर मैच के साथ ही बेहतर हो रहा है, उसे टीम में वापसी के लिए मेहनत करते रहना होगा। उसका खेल लगातर निखर रहा है। ।, कुका ने कहा कि वह मंगलवार को रेकोलेटा के साथ सैंटोस के खिलाफ होने वाले घरेलू कोपा अमेरिका मैच में भी खे सकता है। उन्होंने कहा, उसके लिए पूरे 90 मिनट खेलना जोखिम भरा है। हमें उसे खेल का आनंद लेते हुए लय हासिल करते देखना अच्छा लग रहा है। नेमार, जो 128 इंटरनेशनल मैचों में 79 गोल के साथ ब्राजील की ओर से सबसे अधिक गोल करने वाले खिलाड़ी पर अक्टूबर 2023 में उरुग्वे के खिलाफ विश्व कप क्वालीफायर में एंटीरियर क्रूसिएट लिगामेंट टूटने के बाद से ही वह ब्राजील से नहीं खेल पाये हैं। इसके बाद से ही वह लगातार फिटसेस से जुड़ी परेशानियां झेल रहे हैं। पिछले साल जनवरी में अपने बचपन के क्लब में लौटने के बाद से वह सैंटोस के लिए 35 मेच से लगातार उतर रहे हैं। ब्राजील के मैनेजर कार्लो एंसेलोटी के विश्व कप के लिए टीम की घोषणा से पहले उनके पास सैंटोस के लिए अपनी फिटनेस साबित करने के लिए 10 और गेम हैं। ब्राजील की टीम विश्वप में अपना अभियान 13 जून को मोरक्को के खिलाफ शुरू करेगी।

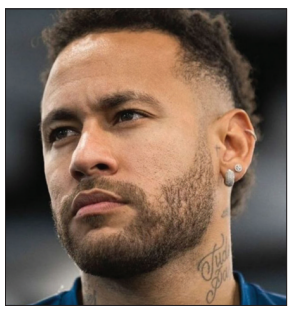

तेज गेंदबाज अशोक ने अपनी रफ्तार से प्रभावित किया

चंडीगढ़ । आईपीएल के इस सत्र में गुजरात टाइटंस टीम से खेल रहे युवा तेज गेंदबाज अशोक शर्मा ने अपनी गेंदबाज से सभी को प्रभावित किया है। अशोक ने इस सत्र की शुरुआत पंजाब किंग्स के खिलाफ मैच से की थी। अशोक ने अपने पहले ही मैच में 140-150 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से गेंदबाजी कर सभी का ध्यान खींचा है। शोक ने इससे पहले सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी में भी काफी अच्छा प्रदर्शन किया था। उसी के कारण उन्हें आईपीएल के लिए गुजरात ने शामिल किया है। इस दाएं हाथ के तेज गेंदबाज का यहां तक का सफर आसान नहीं रहा। वह कए साधारण परिवार से आये हैं। उन्होंने नेट गेंदबाज के तौर पर राजस्थान रॉयल्स के लिए काम किया है। इसके बाद उन्हें आईपीएल 2022 में कोलकाता नाइट राइडर्स ने 55 लाख रुपए में खरीदा था पर उन्हें एक भी मैच खेलने का अवसर नहीं मिल सका। इसके बाद गुजरात टाइटंस ने उन्हें 90 लाख रुपए में शामिल किया। अशोक ने फर्स्ट क्लास करियर में 4 मैच खेले हैं, जिसमें 29.71 की औसत के साथ 14 विकेट हासिल किए। वहीं, 7 लिस्ट-ए मुकाबलों में उनके नाम 13 विकेट हैं। अशोक ने अपने टी20 करियर में 10 मैच खेले हैं, जिसमें 15.63 की औसत के साथ 22 विकेट लिए हैं।

2027 एकदिवसीय विश्वकप में मिलर सहित कई अनुभवी खिलाड़ी नजर नहीं आयेंगे

जोहांसबर्ग । दक्षिण अफ्रीका की टीम 2027 एकदिवसीय विश्वकप में डेविड मिलर, रासी वैन डेर डुसेन सहित कई स्टार खिलाड़ियों के बिना ही खेलती दिखेगी। इसका कारण है कि क्रिकेट दक्षिण अफ्रीका ने साल 2026-27 सत्र के लिए मिलर सहित कई खिलाड़ियों को शामिल नहीं किया है। वहीं युवा खिलाड़ियों को पहली बार शामिल किया गया है। मिलर को केन्द्रीय अनुबंध के अलावा हाइब्रिड करार भी नहीं दिया गया है। इससे उनके अंतराराष्ट्रीय करियर पर सवाल उठने लगे हैं। मिलर ने कुछ समय पहले कहा था कि वह 2027 विश्वकप खेलना चाहते हैं पर अब उनकी ये इच्छा अधूरी ही रह जाएगी। मिलर के अलावा रासी वैन डेर डुसेन को इाइब्रिड करार नहीं मिला। वहीं बल्लेबाज रीजा हैनरिक और तेज गेंदबाज नांद्रे बरगर भी करार में जगह हासिल नहीं कर पाये हैं। इस बार दक्षिय अफ्रीका बोर्ड ने नये खिलाड़ियों को अधिक अवसर दिया है। इस बार सीएसके ने युवा खिलाड़ियों डेवाल्ड ब्रैविस, कोर्बिन बास , आंटेरिन बार्टमैच जैसे युवा खिलाड़ियों पर भरोसा जताते हुए अनुबंध यसूची में शामिल किया है। इसके अलावा ऑफ स्पिनर सिमोन हार्मर को भी पहली बार करार मिला है। इस बार उन घरेलू खिलाड़ियों को भी अवसर दिया गया है। जो भविष्य में इंटरनेशनल क्रिकेट खेल सकते हैं। चयन संयोजक पैट्रिक मोरोनी ने कहा, आगे का सत्र काफी व्यस्त और अहम होने वाला है, इसलिए टीम में अनुभवी के साथ ही नए खिलाड़ियों को भी शामिल किया गया है। उन्होंने आगे कहा, 2027 एकदिवसीय विश्वप कप को ध्यान में रखते हुए हमने ऐसे खिलाड़ियों को चुना है, जिनमें बड़े टूर्नामेंट जीतने की क्षमता और सही मानसिकता है। उसकी अनुबंध सूची में टेम्बा बावुमा, एडेन मार्करम, कगिसो रबाडा, लुंगी एनगिडी, केशव महाराज, ट्रिस्टन स्टब्स, रयान रिकेल्टन और काइल वेर्रेयन जैसे अनुभवी खिलाड़ी भी शामिल हैं।

विराट और रोहित चोटिल हुए, अगले मैच में खेलने को लेकर उठे सवाल

मुम्बई (एजेंसी)। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) के पूर्व कप्तान विराट कोहली को यहां मुम्बई इंडियंस के खिलाफ हुए मैच में टखने में चोट लग गयी है। जिससे कारण उनके आईपीएल के अगले मैच में खेलने को लेकर सवाल उठने लगे हैं। इससे आरसीबी को झटका लगा है। वहीं मुम्बई के भी पूर्व कप्तान मुम्बई रोहित शर्मा इसी मैच में चोटिल हो गये। इससे मुम्बई की भी मुश्किलें बढ़ गयी हैं। विराट की फिटनेस को लेकर आशंकाएं इसलिए भी बढ़ गयी हैं क्योंकि वह मुम्बई की बल्लेबाजी के दौरान मैदान पर नहीं उतरे। हालांकि इस मैच में आरसीबी की टीम जीत गयी। मैच के बाद आरसीबी के कप्तान रजत पाटीदार और ऑलराउंडर ऋणाल पांड्या ने कहा कि कोहली के शीघ्र ठीक होने की उम्मीद है। पाटीदार ने कहा, 'मुझे अभी नहीं पता, लेकिन मुझे लगता है कि वह अभी ठीक हैं।'

वहीं ऋणाल ने कहा, 'मैंने अभी फिजियो से बात नहीं की है पर मुझे लगता है कि वह ठीक हो जाएंगे, चिंता की कोई बात नहीं है।' इस मैच में विराट ने हालांकि बल्लेबाज के दौरान फिल सॉल्ट के साथ 120 रनों की शुरुआती साझेदारी की थी। विराट ने 38 गेंद में ही अर्धशतक लगा दिया था। वहीं इस मैच में मुम्बई के सलामी बल्लेबाज रोहित भी चोटिल हो गये हैं। इसी कारण ही रोहित को पांचवें ओवर के बाद मेडिकल हेल्प लेनी पड़ी। हैमस्ट्रिंग इंजरी के कारण रोहित छठे ओवर की दूसरी गेंद के बाद मैदान से बाहर चले गए। उन्होंने 13 गेंद में 19 रन बनाए और वह वापस मैदान में उतर नहीं पाये। आरसीबी का अगला मैच 15 अप्रैल को जबकि मुंबई इंडियंस का 16 अप्रैल को होना है ऐसे में विराट और रोहित दोनों को अपनी-अपनी चोट से उबरने के लिए कुछ दिन का समय मिलेगा।

पहली बार साथ आएंगे टाइगर और सुनील

बॉलीवुड के एक्शन हीरो और दिग्गज अभिनेता एक साथ एक फिल्म में नजर आने वाले हैं। रिपोर्ट्स के मुताबिक, दोनों एक नई हाई-ऑक्टेन एक्शन एंटरटेनर फिल्म में नजर आएंगे, जिसे लेकर फैंस के बीच जबरदस्त उत्साह है।

वैरायटी इंडिया के मुताबिक पहली बार टाइगर श्रॉफ और सुनील शेट्टी नई हाई-ऑक्टेन एक्शन एंटरटेनर फिल्म में नजर आएंगे। दोनों अपने-अपने अंदाज के लिए जाने जाते हैं। टाइगर जहां अपनी फिटनेस और स्टाइलिश एक्शन के लिए मशहूर हैं, वहीं सुनील शेट्टी अपने दमदार स्क्रीन प्रेजेंस और रफ-टफ इमेज के लिए पसंद किए जाते हैं। इस प्रोजेक्ट को और भी खास बनाता है इसका एक इमोशनल कनेक्शन। सुनील शेट्टी पहले टाइगर श्रॉफ के पिता जैकी श्रॉफ के साथ कई फिल्मों में काम कर चुके हैं। अब वह उनके बेटे के साथ स्क्रीन शेयर करेंगे, जो फैंस के लिए किसी ट्रीट से कम नहीं है। रिपोर्ट्स के अनुसार मेकर्स इसे बड़े स्तर पर बनाने की तैयारी में हैं, ताकि दर्शकों को एक शानदार सिनेमैटिक अनुभव मिल सके।

फिल्म को एक फुल-ऑन एक्शन एंटरटेनर बताया जा रहा है, जिसमें जबरदस्त एक्शन सीक्वेंस, स्टाइलिश फाइट्स और मसाला एंटरटेनमेंट का तड़का देखने को मिलेगा। कहानी को लेकर अभी ज्यादा जानकारी सामने नहीं आई है, लेकिन इसे बड़े पैमाने पर तैयार किया जा रहा है। अब फैंस को इस फिल्म का बेसब्री से इंतजार है, क्योंकि पहली बार यह जोड़ी बड़े पर्दे पर एक साथ नजर आने वाली है और उम्मीद की जा रही है कि यह फिल्म एक्शन लवर्स के लिए खास साबित होगी।

भूत बंगला फिल्म का हिस्सा होना मेरे लिए कितना अहम रहा

अक्षय कुमार की आने वाली फिल्म भूत बंगला का ट्रेलर रिलीज हो चुका है। ट्रेलर में हॉरर-कॉमेडी का दमदार बेलेंस देखने को मिल रहा है। साथ ही ट्रेलर में एक्ट्रेस मिथिला पालकर भी दिखाईं दीं। अब उन्होंने हाल ही में खुलासा किया कि उन्हें प्रियदर्शन की इस फिल्म में रोल कैसे मिला।

इंस्टाग्राम पर पोस्ट कर किया खुलासा

दरअसल, मिथिला पालकर ने हाल ही में इंस्टाग्राम पर एक डायरेक्टर प्रियदर्शन के साथ एक पोस्ट शेयर की। साथ ही उन्होंने खुलासा किया कि वो कल्याणी प्रियदर्शन थीं, जिन्होंने अपने पिता प्रियदर्शन को मिथिला के बारे में बताया।

मैंने कभी सोचा भी नहीं था

उन्होंने पोस्ट के कैप्शन में लिखा, 'एक अपॉर्चुनिटी, जो कभी मैंने सोची भी नहीं थी। कल्याणी की बहुत आभारी, जिनके बिना ये आइडिया पहुंच भी नहीं पाता। और प्रियन सर, आपका भरोसा करने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।' उन्होंने आगे लिखा, 'मैं आपको बता नहीं सकती कि इस फिल्म का हिस्सा होना मेरे लिए कितना अहम रहा। बहुत-बहुत आभारी। दर्शकों का बहुत शुक्रिया, जिन्होंने ट्रेलर को इतना प्यार दिया। मैं इंतजार नहीं कर सकती आप लोगों का फिल्म देखने के लिए। मिथिला की इस पोस्ट पर कल्याणी प्रियदर्शन ने कमेंट किया और कहा कि उन्होंने बस अपने पिता को बताया कि वे मिथिला की फैन हैं, और उससे ज्यादा कुछ नहीं किया। बता दें कि कल्याणी प्रियदर्शन भी एक्ट्रेस हैं, और साउथ की कई फिल्मों में नजर आ चुकी हैं।

कब रिलीज होगी भूत बंगला?

बता दें कि फिल्म भूत बंगला 17 अप्रैल को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। इस फिल्म के साथ डायरेक्टर प्रियदर्शन और एक्टर अक्षय कुमार की जोड़ी 14 साल बाद फिर से साथ आने वाली है। अक्षय के अलावा इसमें वामिका गब्बी, परेश रावल, राजपाल यादव, तब्बू और असरानी अहम किरदार में नजर आएंगे।

'धुरंधर 2' पर चुप्पी को लेकर ट्रोल हो रहीं दीपिका पादुकोण ने दिया जवाब

'धुरंधर द रिवेंज' बॉक्स ऑफिस पर जमकर कमाई कर रही है। फिल्म ने अपनी सफलता के जरिए कई रिकॉर्ड बनाए हैं। हाल ही में इसने 1 हजार का आंकड़ा पार किया था। फिल्म के लिए रणवीर सिंह को भी लोगों से खूब प्यार मिल रहा है। लेकिन इन सब के बीच रणवीर सिंह की पत्नी और बॉलीवुड एक्ट्रेस दीपिका पादुकोण की तरफ से फिल्म को लेकर कोई रिएक्शन सामने नहीं आया। इसके लिए फैंस उन्हें सोशल मीडिया पर ट्रोल कर रहे थे। अब इस पर एक्ट्रेस ने करारा जवाब दिया है।

दीपिका ने खुद किया कमेंट

जब ये रील दीपिका तक पहुंची, तो उन्होंने खुद कमेंट कर जवाब दिया। उन्होंने लिखा, 'दूसरी वाली बात सही है मेरे दोस्त... और हां, मैंने ये फिल्म आप सबसे पहले ही देख ली थी। अब बताओ, मजाक किसका बन रहा है?'

सोशल मीडिया पर किया जा रहा था ट्रोल

दरअसल, एक इंस्टाग्राम रील के कैप्शन में लिखा था- 'दीपिका ने 500 करोड़ बजट फिल्म को साइलेंट ट्रीटमेंट दिया है। जब फिल्म ग्लोबल रिकॉर्ड बना रही थी, तब वे अपने ससुराल वालों के साथ सितार का कॉन्सर्ट देखने पहुंच गईं। ना कोई पोस्ट, ना कोई तारीफ...बस चुप्पी। क्या वो डायरेक्टर को कोई स्टेटमेंट देना जाहती हैं या फिर इंटरनेट ड्रामा से दूर हैं।

फैंस ने किया दीपिका का समर्थन

उनके इस जवाब के बाद फैंस भी उनके समर्थन में आगे आ गए। एक ने कमेंट किया- 'शायद वो प्रीमियर के दिन अपने पति की लाइमलाइट नहीं लेना चाहती थीं।' वहीं दूसरे ने लिखा- 'वे अपने बच्चे की देखभाल में व्यस्त हैं, उन्हें अकेला छोड़ दो।' वहीं एक यूजर ने लिखा- 'उन्हें लोगों से अपने रिलेशनशिप और पति को लेकर वैलिडेशन की जरूरत नहीं।'

भाषा की बाधा अब खत्म हो रही है

हिंदी फिल्मों और वेब सीरीज में अपने अभिनय से अपनी अलग पहचान बनाने वाले अपारशक्ति खुराना अब साउथ में अपने डेब्यू के लिए तैयार हैं। अपारशक्ति साई-फाई थ्रिलर फिल्म 'रूट्स - रनिंग आउट ऑफ टाइम' से तमिल सिनेमा में अपनी शुरुआत करने वाले हैं। इससे पहले अभिनेता ने भाषा की बाधा की खत्म होती धारणा और क्षेत्रीय सिनेमा के बढ़ते स्तर को लेकर बात की। बातचीत में अपारशक्ति खुराना ने अपनी फिल्म की कहानी और भाषा की सीमाओं को लेकर कहा कि जैसे-जैसे ज्यादा कलाकार हिंदी सिनेमा से हटकर क्षेत्रीय सिनेमा में काम करने की ओर बढ़ रहे हैं, भाषा को एक बाधा मानने की धारणा धीरे-धीरे खत्म हो रही है। मुझे लगता है कि कहानी ने मुझे स्वाभाविक रूप से अपनी ओर खींच लिया। भाषाओं की सीमाओं को पार करना बहुत जरूरी है, खासकर तब जब क्षेत्रीय सिनेमा हमारे देश में इतना प्रासंगिक हो गया है। हिंदी भाषी दर्शकों का तेलुगु और कन्नड़ फिल्मों की ओर रुख करना वाकई कमाल है।

एस. सूर्यप्रताप द्वारा निर्देशित साइ-फाइ थ्रिलर फिल्म 'रूट्स - रनिंग आउट ऑफ टाइम' से अपारशक्ति तमिल सिनेमा में अपना डेब्यू करने के लिए तैयार है।

सोना महापात्रा ने बताई बॉलीवुड अवॉर्ड शो की काली सच्चाई

'चेतक स्क्रीन अवॉर्ड' में आलिया भट्ट ने सुनील सिंह ग्रोवर के साथ मिलकर महफिल सजाने की कोशिश की, लेकिन अब सोशल मीडिया पर उनके होस्टिंग के वीडियो को वायरल कर ट्रोल किया जा रहा है। यूजर्स का कहना है कि अभिनेत्री को कॉमेडी करनी नहीं आती और वे प्रियंका चोपड़ा को कॉपी करने की कोशिश कर रही हैं। अब सिंगर सोना महापात्रा ने आलिया भट्ट को सपोर्ट करते हुए वीडियो पोस्ट किया है और बॉलीवुड में काम करने वालों की एकता पर भी सवाल किए हैं। सिंगर का कहना है कि जब कोई शो लाइव चलता है तो रीटेक का ऑप्शन नहीं होता है और स्टेज पर आकर लोगों को हंसाना बहुत मुश्किल काम है और बॉलीवुड में लाइव शो करना ही अपने आप में बहुत बड़ा स्टंट है। सिंगर का यह भी कहना है कि अभिनेत्री को सोशल मीडिया पर ट्रोलिंग का सामना करना पड़ा रहा है, लेकिन उस दौरान ऑडियंस में बैठे स्टार्स ने भी उनकी होस्टिंग पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया था, जो गलत था और अब ट्रोलिंग होने पर भी कोई सामने नहीं आ रहा है।

सोना महापात्रा ने यह भी साफ किया कि सिर्फ मंच से होस्टिंग काफी नहीं होती है, बल्कि ऑडियंस में बैठे लोगों को भी मंच पर खड़े होस्ट का हौसला बढ़ाना होता है, लेकिन उस दिन सबकी एनर्जी और रिएक्शन मरा हुआ था। उन्होंने खुद का एक किस्सा शेयर करते हुए बताया कि शबाना आजमी मिजवान फैशन शो होस्ट करती हैं और वहां रैंप पर चलने वालों की एनर्जी हाई होती है और ऑडियंस में बैठे बॉलीवुड स्टार्स की एनर्जी जीरो होती है। उन्होंने सोशल मीडिया पर लोगों से अपील की कि वे आलिया भट्ट को ट्रोल न करें। सिंगर सोना ने कहा, 'मुंबई फिल्म उद्योग सफलता और संघर्ष की मानसिकता को दूर नहीं करती। हम जितने अधिक 'सफल' होते जाते हैं, उतने ही कम उदार होते जाते हैं? तालियों की जगह हिसाब-किताब ले लेता है। प्रोत्साहन की जगह खामोश प्रतिस्पर्धा ले लेती है। सितारों और कामयाब लोगों से भरा कमरा, लेकिन फिर भी, कोई एक-दूसरे का साथ नहीं देता।'

सिंगर ने आलिया को सपोर्ट करते हुए लंबा चौड़ा पोस्ट लिखा है और यूजर्स भी उनका बराबर साथ दे रहे हैं। बता दें कि यह पहली बार नहीं है, जब आलिया को ट्रोलिंग का सामना करना पड़ा हो। इससे पहले उनके और रणबीर कपूर के रिश्ते को लेकर भी उन्हें ट्रोलिंग का सामना करना पड़ा था।

मजबूरी में लेखक-डायरेक्टर बना इमरान सर के गानों पर स्कूल में नाचा हूं

'गुडाचारी', 'मेजर' और 'हिट द सेकंड केस' जैसी कामयाब फिल्मों के लिए मशहूर साउथ सिनेमा के युवा स्टार अदिवि शेष अब एक और ऐक्शन-रोमांस से भरपूर फिल्म 'डकैत' लेकर आए हैं। इसी सिलसिले में उनसे खास बातचीतः

'कर्मा' और 'किस' जैसी शुरुआती फिल्मों में आप ऐक्टर के साथ राइटर-डायरेक्टर भी रहे। अभी डायरेक्शन से दूरी बना रखी है। क्या वापस यह डबल रोल निभाने का इरादा है?

'कर्मा' बनाने के बाद ही मुझे अहसास हुआ कि मैं अच्छा डायरेक्टर नहीं हूं। असल में, लेखन और निर्देशन मेरी मजबूरी थी क्योंकि बतौर ऐक्टर ऐसे रोल नहीं मिल रहे थे, जैसा मैं करना चाहता था। जिस तरह की स्क्रिप्ट्स मुझे पसंद थी, वे मिल नहीं रही थी। मुझे यह भी नहीं पता था कि इंडस्ट्री के अंदर कैसे आना है? वह विश्वसनीयता और सम्मान कैसे कमाऊं? तो मैंने खुद फिल्में लिखीं और बनाई। वो मेरी जरूरत थी। फिर, बाद में जब वो जगह बन गई तो मैं वो (ऐक्टिंग) कर रहा हूं, जो हमेशा से करना चाहता था। राइटिंग भी मेरी ऐक्टिंग को ही मजबूत करने का जरिया है।

'डकैत' में आप अपने फैंस के पसंदीदा ऐक्शन अवतार में हैं। इन दिनों ऐक्शन का दौर चल भी खूब रहा है। हालांकि, उसमें हिंसा और वीभत्स सीन पर भी काफी जोर दिख रहा है। आप इसकी क्या वजह मानते हैं?

'डकैत' ऐक्शन फिल्म नहीं है। यह लव स्टोरी में ऐक्शन है। इसमें दो पूर्व प्रेमी हैं, जो कभी एक दूसरे से प्यार करते थे। अब ऐसे माहौल में मिले हैं जहां डकैती हो रही है। गोलियां चल रही हैं। इन सबके बीच उनके पुराने प्यार का क्या होता है, ये कहानी है। रही हिंसा की बात तो अभी जमाना ही ऐसा है। दुनिया में जिस बेरहमी से मिसाइलें दागी जा रही है, वो हम सब देख रहे हैं। मुझे लगता है कि फिल्मों से ज्यादा हिंसा अभी असल दुनिया में है। रही बात ट्रेंड की, तो मुझे लगता है कि कोई भी ट्रेंड तब तक रहता है, जब तक दूसरा उसे तोड़ नहीं देता है। मैंने यश चोपड़ा जी का एक इंटरव्यू पढ़ा था जिसमें वे कह रहे थे कि एक दिन मरीन ड्राइव पर उन्होंने देखा कि हर होर्डिंग पर 4-4 हीरो बंदूकों के साथ दिख रहे थे। ऐसे वक्त में उन्होंने 'चांदनी' बनाने की सोची, जो क्लासिक बनी। जब रोमांस अपने चरम पर था, उस दौर में 'गदर' जैसी ऐक्शन और 'लगान' जैसी देसी फिल्म सुपरहिट हुई थी।

'डकैत' में आपके खिलाफ अनुराग कश्यप विलन की भूमिका में हैं। उनके साथ काम करने का अनुभव कैसा रहा?

हम बहुत लकी हैं क्योंकि वह बहुत विनम्र और निष्ठावान इंसान हैं। वह इतने मशहूर राइटर-डायरेक्टर हैं, पर जितने सामान्य तरीके से काम कर रहे थे, जैसे हमसे बात कर रहे थे, मानो खुद एक स्टूडेंट हों तो बहुत अच्छा अनुभव रहा। हमने 'डकैत' को अलग अलग भाषाओं में शूट किया है। इसके हिंदी वर्जन के डायलॉग में उन्होंने काफी गाइडेंस दिया तो इंडिया के बेस्ट डायलॉग लेखक हमें फ्री में मिल गए। उनके स्किल्स से हमें बहुत मदद मिली। 145 दिनों के शूट में उन्होंने एक बार पूछा कि क्या मैं एक शॉट में आपको डायरेक्ट कर सकता हूं, वो भी बहुत ही प्यार से और उस छोटे से सीन को उन्होंने जैसे शूट किया, वो एक किस्म का मास्टर क्लास था। मैंने स्कूल में था, जब उनकी फिल्म ब्लैक फ्राइडे देखी थी, तबसे उनका फैन हूं।

आप 'डकैत' के साथ 'गुडाचारी' का सीक्वल 'जी 2' भी शूट कर रहे हैं। दोनों के बीच में तालमेल बिठाने में कोई चुनौती आई?

'जी 2' हमने थोड़ा ही शूट किया है। अभी ज्यादा ध्यान 'डकैत' पर है क्योंकि यह पहले रिलीज है। इसके बाद मैं, वामिका गब्बी, इमरान खान सर, सब फिर से उस फिल्म पर काम करना शुरू करेंगे। इन दोनों के साथ काम करने में भी बड़ा मजा आ रहा है। इमरान सर कमाल के ऐक्टर हैं। वो लेजेंड हैं। मैंने स्कूल में उनके गानों पर डांस किया है। मेरे लिए, अक्खा बॉलिवुड एक तरफ और इमरान सर के गाने एक तरफ जैसा आलम था। वहीं, वामिका को हाल ही में मैं चिढ़ा रहा था कि तुम मेरी फिल्म 'डकैत' के खिलाफ अपनी 'भूत बंगला' रिलीज कर रही हो।

संक्षिप्त समाचार

जम्मू-कश्मीर के डोडा जिले में भूकंप के झटके, रिक्टर पैमाने पर 4.6 रही तीव्रता

श्रीनगर, एजेंसी। जम्मू-कश्मीर के डोडा जिले में रविवार तड़के भूकंप के झटके महसूस किए गए। रिक्टर पैमाने पर इसकी तीव्रता 4.6 मापी गई। नेशनल सेंटर फॉर सीस्मोलॉजी के अनुसार, भूकंप सुबह 04:32 बजे आया। राहत की बात यह है कि अभी तक कहीं से भी जान-माल के नुकसान की कोई सूचना नहीं मिली है। भूकंप के बाद स्थानीय प्रशासन अलर्ट हो गया है। पुलिस और राहत टीमें हालात पर नजर बनाए हुए हैं। प्रशासन ने लोगों से अपील की है कि वे घबराएं नहीं, लेकिन सतर्क जरूर रहें और किसी भी आपात स्थिति में तुरंत सूचना दें। कुछ दिन पहले दिल्ली-एनसीआर सहित देश के विभिन्न इलाकों में भूकंप के झटके महसूस किए गए थे। डोडा में भूकंप के झटके महसूस करना कोई नई बात नहीं है। इससे पहले 1 मार्च 2026 को भी यहां 4.2 तीव्रता का भूकंप दर्ज किया गया था। हालांकि उस समय भी कोई बड़ा नुकसान नहीं हुआ था, लेकिन लोगों में दहशत फैल गई थी। महाराष्ट्र के मराठवाड़ा क्षेत्र स्थित हिंगोली जिले के कुछ हिस्सों में शनिवार को भूकंप के झटके महसूस किए गए। रिक्टर स्केल पर भूकंप की तीव्रता 4.7 मापी गई। इसके साथ ही पड़ोसी जिलों नांदेड़ और परभणी के भी कुछ हिस्सों में भूकंप के झटके महसूस किए गए। हिंगोली के जिलाधिकारी राहुल गुप्ता ने बताया कि पांगरा शिंदे गांव के कुछ हिस्सों में भूकंप का असर देखने को मिला है। यहां कुछ घरों और सामुदायिक केंद्रों की दीवारों में दरार देखने को मिली है। हालांकि किसी प्रकार की जान-माल का नुकसान नहीं हुआ। वहीं, नादेड़ जिला अधिकारी ने बताया कि भूकंप की तीव्रता 4.7 मापी गई थी। नेशनल सेंटर फॉर सीस्मोलॉजी की एक रीडिंग का हवाला देते हुए कहा कि भूकंप शनिवार सुबह 8.45 बजे दर्ज किया गया। भूकंप का केंद्र हिंगोली जिले की वसमत तहसील के शिरली गांव में भूमि से करीब 10 किलोमीटर की गहराई में था।

आरएसएस और भाजपा की विचारधारा संविधान को कमजोर करना चाहती है : राहुल गांधी

नई दिल्ली, एजेंसी। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने रविवार को 'रन फॉर अंबेडकर, रन फॉर कॉन्स्टिट्यूशन' मैराथन की शुरुआत की। इस मैराथन का आयोजन कांग्रेस के अनुसूचित जाति विभाग द्वारा किया गया, जिसका उद्देश्य युवाओं को बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर के संविधान और उनकी सोच के प्रति जागरूक करना है। इस मौके पर राहुल गांधी ने कहा कि आज हम बीआर अंबेडकर को याद कर रहे हैं। उनका संदेश ही संविधान का संदेश था और यही संविधान हमारे लोकतंत्र की नींव है। उन्होंने आरोप लगाया कि आरएसएस और भाजपा की विचारधारा से जुड़े कुछ लोग अंबेडकर की सोच और भारतीय संविधान को कमजोर करना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि इनका उद्देश्य संविधान को कमजोर करना है क्योंकि वे नहीं चाहते कि देश के सभी नागरिकों को बराबरी का अधिकार मिले। यह विचारधारा समानता के खिलाफ है और संविधान की मूल भावना को नुकसान पहुंचाने की कोशिश कर रही है। राहुल गांधी ने आगे कहा कि उनका लक्ष्य संविधान को बचाना, उसे और मजबूत बनाना और देश के हर कोने तक उसकी सोच और सुरक्षा पहुंचाना है। उन्होंने जोर देकर कहा कि देश के हर हिस्से में संविधान की भावना को फैलाना बेहद जरूरी है, ताकि लोगों के अधिकार सुरक्षित रह सकें। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए इस मैराथन का आयोजन किया गया ताकि खासकर युवा पीढ़ी संविधान के महत्व को समझे और उसे मजबूत बनाने में अपनी भागीदारी निभाए।

28 साल तक चाय-पानी पिलाया, अब जनता की सेवा करेंगे

मेहसाणा , एजेंसी। गुजरात के निकाय चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने एक बार फिर साबित कर दिया है कि उसके लिए कोई छोटा या बड़ा नहीं है। पार्टी के लिए समर्पित किसी भी आदमी को चुनाव लड़ने का मौका मिल सकता है। बीजेपी ने 28 साल से पार्टी ऑफिस में चपरासी के तौर पर काम कर रहे 50 साल के रमेश भील को अपना उम्मीदवार बनाया है। रिपोर्ट के अनुसार, गुजरात के मेहसाणा नगर निगम चुनावों में एक ऐसा कदम उठाया गया है, जो चर्चा का विषय बन गया है। भारतीय जनता पार्टी ने रमेश भील नाम के आदमी को टिकट दिया है। वह एक समर्पित कर्मचारी हैं और पिछले लगभग तीन दशकों से मेहसाणा जिला बीजेपी कार्यालय में चपरासी के तौर पर सेवा दे रहे हैं। रमेश भील ने शनिवार को आधिकारिक तौर पर अपना नामांकन पत्र दाखिल किया। इसके साथ ही वे पार्टी के एक 'बैक-एंड' कार्यकर्ता से वार्ड नंबर 13 के लिए एक 'फ्रंटलाइन' राजनीतिक उम्मीदवार बन गए। 50 साल के रमेश भील ने 10वीं कक्षा तक पढ़ाई की है। वह पिछले 28 सालों से जिला मुख्यालय में लगातार सक्रिय रहे हैं। यहां उनकी मुख्य जिम्मेदारियों में कार्यालय का प्रबंधन करना और वरिष्ठ नेताओं तथा पार्टी के अन्य कार्यकर्ताओं को चाय-पानी पिलाना शामिल था। भील को चुनाव मैदान में उतारने के फैसले को पार्टी नेतृत्व की ओर से एक रणनीतिक संदेश के तौर पर देखा जा रहा है।

चुनाव आयोग की एक और ऑफिसर से तकरार, SIR के समय पर भिड़ गए महाराष्ट्र के सीईओ

मुंबई, एजेंसी। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा मतदाता सूचियों के विशेष गहन पुनरीक्षण को लेकर अधिकारियों से टकराव की एक और खबर सामने आ रही है। हाल ही में मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार और यूपी कैडर के आईएएस अधिकारी अनुराग यादव के बीच तीखी नोकझोंक हुई थी। ताजा जानकारी जो सामने आ रही है उसके मुताबिक, महाराष्ट्र के मुख्य निर्वाचन अधिकारी (सीईओ) एस. चोकलिंगम ने पिछले साल नवंबर में ही आयोग को पत्र लिखकर आगाह किया था कि इस पूरी प्रक्रिया के लिए तय समय सीमा बहुत कम है। उन्होंने सुझाव दिया था कि जहां चुनाव सिर पर नहीं हैं, वहां इस काम को पर्याप्त समय लेकर पूरा किया जाना चाहिए। आपको बता दें कि हल ही में भारत निर्वाचन आयोग ने यूपी कैडर के 2000 बैच के आईएएस अधिकारी अनुराग यादव को पश्चिम बंगाल के कूच बिहार में चुनाव पर्यवेक्षक के पद से हटा दिया। मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के साथ एक वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के दौरान हुई तीखी बहस के बाद यह कार्रवाई की गई थी। समीक्षा बैठक के दौरान मुख्य चुनाव आयुक्त ने अनुराग यादव से उनके विधानसभा क्षेत्र के पोलिंग स्टेशनों की संख्या पूछी थी। इसका जवाब उन्होंने देरी से दिया। इसके बाद दोनों के बीच बहस हुई। अनुराग यादव ने मुख्य चुनाव आयुक्त को जवाब देते हुए कहा कि वह भी 25 साल से सर्विस में हैं और उनसे इस तरह बात नहीं की जा सकती है। इसे

अनुशासनहीनता मानते हुए आयोग ने उन्हें पद से मुक्त कर दिया।

महाराष्ट्र ने क्यों जताई चिंता : इंडियन एक्सप्रेस की एक रिपोर्ट के मुताबिक, उत्तर प्रदेश के बाद महाराष्ट्र देश का दूसरा सबसे बड़ा मतदाता आधार वाला राज्य है, जहां 2024 के लोकसभा चुनावों में 9 करोड़ से अधिक मतदाता थे। राज्य के सीईओ ने अपने पत्र में 2001-02 के पुनरीक्षण अभियान का हवाला दिया था। उस समय महाराष्ट्र में यह प्रक्रिया 13 महीनों तक चली थी। अधिकारी का तर्क है कि मतदाता सूची से नाम हटाना एकमात्र उद्देश्य नहीं है, बल्कि सूची को शुद्ध और त्रुटिहीन बनाना है। इसके लिए दावों और आपत्तियों की सुनवाई के लिए पर्याप्त समय अनिवार्य है। महाराष्ट्र ने यह भी मुद्दा उठाया था कि वर्तमान डेटा को पुराने रिकॉर्ड (SIR 2002) के साथ मैप करना एक समय लेने वाली प्रक्रिया है, जिसकी गणना चुनाव आयोग के दिशा-निर्देशों में ठीक से नहीं की गई थी।

पश्चिम बंगाल में संकट, 89 लाख नाम हटे : निर्वाचन आयोग की इस जल्दबाजी का सबसे बुरा असर पश्चिम बंगाल में देखने को मिल रहा है। राज्य में लगभग 89 लाख मतदाताओं के नाम सूची से हटा दिए गए हैं। इनमें से करीब 27.1 लाख मतदाता ऐसे हैं जिनके नाम न्यायिक अधिकारियों द्वारा हटाए गए हैं, लेकिन उनके पास इस फैसले के खिलाफ अपील करने का समय ही नहीं बचा। 23 और 29 अप्रैल को होने वाले मतदान से पहले इन लाखों लोगों के पास अब अपने मताधिकार खोने का खतरा मंडरा रहा है। यह मामला अब सुप्रीम कोर्ट तक पहुंच चुका है। महाराष्ट्र कांग्रेस के अध्यक्ष हर्षवर्धन सकपाल ने इस मुद्दे पर चिंता व्यक्त की है। उन्होंने बताया कि हाल ही में एक प्रतिनिधिमंडल ने राज्य चुनाव अधिकारी से मुलाकात की थी। सकपाल के अनुसार, 'हमने मांग की थी कि पुनरीक्षण प्रक्रिया को 2002 की तर्ज पर कम से कम 13 महीने का समय दिया जाए। अधिकारियों ने हमें आश्वस्त किया कि वे पहले ही केंद्रीय चुनाव आयोग को इस संबंध में पत्र लिखकर जल्दबाजी न करने का अनुरोध कर चुके हैं।

क्या है चुनाव आयोग का पक्ष : हालांकि निर्वाचन आयोग ने आधिकारिक तौर पर इस पर कोई टिप्पणी नहीं की है, लेकिन आयोग के सूत्रों का कहना है कि महाराष्ट्र सहित कई राज्यों में मौजूदा डेटा की मैपिंग का काम शुरू हो चुका है। चूंकि आगामी महीनों में जनगणना का काम भी शुरू होना है, जिसमें वही सरकारी कर्मचारी और शिक्षक शामिल होंगे जो चुनाव ड्यूटी करते हैं, इसलिए पुनरीक्षण प्रक्रिया में और देरी हो सकती है।

नागपुर पहुंचे रणवीर सिंह, मोहन भागवत से की मुलाकात

नागपुर, एजेंसी। हाल ही में आई धुरंधर-2 की सक्सेस के बाद बॉलीवुड एक्टर रणवीर सिंह नागपुर पहुंचे। यहां उन्होंने आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत से भी मुलाकात की। इसके अलावा, रणवीर सिंह ने नागपुर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक के.बी. हेडगेवार और उनके उत्तराधिकारी एम.एस. गोलवलकर के स्मारकों पर श्रद्धांजलि अर्पित की। न्यूज एजेंसी पीटीआई के सूत्रों ने बताया कि 'धुरंधर' एक्टर रेशिमबाग स्थित डॉ. हेडगेवार स्मृति मंदिर गए और आरएसएस के संस्थापक तथा दूसरे सरसंघचालक गोलवलकर को श्रद्धांजलि दी, जिनके स्मारक इसी परिसर में स्थित हैं। इस दौरे के दौरान, RSS के प्रतिनिधियों ने रणवीर सिंह को इस हिंदुत्व संगठन के पहले दो प्रमुखों के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी और डॉ. हेडगेवार स्मृति मंदिर के इतिहास तथा महत्व के बारे में भी बताया। वहीं, 'द टेलीग्राफ' की एक रिपोर्ट के अनुसार, रणवीर ने आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत से भी मुलाकात की। इस दौरान दोनों ने रणवीर की फिल्म पर चर्चा की और संगठन की विभिन्न गतिविधियों तथा सेवा कार्यों के बारे में भी बातचीत की। रणवीर के चारों ओर कड़ी सुरक्षा व्यवस्था थी। एयरपोर्ट से निकलते समय सफेद कुर्ते में उनकी तस्वीरें सोशल मीडिया पर खूब वायरल हुईं।

गुरुग्राम को 'नायाब' सौगात: शहर में खुलेंगे 4 नए अस्पताल, मेडिकल कॉलेज में 33% सीटें रिजर्व

गुरुग्राम , एजेंसी। दिल्ली से सटे गुरुग्राम में बढ़ती आबादी और स्वास्थ्य सेवाओं की बढ़ती मांग को देखते हुए हरियाणा सरकार ने एक बड़ा निर्णय लिया है। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए हैं कि गुरुग्राम में विभिन्न स्थानों पर 100 से 150 बेड की क्षमता वाले चार अतिरिक्त अस्पताल इसी तर्ज पर खोलने के प्रस्ताव तैयार किए जाएं। मुख्यमंत्री का यह निर्देश न केवल शहर के स्वास्थ्य ढांचे को मजबूती प्रदान करेगा, बल्कि भविष्य की स्वास्थ्य जरूरतों को पूरा करने में मील का पत्थर साबित होगा।

मुख्यमंत्री सैनी ने यह महत्वपूर्ण निर्देश गुरुग्राम में निर्माणाधीन शीतला माता देवी मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल की प्रगति की समीक्षा के लिए आयोजित कैबिनेट सब-कमेटी की बैठक के दौरान दिए। यह परियोजना सहकारी संघवाद और स्थानीय निकायों के आपसी सहयोग का अनूठा उदाहरण है। इसका इंफ्रास्ट्रक्चर जीएमडीए का 50 फीसदी, नगर निगम गुरुग्राम का 45 फीसदी और श्री माता शीतला देवी श्राइन बोर्ड पांच फीसदी के वित्तीय सहयोग से तैयार हो रहा है।

आयुष्मान के लाभार्थियों को प्राथमिकता : बैठक के दौरान मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि अस्पताल के आरक्षित बेड पर आयुष्मान भारत योजना के लाभार्थियों को प्राथमिकता दी जाए। उन्होंने कहा, हमारा उद्देश्य केवल

बिल्डिंग खड़ी करना नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप ऐसी सेवाएं देना है जो गुरुग्राम को वैश्विक स्वास्थ्य मानचित्र पर स्थापित करें। मेडिकल शिक्षा एवं अनुसंधान विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. सुमिता मिश्रा ने बैठक में प्रोजेक्ट की बारीकियों को साझा किया।

आरक्षण और किफायती शिक्षा पर जोर : मुख्यमंत्री ने बैठक में निर्णय लेते हुए निर्देश दिए कि गुरुग्राम के सेक्टर-102ए खेड़की माजरा में बन रहे इस अत्याधुनिक मेडिकल कॉलेज की 150 एमबीबीएस सीटों और 850 बेडों में से 33-33 प्रतिशत हिस्सा हरियाणा के विद्यार्थियों और स्थानीय निवासियों के लिए आरक्षित किया जाए। सबसे बड़ी राहत की बात यह है कि आरक्षित सीटों पर फीस अन्य सरकारी मेडिकल कॉलेजों के समान ही रखी जाएगी, जिससे राज्य के मेधावी लेकिन आर्थिक रूप से सामान्य परिवारों के छात्रों को चिकित्सा शिक्षा के लिए भारी-भरकम फीस नहीं भरनी होगी।

दूरदराज के इलाकों में ड्रोन से पहुंचाई जाएगी दवा, इस राज्य सरकार ने शुरू की खास पहल

अमरावती, एजेंसी। आंध्र प्रदेश सरकार ने दूरदराज के आदिवासी इलाकों में स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत करने के लिए अनोखी पहल शुरू की है। अल्लूरी सीतारामा राजू जिले के सुदूर आदिवासी क्षेत्रों में ड्रोन के जरिए दवाइयों और चिकित्सा सामग्री की डिलीवरी का कार्यक्रम शुरू किया गया है। स्वास्थ्य विभाग ने जिला प्रशासन, रीयल टाइम गवर्नेंस सिस्टम और अमेरिका स्थित यूपीएस फाउंडेशन की ओर से समर्थित टेक्नोलॉजी पार्टनर रेडविंग के साथ मिलकर यह प्रोजेक्ट लागू किया है।

इस पहल का मकसद अंतिम छोर तक डायग्नोस्टिक सैंपल, जरूरी दवाइयां और अन्य चिकित्सा आपूर्ति पहुंचाना है। पादेरू मेडिकल कॉलेज और गवर्नमेंट जनरल अस्पताल (तत्र॥) को छोटे स्वास्थ्य केंद्रों से जोड़कर ड्रोन के माध्यम से सैंपल भेजे और दवाइयां लाई जा रही हैं। इससे पहाड़ी और जंगली इलाकों में सड़क मार्ग से होने वाली देरी समाप्त हो गई है।

बड़े इलाके को किया जा रहा कवर : अब तक इस ड्रोन डिलीवरी पहल ने 1,000 उड़ानें पूरी कर ली हैं। इन उड़ानों में कुल 40,000 किलोमीटर से अधिक की दूरी तय की गई और 25,000 से ज्यादा चिकित्सा उत्पादों को हवाई मार्ग से पहुंचाया गया। प्रत्येक ड्रोन लगभग दो किलोग्राम पेलोड ले जाने में सक्षम है और कोल्ड चेन सुविधा से लैस है, जिससे दवाइयों और ब्लड यूनिट की गुणवत्ता बरकरार रहती है।

यह इनोवेटिव कदम आदिवासी समुदायों के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में अहम भूमिका निभाएगा। सड़कों की कमी और दुर्गम भूगोल वाले क्षेत्रों में ड्रोन स्वास्थ्य सेवाओं को तेज, सुरक्षित और प्रभावी बनाते हैं। सरकार का लक्ष्य है कि भविष्य में इस मॉडल को अन्य जिलों में भी विस्तार दिया जाए, ताकि ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाएं और मजबूत हों। इस पहल से मरीजों को समय पर इलाज मिलना आसान हो जाएगा।

खाप पंचायतों के तुगलकी फरमानों पर राजस्थान हाई कोर्ट की रोक

जयपुर, एजेंसी। राजस्थान हाईकोर्ट ने खाप पंचायतों के मनमाने फरमानों को असंवैधानिक और कानून के राज के लिए बड़ा खतरा बताते हुए इन पर रोक लगा दी है। अदालत ने स्पष्ट किया कि सामाजिक बहिष्कार, 'हुक्का-पानी बंद' करना और भारी जुर्माना लगाना मौलिक अधिकारों तथा मानवीय गरिमा का उल्लंघन है। अदालत ने इन जातिगत मंचों को एक अवैध समानांतर न्यायिक प्रणाली माना है। इस गंभीर समस्या से निपटने के लिए अदालत ने राज्य सरकार को एक प्रभावी नीति और एसओपी बनाने का निर्देश दिया है। साथ ही हर जिले में नोडल अधिकारियों की नियुक्ति के आदेश दिए गए हैं ताकि जिला कलेक्टर और पुलिस प्रशासन ऐसी शिकायतों का समय पर निवारण कर सकें।

सामाजिक बहिष्कार असंवैधानिक : राजस्थान हाईकोर्ट की जस्टिस फरजंद अली की बेंच ने अवैध जाति और खाप पंचायतों को कड़ी फटकार लगाते

प्रतीकात्मक AI तस्वीर

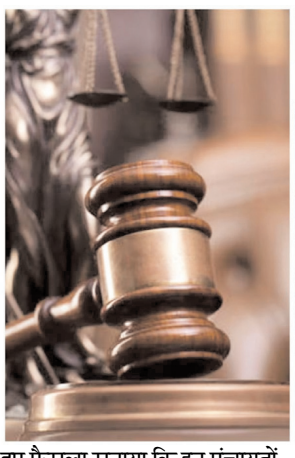

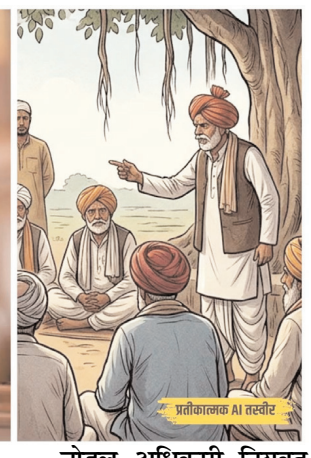

हुए फैसला सुनाया कि इन पंचायतों द्वारा सामाजिक बहिष्कार और आर्थिक जुर्माना लगाना पूरी तरह असंवैधानिक है। ऐसे फरमान कानून के शासन को कमजोर करते हैं और यह एक गंभीर सामाजिक समस्या है। अदालत ने राजस्थान सरकार को निर्देश दिया कि वह सामाजिक बहिष्कार की शिकायतों को रोकने के लिए एक स्पष्ट नीति और एसओपी तैयार करे।

नोडल अधिकारी नियुक्त करने के आदेश : इसके अलावा अदालत ने आदेश दिया कि प्रत्येक जिले में एक नोडल अधिकारी नियुक्त किया जाए जो जिला कलेक्टर और पुलिस प्रमुख की देखरेख में शिकायतों को सुलझाए। अदालत उन 11 याचिकाओं पर सुनवाई कर रही थी जिनमें सिरोही, बाड़मेर, नागौर, बालोतरा, जालोर और जोधपुर जैसे जिलों में जबरदस्ती और सामाजिक बहिष्कार की घटनाओं के बारे में बताया गया था। याचिकाकर्ताओं ने गुहार लगाई थी कि शिकायतें करने के बाद भी अधिकारी ऐसी संस्थाओं के खिलाफ निर्णायक कार्रवाई करने में विफल रहते हैं।

हुक्का-पानी बंद करने से अलग-थलग पड़ जाते हैं परिवार : अदालत ने कहा कि बार-बार सामने आ रहे ऐसे मामलों को देखते हुए ये जातिगत मंच एक समानांतर न्यायिक प्रणाली की तरह काम करते हैं। खाप पंचायतें बिना किसी कानूनी अधिकार के आदेश जारी करती हैं। किसी व्यक्ति का हुक्का-पानी बंद करने जैसे फरमान लोगों और परिवारों को समाज से अलग-थलग कर देते हैं। ऐसी प्रथाएं इंसान की गरिमा को चोट पहुंचाती हैं। ये प्रथाएं समानता, आजादी और जीवन के अधिकार जैसे संवैधानिक अधिकारों का उल्लंघन करती हैं। यह फैसला अदालत द्वारा नियुक्त एक समिति की रिपोर्ट पर आधारित है।

अभिषेक मनु सिंघवी को हिमाचल हाईकोर्ट से झटका

शिमला, एजेंसी। हिमाचल प्रदेश हाईकोर्ट ने वरिष्ठ वकील और कांग्रेस नेता अभिषेक मनु सिंघवी की उस याचिका को खारिज कर दिया है, जिसमें हर्ष महाजन के राज्यसभा निर्वाचन को चुनौती देने वाली चुनाव याचिका में प्रस्तावित गवाहों के नाम हटाने की मांग की गई थी। जस्टिस वीरेंद्र सिंह ने शुक्रवार को यह आदेश वर्ष 2024 की चुनाव याचिका के संदर्भ में पारित किया, जिसमें सिंघवी ने हिमाचल प्रदेश से राज्यसभा के लिए महाजन के निर्वाचन को चुनौती दी थी। सिंघवी ने लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 87(1) के तहत एक आवेदन दायर कर प्रतिवादी द्वारा सूचीबद्ध गवाहों के नाम काटने का अनुरोध किया था। उन्होंने तर्क दिया था कि कई गवाहों, विशेष रूप से क्रम संख्या 2 से 14 तक के नामों को शामिल करना अनावश्यक

और अस्पष्ट है, जिसका एकमात्र उद्देश्य कार्यवाही में विलंब करना है।

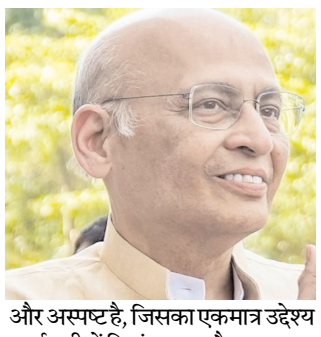

सिंघवी का क्या था तर्क : याचिकाकर्ता का तर्क था कि प्रतिवादी ने 18 गवाहों के नाम प्रस्तावित किए हैं, जिनमें से कई उनके अनुसार कोर्ट द्वारा निर्धारित मुद्दों के लिए अप्रासंगिक थे। यह भी बताया गया कि गवाहों की सूची निर्धारित समय सीमा के बाद दाखिल की गई थी और उनका ट्रायल याचिकाकर्ता के हितों को प्रभावित करेगा तथा चुनावी विवाद के निपटारे में देरी करेगा।

याचिका गलत धारणा पर आधारित : हर्ष महाजन : हालांकि, प्रतिवादी हर्ष महाजन की तरफ से इस दलील का विरोध करते हुए कहा गया कि यह आवेदन गलत धारणा पर आधारित है और इसका उद्देश्य उन्हें निष्पक्ष न्याय के लिए आवश्यक महत्वपूर्ण साक्ष्य प्रस्तुत करने से रोकना है। उन्होंने स्पष्ट किया कि निर्वाचन प्रक्रिया की वैधता, विशेष रूप से मतों की गिनती के दौरान अपनाई गई प्रक्रिया और मत बराबर होने की स्थिति से निपटने के तरीके को सिद्ध करने के लिए ये गवाह आवश्यक हैं।

साक्ष्य प्रस्तुत करने का वैधानिक अधिकार : हाईकोर्ट : कोर्ट ने रिकॉर्ड और दलीलों की जांच के बाद पाया कि मुख्य मुद्दों, विशेष रूप से सहमति, प्रक्रिया और याचिका की स्वीकार्यता से संबंधित प्रमाण प्रस्तुत करने का भार प्रतिवादी पर है। हाईकोर्ट ने माना कि प्रतिवादी के पास अपने बचाव के समर्थन में साक्ष्य प्रस्तुत करने का वैधानिक अधिकार है और पर्याप्त आधार के बिना ऐसे अधिकार में कटौती नहीं की जा सकती। जस्टिस वीरेंद्र सिंह ने उल्लेख किया कि याचिकाकर्ता यह साबित करने में विफल रहे कि प्रस्तावित गवाह किस प्रकार निरर्थक या परेशान करने वाले थे। कोर्ट ने यह भी स्पष्ट किया कि साक्ष्यों के बिना केवल विलंब करने की रणनीति का आरोप लगाना, गवाहों के नाम हटाने के लिए पर्याप्त नहीं है। बेंच ने आगे कहा कि गवाहों के ट्रायल का उद्देश्य प्रतिवादी द्वारा प्रस्तुत सूची में स्पष्ट रूप से बताया गया है और अधिकांश गवाह निर्वाचन प्रक्रिया से जुड़े हैं।

देश में पहली बार फ्लोटिंग जंक्शन, 'तैरती' नजर आएगी ट्रेन!

नई दिल्ली, एजेंसी। देश में पहली बार रेलवे प्रोजेक्ट के लिए फ्लोटिंग जंक्शन तैयार किया जा रहा है। उत्तराखंड की महत्वाकांक्षी ऋषिकेश-कर्णप्रयाग रेल परियोजना अब इंजीनियरिंग के नए मानक गढ़ रही है। दुर्गम हिमालयी पहाड़ियों के नीचे बन रही यह रेल लाइन सिर्फ कनेक्टिविटी ही नहीं, बल्कि अत्याधुनिक तकनीकों के इस्तेमाल के कारण वैश्विक स्तर पर भी चर्चा में है। इस खास तकनीक के तहत आपको ट्रेन हिमालयी पहाड़ियों पर 'फ्लोटिंग' यानी 'तैरती' दिखेंगी। परियोजना के तहत ब्यासी-देवप्रयाग सेक्शन में देश का पहला 'फ्लोटिंग रेल टनल जंक्शन' बनाया जा रहा है। यह जंक्शन इसलिए खास है क्योंकि इसे पारंपरिक ठोस चट्टानों पर नहीं, बल्कि बेहद कमजोर और चूरे जैसी मिट्टी वाले क्षेत्र में तैयार किया जा रहा है।

क्यों खास है यह फ्लोटिंग टनल जंक्शन : परियोजना के उप महाप्रबंधक (डीजीएम) और सिविल इंजीनियरिंग विशेषज्ञ ओमप्रकाश मालगुड़ी के मुताबिक, आमतौर पर रेलवे टनल के अंदर जंक्शन मजबूत चट्टानों पर बनाए जाते हैं। लेकिन इस रूट पर मेन सेंट्रल थ्रस्ट (स्न्न्ञ्च) का ऐसा जोन मिला है, जहां जमीन बेहद कमजोर है। ऐसे में यहां 'डबल-आर्क सिस्मिक आइसोलेशन' तकनीक का इस्तेमाल किया जा रहा है, जो भारत में पहली बार लागू हो रही है। इस तकनीक की मदद से टनल जंक्शन 'फ्लोट' यानी लचीले ढांचे की तरह व्यवहार करेगा, जिससे भूकंपीय जोखिम कम होगा। इस परियोजना की सबसे बड़ी खासियत इसकी भूकंप-रोधी डिजाइन है। टनल को इस तरह बनाया जा रहा है कि वह शॉक एब्जॉर्बर की तरह काम करे। भूकंप आने पर सुरंग हल्की सी खिसककर फिर अपनी जगह पर लौट आएगी। इससे संरचना को गंभीर नुकसान होने की संभावना बेहद कम हो जाएगी सुरक्षा के लिहाज से सुरंग में रॉक मॉनिटरिंग सिस्टम लगाया जा रहा है। टनल की दीवार में अगर 1 मिलीमीटर का भी बदलाव होता है तो तुरंत ऋषिकेश स्थित कंट्रोल रूम में अलार्म बज जाएगा। इससे किसी भी खतरे को समय रहते पहचानकर कार्रवाई की जा सकेगी। तेज रफ्तार ट्रेनों में टनल के अंदर हवा का दबाव अचानक बढ़ जाता है, जिससे यात्रियों को असहजता हो सकती है। इस समस्या से निपटने के लिए एयर कुशन तकनीक लगाई जा रही है। यह तकनीक स्विट्जरलैंड की मशहूर गोथर्ड बेस टनल से प्रेरित है। इससे ट्रेन के गुजरने पर बनने वाले वायु दबाव को नियंत्रित किया जाएगा।

यूपी की कई वीआईपी सीटों का गुणा-गणित बदला, शहरी वोटर ज्यादा कटे

लखनऊ, एजेंसी। उत्तर प्रदेश में 2.04 करोड़ कटने के बाद राजनीतिक दलों में खासी बेचैनी बताई जा रही है। जानकारों से कहना है कि एसआईआर में सर्वाधिक वोट शहरी क्षेत्रों के कटे हैं और ग्रामीण क्षेत्रों में बढ़े हैं। शहरी वोट हमेशा से भाजपा के रहे हैं। वोट कटने के बाद कई वीआईपी सीटों का भी गुणा-गणित बदल गया है। लखनऊ कैंट का ही उदाहरण लें तो यहां सर्वाधिक 124962 वोट कटे हैं। इसीलिए विधानसभा चुनाव के समय टिकट बंटवारे से लेकर जातीय समीकरण के लिए राजनीतिक दलों को नए सिरे से समीकरण बैठाना पड़ सकता है। वे अभी से इसकी रणनीति बनाने में जुट भी गए हैं।

बड़े शहरों में खूब कटे वोट : एसआईआर के आंकड़े बता रहे हैं कि मुस्लिमों समुदाय के अधिकतर लोग अपना वोट बचाने में सफल रहे हैं। मतदाता सूची के आंकड़ों को देखें तो लखनऊ कैंट 34.18, इलाहाबाद उत्तरी 34.01, लखनऊ पश्चिम 31.01, लखनऊ पश्चिम 31, आगरा कैंट 30.47, लखनऊ मध्य 30.36, मेरठ कैंट 27.29, कानपुर कैंट 26.59, बरेली 25.68 फीसदी वोट कटे हैं। नोएडा जैसी सीट पर 23.85 प्रतिशत वोट कटे हैं। ये सभी भाजपा की प्रभाव वाली सीटें हैं। इनमें से अधिकतर सीटें वीआईपी हैं।

भाजपा आशांवित : शहरी क्षेत्रों में मतदाता घटने से पार्टी थोड़ी चिंतित तो है मगर मतदाता सूची के अंतिम प्रकाशन तक वोटरों की बढ़ी हुई संख्या को लेकर पार्टी आशान्वित है। इसमें सरकार और संगठन दोनों ने अंतिम समय पर पूरी ताकत झोंकी। पार्टी के एक प्रदेश स्तरीय नेता का कहना है कि यह मानना पूरी तरह गलत है कि सिर्फ हिंदुओं के वोट ज्यादा कटे हैं। उनका तर्क है कि यदि ऐसा होता तो सपा और कांग्रेस एसआईआर को कोस न रहे होते।

सपा ने चार लोगों की टीम बनाई : बसपा कटे हुए वोटों को लेकर बूथ, जिला

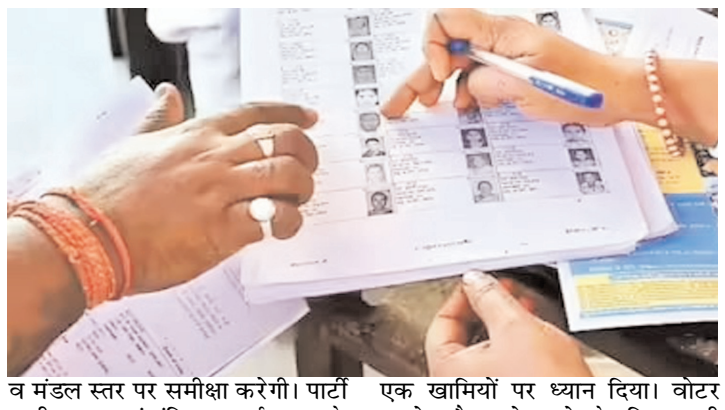

व मंडल स्तर पर समीक्षा करेगी। पार्टी सभी जगह जहां वंचित व सर्वसमाज के वोट अवैध ढंग से काटे गए हैं, वहां अभियान चलाकर वैध मतदाताओं के नाम जुड़वाएगी। एसआईआर शुरू होने के साथ समाजवादी पार्टी ने चार लोगो की एक टीम बनाई। उसने बिहार एसआईआर का अध्ययन कर एक-एक खामियों पर ध्यान दिया। वोटर बनने और बने रहने के लिए सभी जरूरी मदद बूथवार की गई. जिससे वोट बचाने के साथ ही बनवाने में वह सफल रहे। सपा की यह टीम अब अंतिम मतदाता सूची का अध्ययन कर रही है। इसकी खामियों को देखा जा रहा है। इसके आधार पर गलत वोट कटने को ठीक कराने और छूटे लोगों का नाम शामिल कराने का होगा।

यूपी की नई मतदाता सूची में 6.40 करोड़ युवा मतदाता : यूपी में विशेष प्रगाढ़ पुनरीक्षण (एसआईआर) की अंतिम मतदाता सूची में सर्वाधिक 30 से 39 आयुवर्ग के 3.60 करोड़ लोग हैं। दूसरे नंबर पर 20 से 29 आयु के 2.62 करोड़ मतदाता हैं। वोटर लिस्ट में सर्वाधिक युवा मतदाता हैं। अब अगर मतदाता सूची में 18 वर्ष से लेकर 39 वर्ष की उम्र वाले लोग जो युवा श्रेणी में आते हैं उनकी संख्या देखी जाए तो वह कुल 6.40 करोड़ है। यानी युवाओं की संख्या मतदाता सूची में 47.7 प्रतिशत है। फिलहाल मतदाता सूची के हिसाब से युवा मतदाता फिर एक बार निर्णायिक साबित होंगे। इनकी संख्या सूची में सर्वाधिक है। अधेड़ आयु के लोग जिसमें 40 वर्ष से लेकर 59 वर्ष की उम्र के 4.92 करोड़ मतदाता हैं। यह कुल वोटरों का 36.7 प्रतिशत है।

Printed, Published and Owned by SARABJIT MAKAN and Printed by ILEVAN HASMUKHRAI THAKAR Printed at Jay Graphics & Printers, C/15, Vikram Chambers, Ashram Road, Ahmedabad - 380009. and published from F/1 first floor, rajas apartment, near old railway crossing, maninagar east maninagar, Ahmedabad, Gujarat-380008. Editor SARABJIT MAKAN, Mo.: 9638877700, 9662420070.